घराणो

अब्दुल वहीद 'कमल'

राजस्थानी भाषा साहित्य एव सस्कृति अकादमी रै
आशिक आर्थिक सैयोग सू प्रकाशित ।

©	अब्दुल वहीद 'कमल
प्रकाशक	बाबुल प्रकाशन नेहरु चौक शीतला गेट बीकानेर (राज)
सस्करण	प्रथम 1996
मूल्य	पचानवे रुपये मात्र
आवरण	कलाश्री बीकानेर
मुद्रक	खुशाल कम्प्युटर एण्ड प्रिंटर्स नत्थूसर गेट बीकानेर

GHARANO (Rajasthani Novel) BY A V KAMAL Price Rs 95/

उण माइता नै
जिणा रै अठ
बटा रौ हियैतणा
लाड–क्वाड अर
मान–सनमान हुवै।

अभिमत

राजस्थानी भापा मे लिख्योड़ा 'घराणा' उपन्यास बाच्या। पैली घात री पाच दस आळ्या पढता ई आगे पढ़ना री इच्छा हुई। पूरी बाचनै ई पाथी हेठै राखी। म्हारो मन माल्या 'राजस्थानी भापा म छप्योडे अव्वल नजर रै उपन्यासा मायने आ है।

पैली बात तो आ कै भाषा मजियोडी पूठरी अर विषय माथै आपती अर फबती है। राजस्थानीभापी घराणैवाळा ईज ऐड़ी घरवटवाळी घराणावाळी भापा लिख सकै।

जच्चा री पीडा रो वरणन इतरो सही अर मरमवाळा आजू तांई म्हारै पढवा मे नीं आयो। लोकगीता री आळ्या म्हारी याद म एकदम आयगी 'चालेजी पीड उतावळी घण लुळ-लुळ जाय'। एक जणवावाळी लुगाई इण नै समझ सकै उण रा चित्रण खूब सजोरो है।

'घराणो' लफज तो आपा हर वगत हर मौकै पै काण-कायदा रै लारे कैवता रैवा पण 'घराणो' हुवै काई है? घराणा रो रूप कस्यो हुवै? घराणा रो असली मतलब हुवै काई है? लेखक इण पोथी मायनै इण बात नै रूपाळी तरै बतायी है।

जलमती बेटी नै मार नाखबा री घण जगा री रीत अर उणा आदमिया री जिद घराणा रै नाव माथै ई पापाचार री सही फोटू खैंची है।

म्हनै लागै लेखक गाव री पचायता वोटड्या ऊठ-बैठ काण-कायदा रीता रिवाजा अर फितूरा नै खूब जाणै घणा समझै। भरम अर मरम री बाता वा भली भात कही है। म्हनै अचभो ही आया एक स्हैर रा रैबावाळा दूसरी कौम रा आदमी नै ठाकरा री वाटड्या की मायली अर पिन पोइन्ट बाता री उतरी जाणकारी किस तरै है? गाव रो जिक्र कुआ ढरियो बाटो नाणा सारण अर चड्स जैड़ी नान्ही-नान्ही विगता री अर पचायत री हूबहू फोटू खैंची है।

'घराणा' पढती बेळा एक दाण नी कतरी दाण म्हारी आख्या सू आसू टपक्या म्हारा मन पै इण उपन्यास री एक छाप पडी है। म्हू जाणू इण री कई आळ्या मौका बमौका पे म्हनै याद आवैला। पाना 54 रो आखरी पैरो तो म्हैं पढनै घणा जणा नै सुणायो। खूब कस नैं सुणाई है। इण उपन्यास माथै लिखणै री तो घणी गुजाइश है। पण थोडा म-प्रेरणा देणो सुभाविक है वास्तविकता है। जे अन्त म हमीदा रो मरणो नीं बताता तो ठीक व्हेतो। अठै अन्त नाटकीय व्हे गियो जो सुभाविकता सू अळघो व्हे गियो।

लेखक नै म्हारी बधाई भगवान करै आग इण सू ई बधको सजोरो सुन्दर सरजण करणै म कामयाबी मिलै।

पद्मश्री लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत
पूर्व सासद

अभिमत

'घराणो' उपन्यास मांय लेखक राजस्थान रै अतीत रा स्वाभाविक वातावरण चित्रित करयो है। इण किस्सा में आपरी सूझबूझ तारीफ करण लायक है। उपन्यास नै पढतां इस्यो अनुभव होवै मानो पाठक राजस्थान रै पूर्व काल नै परतख देख रैयो है। ऐतिहासिक उपन्यास लिखणो सैंज नीं है पण श्री कमल इण विषय माथै आपरी कलम रो कमाल दिखाय'र साहित्य जगत नै एक खास चीज भेंट करी है जिकी घणी रजक है। श्री कमल री गद्य शैली विशेष रूप सूं ध्यान देवण जोग है। आपरी भाषा सर्वथा सरल अर सुबोध है। इण मांय राजस्थानी भाषा रो साहित्यिक स्वरूप प्रकाशमान है।

-मनोहर शर्मा

कथन कथ्य भासा अर भाव री दीठ सूं 'घराणो' किणी दूजी भाषा री टाळवी पोथी री जोड़ मं मनाई निवण्णजोग ठरकाळ। 'घराणो' री अेकूको पात्र मूंडै बोल-बोल अर आप आपरी व्यथा-कथा पढणवाळ रै हीयै ढुकावण जोग असरदार रंढियावणी भासा बिचै बिचै ओखाणा रा छमका अर भावां री गैराई रै पाण 'घराणो' राजस्थानी उपन्यास विधा री घणमोली माळीपन्नी। माडाणी री मरोड़ रै मिस जलमता पाण छोरी री मिणियो पेमण रै कथाव रै आसरै 'कमल भाई' आपरै उपन्यास मैं राजस्थानी संस्कृति रा केई सवावणा-सुगावणा चित्राम तार-तार पो दिया है। सदियां सूं कळपीजती मम्मासीजती लुगाई जात रा वरिमा उघेड़तै उपन्यास 'घराणो' रै लिखार करीम कमल नै अैड़ी लाखीणी पोथी लिखण सारू लखदाद।

-जहूरखां मेहर

'घराणो' जूनै जुग अर बदळाव री कहाणी है। इण मांय लेखक जतन करियो है कै उण समै री व्यथा अर जीवण रो जथारथ उभर'र आवै। म्हारी दीठ सूं लेखक इण में सफल हुयो है। भासा सातरी लागै।

-यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

राजस्थान अर दूजै कई राज्यां मं लडकी रो जलम खुसी रो अवसर कोनी मानीजै। लडको हुवै तो थाळी बजावै लडकी होवै तो छाजलो। श्री अब्दुल वहीद 'कमल' रो उपन्यास 'घराणो' इयै समस्या रो साचो चितराम है जठै दाई लड़की नै बचाणै रा वाचा देवै अर भात-भात रा कष्ट झेलती आपरी बात निभावै।

आज जुग रै सागै समस्या रो रूप बदळग्यो। सोनाग्राफी सूं भ्रूण रै लिंग री जाँच करवा'र लोग लड़की सूं छुटकारो पाणै री चेष्टा करै। इयै मे जात विशेष कोनी सगळी जाता रा लोग है। भारत सरकार 1 1 96 सूं कानून लागू कर इस्या माडा अर नीच करम करणियां नै कडी सजा रो प्रावधान करयो है पण ओजूं ताणी सगळा लोगा मे समझ अर चेतना कोनी बापरी। 'घराणो' इयै दिसा में समाज नै जागरूक करणवाळो एक सबल प्रयास है।

'घराणो' री राजस्थानी भासा रो मिठास कमलजी री कलम रो चमत्कार है। संवादां मे नाटकीयता रचना नै रोचक बणावै। दाई हमीदा रो चरित्र पाठक रै मन पर अमिट छाप छोडै। लेखक नै इयै सुन्दर रचना पर बधाई।

-चन्द्रदान चारण

श्री कमल रो उपन्यास अतीत मे ही भावक नै प्रेरित नीं करै वरन वर्तमान माथै विचारबा री भी प्रेरणा देवै है। सगळी आधुनिक शिक्षा-दीक्षा रै बाद भी भारतीय मिनखां री पुत्रैषणा हाल भी प्रबल है। आज रा वैज्ञानिक आविष्कारां गर्भस्थ लिंग री जाणकारी सहज कर दी पण रूढ मानसिकता आळो ओ समाज ई जाणकारी रो दुरुपयोग करता भ्रूण हत्या रो जको विग्रहणीय काम करण लाग रैयो है वो भी मध्यकालीन समाज रै कन्यावध री प्रवृत्ति सूं किणी भान्त कम विग्रहणीय नीं है। इण बाबत भी सजग सचेष्ट रैवणो जरूरी है।

-किरण नाहटा

इण उपन्यास री कथा जठै इण समाजू बुराई नै गिरकारे उठै ई वेगी रै सम्य नै बेगै सूं घणो-घणो ऊजळो अर निवणजोग दरसावणआळै भातभतीनै दरसाव री ऊकत पाण पाणियां रै अतस नै ऊडै तांई झभेडै। बिना किणी तामझाम रै गावाजू ढाळै ढळ्योडी कथा उणीज धरती मे आपरी जड़ा जमायोडी घणी पांगरै अर सीधै सादै ढंग सूं-जुग रै साथ नै परोटती घणी आगै सूं आगै वधै।

-माणक तिवाडी 'बंधु'

म्हारा दो आखर

राजस्थान री वीरप्रसूता धरा आपरै रूडै रूप अर सतरै गुणा रै लारै अखै जग माय आपरी एक अळघी आळखाण सू ओळखीजै। इण धरा री मा आपरै सुगनै सपूता नै बैन आपरै जोध जवान भाया नै अर स्त्री आपरै हथळेवै सू लेय'र सुहाग रै छेकडलै मोड ताई इण धरा री आण र
रातर अणकूत त्याग अर बलिदान दिया अर इण री रजवट नै कायम राखी।

आ बा धरा है जठै बात रा धणी लोग माथा रा सौदा करता नीं चूक्या। जठै मरणै नै मगळ मान्यो। जठै मा रै उदर माय ई सुगन मरोधा सीख्या। जठै पालणा माय हालरिया नै अैडी लोरी दिरीजती कै-

इला न देणी आपणी हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै मरण बडाई माय।।

अैडी धरोहर रो ओ गरबीलो मरुदेस जठै रणबाकडै वीर जोधावा नै जलम दियो बठै ई इण री ऊजळी कूख सू चूडामण पदमणी मीराबाई करणीमाता पन्ना धाय मरवण मूमल अर नीं जाणै अलेखू वीरागनावा जलमी जिकी आपरै रूप रग गुण अर करतबा सू इण रेत रो घणमोलो ब्यात रच्यो। पण फेर भी आ भोम एक बात मारू जुगा जुगा सू अलूणी रैयी है कै सामती जुग सू आज ताई घणवरै घराणा माय बेटी रै जलम नै बेटै रै जलम सू ओछो मानीजै।

सामती जुग मे तो केई लूठै ठिकाणा मे बेटी नै जलमतै ई मार काढण री रीत ही का बेटी नै परायो धन मान'र उण नै हीणै बरताव सू परोटण रा चाळो हा। जद कै बेटी अर बेटो एक ईज उदर मे लिटचोडा हुवै। तो पछै ओ फरक क्यू ? ओ भेद क्यू ?

बेटी नै परायो धन मानणो का जलमतै ई गळो टूप'र मारणै री बात सामती जुग ताई री ईज नी है। आज भी दस परदेस रै बडै-बडै समाचार पत्रा माय कदैई-कदैई आ पढणनै मिळै कै फलाणी ठौड मायै 'मादा शिशु की भ्रूण हत्या' का 'लडकी की जन्मते ही

गला घोट कर हत्या कर दी गई अैडी खबरा पूरै प्रदेस अर मिनख समाज खातर कदैई नीं मिटणआळै कळक दाई हुवै है।

इण सदी रै सातवैं का आठवैं दसक मे तो राजस्थान रै कइ पत्रा माय किणी ठिकाणै रै बारै में अैड़ा समाचार कई दिना ताईं लगोलग छप्या कै फला घराणै माय बेटी नै जलमतै ई मारणै री कुरीति कई पीढ्या सू आज ताईं चाल रैयी है। पछै इण बाबत राजस्थान विधानसभा मे सवाल उठया अर एक खासौड़ो रोळो मच्यो।

27 अगस्त 1995 नै 'पजाब केसरी' मे एक खबर छपी कै बेटी नै जलमतै ई मारणै रै मुद्दे नै लेय'र इण कुरीति री रोकथाम सारू 'बच्चा के कल्याण हेतु गठित समिति' रै जरियै सर्वोच्च न्यायालय मे एक याचिका दाखल करीजी जिण माथै सर्वोच्च न्यायालय कानी सू बिहार तमिलनाडू अर राजस्थान री राज्य सरकारा नै चेतावणी दिरीजी कै बै आप आपरी सरकार रै जरियै इण कुरीति नै मेटण खातर बेसी ध्यान राखै।

सामती जुग मांय तो घणखरा सामंत इण जघन्य पाप नै करता रैया। पण आज तो घणखरा तथाकथित सूठा लोग लूठा नेता अर लूठै ओहदा रा अधिकारी सोनोग्राफी अर बीजी तकनीका सू इण पाप नै करता नीं टळै। पण जे बेटी नीं रैयी तो इण सृष्टि री रचना किया हुवैली ? क्यू कै नर शिव है तो नारी सगती। अर सगती नै मेटण सू राष्ट्र अर मिनख समाज दोनू ईज मिटण रै अड़ै-गडै पूग जावैला।

बस अैडै ईज विचारा नै लेय'र म्हैं घराणो उपन्यास चार-पाच बरसा पैली लिखणो सरू करयो अर इण बरस पूरो हुयो। इण उपन्यास में गाव रो कथानक इण खातर लियो कै आपाणी सस्कृति री गैरी जड़ा गावा मे मौजूद है अर आज गाव अर स्हैर रो जिको तालमेल है बो किणी सू छानो नीं है।

म्हैं इण उपन्यास री बणगट समाचार पत्रा में छपी घटनावा नै लेय र कल्पना रै सायरै सू बुणी है। पात्र अर ठौडा रा नाव काल्पनिक है। फेर भी किणी सू जे मिळ जावै तो म्हैं क्षमा चावूला।

म्हैं इण उपन्यास मे आ कैवण री चेष्टा करी है कै 'घराणो' बेटी रै नाव सू, बेटी रै सुभाव सू, बेटी रै बरताव सू अर बेटी रै चाल-चलण सू ओळखीजै। क्यू कै सातरै सस्कारा में सखरी शिक्षा-दीक्षा में पळी-पोखी बेटी घर सू 'घराणो' बणा देवै अर कुसस्कारा में पळी-पोखी बेटी घर रो 'घरकोळियो' कर काढै। इण खातर घराणो बेटी सू बणै है।

इण उपन्यास रै नारी पात्रा माय पाना अर पारो जठै बेटी रै जलम नै बेटै रै जलम रै बराबर मानण री तीक बतावै बठै ईज जीवणजी बेटै सू वंश अर घराणो चालण

री जिद माथै अड़्यो रैवै। पण हमीदा दाई इण गुत्थी नै सुळझावण खातर अर पारो नै नियोड़ै आपरै वचना नै निभावण खातर आपरी आणचींती अबखायां नै झेल'र ठाकर सुल्तानसिंह री सरण मे छोरी नै सूंप देवै जठै ठाकर अर ठकराणी दोनुवां नै बेटी रो घणो चाव हुवै अर उण रा लाड-कोड हुवै।

म्हैं इण उपन्यास मे आ दरसावणै री भी चेष्टा करी है कै नारी लूंठी सूं लूंठी अबखाई नै झेल'र सिघणी दाईं खडी रैय सकै है। पण बा आपरी औलाद री हत्या हुवती देखै तो उण री अंतस री पीड़ा अर उण री मायली ममता लाज सरम मान मरजाद सगळा नै तोड़'र बा बदळै री भावना सूं धू धू कर'र बळणनै लाग जावै है।

म्हारी अैड़ी चेष्टावां इण उपन्यास मे कितरी'क सफल हुई है इण सारू तो आप सगळां रा विचार जद-कद म्हारै ताईं पूग्यां ईज म्हारो जीव धापसी।

छेकड म्हैं राजस्थानी रा सबळा अर लूंठा कवि भाई बुलाकीदासजी बावरा जिका म्हनै उपन्यास लिखण खातर उकसायो हिन्दी-राजस्थानी रा लूंठा विद्वान श्री माणक तिवाडी 'बन्धु' जिणा रो इण उपन्यास री पाडुलिपि त्यार करणै मे सरावणजोग सैयोग मिळ्यो खुशाल कम्प्यूटर एण्ड प्रिन्टर्स रा भाई जवाहरजी व्यास अकादमी रा अध्यक्ष श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत अर सचिव श्री सत्यप्रकाशजी आचार्य उप सचिव श्री पृथ्वीराज जी रतनू, श्री सूर्यप्रकाशजी बिस्सा सम्पादक 'भरवण' भाहेताळू मित्र अर हिंदी रा कवि श्री नवल 'बीकानेरी' मास्टर अब्दुल गनी अशफाक अर इसरार कादरी बन्धुआं नै घणो-घणो धन्यवाद देवूं हूं जिका रै घणमोलै सैयोग-पाण ओ उपन्यास आप रै हाथां माय सूंपूं हूं।

अब्दुल वहीद 'कमल'
नेहरू चौक शीतला गेट
बीकानेर।
दूरभाष 524097

एक

देस री आजादी रै दूसरै दसक री बात।

सौ-डैढसौ घरा रो एक छोटो-सो गाव होवा। गाव मे दस-बारह घर मुसळमाना रा की घर मेघवाळा अर नायका रा बाकी जाट बामण साती नाइ अर बीजै लोगा रा। गाव म एक कच्चो-पक्को-सा ठाकुरजी रो मिंदर। मिंदर सू थोडी दूरी माथै कच्ची ईंटा सू बण्योडी एक मस्जिद। साठ हाथ ऊँडा मीठै पाणी रो एक कूवो। कूवै सू थोडो अळगो पीपळ रो जूनो रूख।

पूरै गाव मे जीवणजी छोगजी अर लालजी रा घर पक्कै घरा मे गिणीजै। ऐ तीनू घर ठाकरा री कोटड्या कहलावै। आ तीनू कोटड्या मे कच्ची ईंटा री साळा अर पक्की ईंटा सू बण्योडी पिरोळ्या है। गाव रै बाकी लोगा रा घर घास-फूस रै झूपडा अर छाना सू बण्योडा है। जद सू ओ गाव बस्यो है तद सू इण नै अजू ताईं सड़का सू नीं जोडीज्यो है।

ओ गाव निरै गाव दाईं रस-बस रैयो है। इण गाव रा छोगजी आपरै गाव मे अर असवाडै-पसवाडै रै गावा ताईं आछा पूजीजता अर ठाकरिया आदमी मानीजै।

इण गाव सू पन्द्रह-सोळै कोस माथै टाटिया री मडी है। उठै सू गाव रा लोग आपरी चीज-बस्त खरीदै अर आपरो लैण-दैण करै। छोगजी अठै रै लागा सू अर विधोटियै अफसरा सू आछी बणायोडी राखै अर आपरै गाव रै लोगा रा अड्या काम काढै। जिण सू छोगजी रो रुतबो बीजै लोगा सू बेसी मानीजै गाव रै लोगा मे।

इण गाव रा लोग आपरी जूनी परपरा मुजब एक डोरी सू बध्योडा-सा हियै तणै भाईचारै सू रळ-मिल रैवता आया है। एक-दूजै रै सुख-दुख माय साझीदार हुवणो अठै री रीति नीति है। अठै रा लोग आपरी जूनी मरजादा अर सस्कारा सू

बधोड़ा मस्ती सू आपरै तीज तिवारा अर मळा-मगरिया नै भेळा हुय र मनावै अर आपरा वगत माज-मस्ती सू काटै।

इण गाव मे स्हैरा री झळ अजू ताई नीं पूगी ही। अठै रा लोग सीयाळै री राता माय अगी-आसी रात कहाणिया किस्सा आड्या' ख्याता री जूनी बाता अर आसण्ण कवता नीं धापै तो ऊनाळै री चाँदणी राता माय गाव री गुवाड़ माय कठैई टाजर तो कठैई मोट्यार कबड्डी खेलै तो कठैई लूणिया घाटी रमै ता कठैई हरदडो अर हूडी-हूटी मू मगळी गुवाड़ माय हाको करता नीं थकै। कठैइ कीं लोग बैठ्या गप-सप मारै अर मना लूटै ता' कठैइ गाव रा बूढा-बडेरा बीत्योड़ै बगता री जूनी बाता करै अर जमानै री उडीक मे मनसूबा बाधै। गाव री लुगाया कठैई हरजस गावै तो कठैई गाव री छोरया लुक्मीचाणी खेलै अर गित-खिल हँसै।

इणी गाव री ऊनाळै री एक रात।

किरत्या सिर सू ढळ रैयी ही। गुवाड सगळी खाली हुयगी ही। गुवाड री चैळ-पैळ मिटगी ही पण तीन-चार माट्यार अजू ताई उण गुवाड मे बैठ्या आपरी गप-सप मे लाग्योड़ा हा।

आ मोटयारा माय सू एक जणै री निजर चाणचकी एक लालटैण रै चानणै माथै पडी। बा सगळा नै दिखायो। उणा री गप-सप बद हुयगी। उणा रा कान खड्या हुयग्या' अर सगळा उण चानणै कानी गौर सू देखणनै लाग्या। बो चानणो बाड रै सारै-सारै चाल रैयो हो। दो लुगाया लालटैण लियाडी ठाकर जीवणजी री कोटडी कानी जाय रैयी ही।

उण मोट्यारा माय सू सुगनो बोल्यो भाईडा आज तो एक पुन्न कमावो।

भैरू पूछ्यो 'क्या गे पुन्न र सुगना ?

सुगनो उथळो दियो देखा भाईडा बा लालटैण रो चानणो जीवणजी बाबोसा रै घर कानी जाय रैयो है।

भैरू कैयो 'काई हुयो तो ?'

सुगना बोल्यो भैरू तू तो साव गैलो है।

भैरू सुगनै नै कीं आगै कैवतो इण बिचाळै ई एक जणो भैरू नै टोक्यो, अर भैरू सुगनै री बात नो सुण याग देखा आगै ओ काईं कैवै है ?

अबै भैरू कीं नीं बोल्यो अर सगळा सुगनै रै मूढै सामीं ताकणनै लाग्या। सुगनो बोल्यो देखो भाईडा थोडी-घणी बात ता आप इ जाणो हो अर इण बगत आपा जे उण बात में उळझग्या ता बगत हाथा सू निकळ जावैलो अर आपा पुन्न कमाया बिना इ रैय जावाला। इण बगत सगळो गाव गैरी नींद मे सूत्यो है। आज

आपा नै जीवणजी बावोसा रै घर री पूरी निगराणी राखणी है। ज आपा नै सगळी रात जाग र काटणी पडै ता काटणी है। आप सगळा म्हारै लारै चुपचाप हुय जावो अर पूरी रात चौकस रैवणै री दरकार है।

अबै बा सगळा री समझ मे आयो कै स्यात जीवणजी बावोसा रै घरै बाल-गापाळ हुवणआळो है। सगळा चुपचाप खड्या हुयग्या। आप-आपर गाभा नै झाड्या अर साथै-साथै पगा सू जीवणजी रै घर कानी टुरग्या। वै सगळा जीवणजी रै घर री बाड ताई पूग्या हुवैला कै जीवणजी रो खखारो सुण्यो तो सगळा-रा-सगळा बाउ रै ओलै इण भात लुक र बैठग्या कै किण नै ई नीं दीसै। वै इण भात दड खींची कै उणा री सास रो सिसकारो भी किण नै ई नीं सुणीजै। लालटैण रो चानणो अबै ताईं जीवणजी रै घर माय जाय चुक्यो हो।

माझळ रात ही। तारा छायी चूनडी-सो आभो आपरी छक जवानी माथै हो। स्यात समुदर-सो गहरी नीद मे सूत्यो सगळो गाव। बाळू रेत रै धोरा सू चौफेरो धिरयोडो ओ गाव अर गाव रै च्यारूमेर पसरयोडो सागीडो सरणाटा जाणै ओ सरणाटो सगळै गाव नै आपरी गोदी माय सावट राख्यो हो। पण इण गहरै सरणाटै नै गाव रै जूनै बाडा (न्होरा) माय लाग्योडी घास री बागरा अर खजडा माथै बैठी कोचरथा आपरी अणभावती तीखी बोली सू कदैई-कदैई झकझोर देवती ही तो कदैई गाव री अकूरड्या माथै खड्या गधिया आपरी बेसुरी भूक सू सगळै वातावरण नै किरकिरा कर देवता हा।

ऐडी सूनी रात मे जीवणजी आपरै घर रै फळसै री आगली तिबारी माय बैठ्यो आपरी लुगाई पाना नै उडीकै हो। पाना आपरै सागै दाई नै लेय र आयगी ही अर घर माय बड़ती ई वा लालटैण नै बुझाय दी।

ठाकर जीवणजी चीढ री लकडी दाईं चीढै हाडका रो अधवूढ आदमी। सुभाव सू भी चीढो अर चिडचिडो। बात नै झेल्या पछै छोडै ई कोनी। उण री गाव मे किण सू ई नीं बणै अर गाव री उण सू नीं बणै। बो गाव नै गिणै नीं अर गाव उण नै गिणै नीं।

इण दिना जीवणजी कीं घणो ई चिड़चिडो हुयग्यो हो। वो बोलतो ई बटका बोढतो बोलतो हो। घर माय पाना रै बडता ई बटको बोढतै ढग सू, पण धीरै सू जीवणजी पाना नै पूछ्यो 'दैवै री मा दाई आयगी काई ?

पाना उथळो दियो 'हाँ।

जीवणजी बोल्यो 'तो टावर हुवता ई म्हनै बेगो-सो दिखा देयी।

पना धीरै सू कैयो 'ठीक है। पना इतरो धीरै सू कैयो कै उण रो कैवणो

ईसुरजी नै नीं सुणीजा।

अबार ऊँवरली जरू पीसता थका 'भगवान राखसी साई! जद तू तो धन करनै बैठ है ?'

पना साई नै टाबर हुवणवाळै झूंपड़ै मांय आपरी बीनणी पारो कनै छोड र खुद ऊँवाळनी करै अर अठै धीरज सू बोली 'पारो' की धबरा तो राखा। टाबर म्हारी हथेळी मांय तो है जेठजी गिनै म्हैं आप नै बैठत ई दिन देवू। पछै हमीदा दाई अबार-अबार इ तो आप रै मूंढै नामी घर मांय बड़ी है। टाबर तो आपरी घड़ी पुग पूरी हुयां ई हुवैला अर हुवता ई म्हैं आप नै दिखा देसूली।

नैगरजी दत्ता नै खींच र बोल्यो 'ठीक है ... ठीक है। पण टाबर रा रोवणै झूंपड़ै सू बारै नीं निकळणो चाइजै। म्हैं तो म्हारा अड़ोसी-पाड़ोसी रै पड़ौस्यां ताईं ओ बेरो नीं हुवणा चाइजै कै नैगरजी रै घर मांय घट-गपट हुवणवाळा है कै हुयो है।

पाना नैगरजी रै कनै सू निकळती ई बड़बड़ाई 'राई बड़ा इण अबारी री घड़ी माय ओ भिनख कीं ढाम नीं राखै। अठीनै तो बीनणी रै ज्यान री बण रैयी है अर इण नै आपरी बात राखण री लाग्योड़ी है। ओ म्हनै कांई समझै है? म्हैं इण घर मांय आज इ तो आई कांई जिका म्हनै बार-बार समझावै है।' पना आगी मांय आय र झूंपड़ै कनै खड़ी हुयगी।

दाई हमीदा झूंपड़ै मांय बड़ता ई देख्यो-चूल्है माय धुखती धेपड़या री धूंआ चिमनी रै पूरी उजास नै ढक राख्यो हो। पूरो झूंपड़ो धूंवै सू भरीज्योड़ो हो। चूल्है माथै राख्योड़ी हांडी म पाणी उकळ रैयो हो। हमीदा झूंपड़ै रो किंवाड़ पूरो खोल्यो। जिण सू धूंवा कम हुयो। बा देख्यो कै झूंपड़ै मे एकै पासाड़ै फाटयोड़ा गूदड़ा अर ठाव-ठीकर अठीनै-उठीनै बेडोळै ढंग सू बिड़्याड़ा पड़्या है। उणा रै बिचाळै माचै रै कनै सायरा लिधाड़ी पारो टाबर जणणै री पीड़ा साय रैयी है। पारो रो पूरो डील परसेवै सू भीज्याड़ा है। उण रै चैरै सू परसवै री बूंदा टप-टप पड रैयी है। बा आपरै होठा नै दांता बिचाळै बार-बार दबावै है अर छोडै है।

हमीदा दमघोटू धूंवै माय पारो नै हाल सू बेहाल देख र हक्की-बक्की रैयगी। बा झट पीड़ा सू लटपटावती पारो रै मूंढै माथै पाणी रा छांटा न्हाख्या। उण नै चेतो करायो। पछै लाड-प्यार सू हळकी-सी धमकी सागै कैयो 'पारो हिम्मत राख बेटी। टाबर लुगाइयां ई जणै है। भींता रै टाबर नीं हुवै है !

पारो म थोड़ो-सा चेतो बापरयो। बा हमीदा दाई नै आपरै कनै देखी तो उण नै की ढाढस बंध्या पण पारो आपरी फाटयोड़ी आंख्यां सू हमीदा कानी देख

रैयी ही। उण रै मूढ सू एक आखर भी नीं निकळ रैयो हो। हमीदा कानी देखती-दखती पारा पूठी नसडी न्हाखदी।

हमीदा जाण है कै टाबर जामण री पीडा लुगाई खातर घणी ओखी हुवै। जिण टैम टाबर मा री पाख्या सू बारै आवै उण टैम री पीडा तो लुगाई खातर जमीन-आसमान एक कर दवै। बा पाणी सू काढ्योडी मछली दार्यी छटपटावै। बा पीडा माथै पीडा खावै। उण रे हाथा-पगा माय कदेइ सरणा चालै तो कदेई बठीठा आवै। कदेई उण रो कल्लो सूखै तो कदेई मूढै माय झाग आवै। कदेई बा ठडी हुय जावै तो कदेई उण रो डील तपणनै लाग जावै। ऐडी अथाग अर अणकूत पीडा नै झल र लुगाई इण सृष्टि री रचना करै। फेर पारो तो बापडी दुखा री मार्योडी जिन्दगी सू हार्योडी लाड-प्यार री भूखी अपणायत री तिस्सी। घर री कळह री भोभर मे आगै ई घणी सिकै है पछै इण दुखियारण नै ओ मालिक इतरी बडी सजा क्यू देय रैयौ है ? हमीदा आपरी लूगडी रा पल्लो पसार र दुआ मागी 'ऐ खुदा तेरो रहम कर तेरी मेहर कर अर इण दुखियारी रो बेगो छुटकारा कर । फेर बा पारो मे चेतो बपरावण खातर उण नै चचेडणने लागी। कदेई तातै पाणी रा अर कदेई ठडै पाणी रा छाटा उण रै मूढै माथै दैवणनै लागी।

पारो मे कीं चेतो बापर्यो। बा हमीदा नै कीं कैवण खातर आपरै होठा नै फडफडाया। पण कीं कैय नीं सकी। ता हमीदा उण नै पाणी रो एक गुटको दियो। पछै लाड सू पूछ्यो 'हा हा काईं कैवै है ? पारो बोल बेटा बोल। थोडी हिम्मत राख बेटा हिम्मत हार्या पार नीं पडैली।

पारो आपरी खुली आख्या सू हमीदा कानी देख रैयी ही। पण उण रै मूढै सू एक बोल भी नीं निकळ रैयो हा। हमीदा उण नै फेरू पाणी रो गुटको दियो अर बोली देख बटा म्हैं तो घणाई जापा कराया है। पण थारी तरिया हिम्मत हारती किण नै ई नीं देखी। हमीदा आगै कैयो देख बेटा तू कोई पैलण-गैलण तो है कोनी जिको तनै कोई बात रो डर हुवै। का तनै टाबर जलमणै रो बेरो कोनी ? बावळी तू तो ब्हौत डर रैयी है। हिम्मत राख बेटा एक-दो पीडा खावणै सू थारो छुटकारो वेगो हुय जामी ।

पारो पपडायै होठा सू, सूक्योडै कठा सू, भाठै-सी करडी जीभ सू काठी हिम्मत कर र बोली 'म्हे म्हैं तो आज मरूली म्हारी तो ज्यान चाली ए मावडी पण म्हनै म्हारै मरणै री कीं चिता कोनी पण हमीदा मावडी तनै तनै म्हारै ठाकुरजी रो वास्तो है कै कै म्हैं मरू का जीवू पण तू म्हारै हुवणआळै टाबर नै जिया तिया बचाय लेयी। बा आपरै होठा नै दाता

मू भींचती थकी अर आपरै हाथा-पगा नै ऊधा-सूधा पटकती थकी आग कैयो 'हमीदा मावडी   नीं ता   नीं ता म्हार घराणै रो नावगो ई मिट जावैला। ए मावडी पछै इण घराणै रो मुरम्याज इ नीं रैवैला। पारो रै मूढै माथै आयोडै परसेव रै सागै उण री बडी-बडी आख्या मू माटा-मोटा आसू ढळकणनै लाग्या।

हमीदा आपरी लूगडी रै पल्ल सू पारा रा मूढा पूछ्या। बुचकारी। पछै धीरज सू कैया बेटा तू बावळी हुयगी काई ? मरणो बारै ई पड्यो है काई ? पछै लुगाई तो बार-बार मरै है अर बार-बार जीवै है। क्यूकै बेटा लुगाइ राड तो दुख रो भाडो हुवै है। पण बा दुला रै इण समन्दर नै आपरै सबर अर ध्यावस सू पार करै अर जीवती रैवै। तू एडी गैली-गूगी बाता नीं कर बेटा तनै कीं नीं हुवैला। पछै म्है थारै सू ओ वादा करू हू कै थारै टाबर नै बचावण सारू म्है म्हारी ज्यान री बाजी लगा दयूली।

हमीदा री बात पूरी हुई कोनी ही उण सू पैली इ पारो हमीदा री हथेळी नै आपरी हथेळी सू काठी झाल'र बठीठा खावणनै लागी। अर बा बठीठा खावती-खावती पूठी ठडी हुयगी। हमीदा पारो नै मसळणनै लागी। पारा नै मसळती-मसळती हमीदा साच्या 'राड तू कैवणनै तो ओ कैय दियो कै थारै टाबर नै बचावण खातर म्है म्हारी ज्यान री बाजी लगा दयूली अर तू इतरो बडो वादो कर लियो। पण आ पार किया पडसी ? जीवडा ओ तो तू खोटा वादो कर लियो। हमीदा नै लागी जाणै उण रै माथै री रगा तणीज रैयी है। उण रा आपा उण नै माप सू खाय रैयो है। उण रै डील माप अणूती धूजणी छूट रैयी है। हमीदा ठैर-ठैर साच रैयी ही कै राड थारो सुदा क्यू निकळ्यो ? तू इतरो बडो वादो क्यू कर लियो ? साई रा सौ वेन है। जे काल-कदास नै की रजा-कजा हुयगी अर जे तू इण रै टाबर नै नीं बचा सकी तो तू अल्लाह रै घरै   थारो काई मूढो दिखावैली? बठै काई जवाब देवैली ? फेर हमीदा कीं सुस्ता र अपणै आप सू बाली 'राड तू तो थारी मौत नै खुद ई न्यूती है ' क्यूकै तू तो जाणै है जीवणजी बाबोसा रै घर री रीत नै इण रै खोडीलै सुभाव अर पापी हठ नै   । हमीदा नै लाग्यो कै उण रै पछतावै री भीत उण रै माथै पड रैयी है। अर बा पागे नै भूल र आपरी चिंता मे डूबण लागी।

इतरै मे पारो जोर-जोर सू रणकणनै लागी। हमीदा रो आपरी चिंता सू ध्यान टूट्यो। बा पारा कानी मुडी। उण री कमर नै दबावती थकी उण नै जोर-जोर सू पीडा खावण रो कैयो। पारो पीड माथै पीड खाय रैयी ही। पण अजू इ उण रो छुटकारो नीं हुय रैयो हो।

अठीनै पाना जद सू ई घर रै आगणै री भींत माय बण्योडै आळै मे राख्योडी

ठाकुरजी री मूरती सामीं राय-राय अरदास कर रयी ही हे भगवान म्हारै घराणै री जात नै बचा र म्हारै माथै उपकार कर म्हारा सावरिया। म्हारै धोळा माथै किरपा कर हे तिरलोकी रा नाथ। अबै इण री लाज ह थारै हाथ ।

जीवणजी कनै सू पाना जद सू आई ही तद सू बा आपरै इस्ट सामीं इण भात अरदास कर रैयी ही। कदेई बा थर-थर कॉंप ही ता कदेई बा आपर जीव नै भाठै-सो काठो कर र झूपडै कानी आपरा कान लगावै ही।

पाना जाणै ही टावर हुया पछै रै नतीजा नै। वा जाणै ही आपरी आख्या सामीं हुयोडै कुकरमा नै। जद भी उण री आख्या रै सामीं हुयोडै कुकरमा रा दरसाव उण नै याद आवता तो उण नै लागतो कै उण रै डील माय सू जाणै बिजळी रो सगाटो-सो निकळग्यो है। अर बा थर-थर कापण लाग जावती।

उठीनै तिबारी माय माचै माथै बैठ्यो जीवणजी बार-बार खाँसै हो अर सखारा करै हो। जिण रो मतलब हो कै वो अजू ताई जाग रैयो है।

जीवणजी रै घर री बाड-ओलै बैठ्या सुगनो भैंरू अर उण रा साथी दड खींच्योडा जीवणजी रै घर री हलचल कानी आप-आपरा कान लगाय राख्या हा। उणा नै डर हो कै उणा नै कोई देख नीं लेवै।

उठीनै झूपडै मे पारो घडी क मे ठडी हुवती ही अर सुन्न मे आवती ही तो घडी क में बा चेतो करती ही अर आपरै हाथा नै उधा-सूधा मारती ही। हमीदा उण मे बार-बार लूग री उकाळी सू गरमी बपरा रैयी ही। पण उण रो छुटकारो अजू ई नीं हुय रैयो हो।

दो

आभै रो तारामडळ बगत रा गासिया करता आपरी गति माथै चाल रैयो हो। गाव आपरी गहरी नींद माय सर्राटा भर रैयो हो। मधरा-मधरो बायरियो गाव री जाळा पींपळ नीम झाड्या खेजड्या जैडै रूखा सागै बतळावण करतो रोही कानी जाय रैयो हो। गुवाड री गौर म बैठी गाया भैंस्या उगाळ्या सारै ही। एडै बगत मे कुत्ता रो चाणचवै कूकणो पाना नै इण भात लागै हा जाणै उण रो हाथ काळजो खड्या हुय रैयो है। क्यूकै सूनी राता माय कुत्ता रो कूकणो सुगनीक नीं मानीजै। उण सुनसान रात माय कुत्ता रै कूकणै सू ठाकुरजी रै आळै सामीं खडी पाना रै मन माय बुरै-बुरै विचारा रा भतूळिया उठणनै लाग्या। बा अणहूणी कल्पना रै सागै आपरी विगत मे डूब र थर-थर कापण लागी।

अधबूढ पाना अवखाई अर पीडा रै तपतै धोरा नै पार कर र हिम्मत हार्‌योडी हिरणी दाई आपरै घर रै हालाता सागै समझौतो कर लियो हा। बा आपरी ऊमर रै बाकी दिना नै धक्को दय रैयी ही।

पाना रा पीहरो आपरै चौवळै माय पूजीजता अर नामी घराणो हो। उण लूठै घराणै री बटी पाना ठाकर जीवणजी रै लारै पीहरै अर सासरै री इज्जत खातर अणचींत्या अणभास्या अणहूता अणकूत दुखा नै झेल्या हा पीडा सैयी ही अर जीवती रैयी है। पण अबै उण री सूक्योडी साकळ-सी देही माय इण दुखा रै भारियै नै उठावण री सगती नीं रैयी ही। फेर भी उण मे धीरज ही। ध्यावस ही। पाना सुळ्योडी अर आगूच दीठ री एक स्याणी लुगाई ही।

आज पाना स्याणप रै सूत नै झाल्योडी आपरी सूझ-बूझ सू बगत रै टणकारा नै ललकारणै री हिम्मत ता बटोरै ही पण विगत रा दरसाव जद उण नै याद आवै हा तो उण रो काळजो गिरै छोडै हो।

उण नै याद आयो बो दरसाव जद उण री पैलपोत री बेटी नै देवे रो बापू

अर देवै रो दादो जोरावरसिंह जलमती नै ई टैंटवो दाब र मार न्हाखी ही। पाना मन-ई-मन फुसफुसाई कै इण भात ई म्हारी दो और बेट्या नै ऐ दोनू जुल्मी हया-दया बिना ई मार काढी ही। म्हैं म्हारी कूख सूं जलम्योड़ी काची कूमळा नै म्हारी आख्या सामीं मरोड़ीजती देख'र जद जोर-जोर सू रोवती धाड़ती अर येचेत हुय जावती अर म्हैं गैली हुयोड़ी-सी बहकती, बडबड़ावती अर म्हारा गाभा फाड लेवती तो ई देवै रै बापू अर दादे जोरावर सिंह नै कदैई म्हारै माथै दया नीं आवती। उल्टा म्हनै मारता डाटता अर दुख देवता।

बेटी नै जलमतै ई गळो घोट'र का अमल देय'र मारणै री रीत इण घराणै में लारली चार-पाँच पीढिया सू चाल रैयी है। इणा रो ओ मानणो है कै बेटी तो भाग- फूट्या रै हुवै है।

पाना पूठी आपरी विगत मे डूबगी अर उण रै कानां मे आपरै सुसरै जोरावरसिंह रा बोल गूंजता लखाया। बो कैया करतो हो कै बेटी रै जलम सू बेटी रै बाप री मूछ नीची हुय जावै। बेटी परायो धन हुवै। जवाई घर रो जम हुवै। जे बेटी रा सासरला तीन कोडी रा भी हुवै तो ई उणां रै सामीं बेटी रै माईतां नै हाथ जोड़्यां खड़्यो रैवणो पड़ै। बेटी नै कितरो ई देवो पण बेटी रै सासरला नै धाप नीं आवै। बेटी रा सासरला आपरी अणहूती भूख नै, बेटी नै जीवती बाळ र का उण नै मैणा अर ताना री भोभर मे सेक'र, का उण नै अणूता दुख देय र मिटादै। बो आ भी कैया करतो हो कै बेटी भी बेटै दाईं काळजै री जड़ हुवै। पण जिकी जड सू घराणै री ऐन डूबै, पाणी मरै अर इज्जत रा टक्का हुवै ऐड़ी जड़ नै पनपणै सूं पैली ई बाढ देवणी चाईजे।

ऐड़ी धारणा नै लेय'र इण घराणै रा लोग बेटी नै जलमता ई मारणो मामूली बात समझता आया है। पाना सोच्यो कै आखो गाव इण घराणै री इण खोडीली रीत नै आछी तरया सू जाणै है। पण गाव रै मूंढै माय जीभ कोनी। अर किणी री आज ताईं इण री खिलाफत करणै री हिम्मत कोनी हुई। पछै ऐ जुलमी आपरै जुलम रो कीं सबूत भी तो नीं छोडै है। म्हनै याद है जद म्हैं एक बार इणा रै जुलम रो विरोध कर्यो हो तो ऐ दोनू बाप-बेटो म्हारी हाडी-हाडी रळया न्हाखी ही। म्हनै कई दिना ताईं रोटी नीं दी ही। देवै रो बापू तो म्हारै डाम तक चेप दिया हा। अर जद म्हैं छेकड़लै टैम पेट सू ही तो म्हारै मूढै सू आ बात आधी हुयगी ही कै ना मईना ताईं भार ढोय र जे छोरी हुयगी तो म्हैं तो पूठी ई बिना औलाद रै हुय जावूली। आ बात जद गाव रै पचा ताईं पूगी तो गाव री पचायत भेळी हुई अर देवै रै बापू अर दादे नै पचायत मे बुलाया। उणा सू म्हारै मूढै सू आधी हुयोड़ी यात

री उथळा माग्यो। तो ऐ दोनू बाप-बेटा पूरी पचायत नै टक्को-सो उथळो दियो हो कै म्हारै खेत री बेल रै लोये नै म्हे मतीरडी बणण देवा का नीं देवा आ तो म्हारी मरजी है। थे कुण हो म्हानै पूछणआळा ? अर थे कुण हो म्हानै बरजणआळा ? पछै थारै कनै काईं सबूत है कै म्हे बेटी नै हुवता ई मार देवा हा उण टैम छोगजी रीस म आय र कैयो हो कै 'जोरजी टाबर बेल रो लोयो कोनी हुवै। बो मिनख रो अस हुवै। अर मिनख रै अस नै मारणो जुलम हुवै। अर जिण दिन म्हानै सबूत मिलग्यो तो जोरजी दोनू बाप अर बेटै नै छठी रो दूध याद अणाय देवाला' पाना नै याद आई कै बा दिना म्हैं पूरै दिना सू ही। गावआळा म्हारै टाबर हुवण री ताक मे हा। गाव आळा नै जद बेरो पड्यो कै म्हारै बाल-गोपाळ हुवणआळो है तो उण टैम सगळो गाव रीस मे काठो भरीज्योडो म्हारी कोटडी कानी उलळ पड्यो हो। अर गाव रै लोगा नै इण भात भेळा हुयोडा देख र म्हारो धणी अर म्हारो सुसरो पूरै घर मे लापो लगाणै रो सरजाम कर लियो हो। क्यूकै उणा नै बेरो हो कै जे टींगरी हुयगी तो गावआळा उण नै मारण नीं देवैला।

पण जाग-सजोग सू म्हारै देवो हुयो। बेटो हुयोडो देख र गाव रा सगळा लोग आप-आपरै घरा कानी चल्या गया। म्हारै धणी अर सुसरै रै सोनै रो सूरज ऊग्यो। कासी रो थाळ बाज्यो। रावळै मे उण दिन ढोलण्या जच्चा राणी अर हालरियो गायो। म्हारा सगळा दुख धरती रै माय धसग्या। म्हैं फूली नीं समायी ही। देवै नै लाडा-कोडा अर फूला सू बेसी पाळ्यो। उण रै केळ री कामडी-सी गुलाब रै फूल री पती दायीं फूठरी-फररी बीनणी लाया।

म्हारै देवै अर पारो रो जोडो सिव-पारवती रो-सो जोड़ो हो। आखो गाव धुथकारो घाल-घाल पूरो हुओ हो। पाना एक सिसकारो न्हाख र सोचणनै लागी नीं जाणै किण री निजर लागी कै हसा रो ओ जोडो बिछडग्यो। अर आज म्हानै ऐडा दिन देखणा पड रैया है। पाना री बूढी आख्या पाणी सू भरीजगी। बा आपरी आख्या नै पूछती थकी पूठी ई विगत रै तपतै धोरा माय तिस्सी हिरणी-सी भटकणनै लागी। जद पारो रै पैलडी बेटी इण रै गरीब मा-बाप रै घरै हुई ही तो पारो चार-पाच मईना तक नीं आई ही तो देवै रो बापू हिडकायोडै ऊठ दायीं म्हनै अर देवै नै बटका सू खावतो हो। देवो टाबर हो। बो आपरै बाप रै इण हिडकाव रो कारण नीं समझ सक्यो हो। म्हैं चावती ही कै भगवान करै पारो अठै नीं आवै। पण बेटी रै खातर ता लखपत्या रै घर मे भी ठौड नीं हुवै। पछै बापडे उण गरीबा रो डोळ बेटी नै सभाळण रो किया हुवतो हो ? बेटी नै तो अत-पत सासरै जावणो ई पडै है।

चार मईना सू पारो म्हारै घरै आई। फूला रो भारो-सी गुलाब री पत्ती-सी सोनै रो टुकडो-सी पोती नै लाई। पारो नै ओ बेरो नीं हो कै इण फूल री पत्ती नै ओ खोडीलो सुसराजी आपरै अगूठै सू मसळ र मार न्हाखसी अर आपरै घराणै री पापी रीत नै पूरी करसी।

म्हैं देवै रै बापू रो घणो ई ध्यान राखती ही कै इण जम रो हाथ इण बच्ची माथै नीं पडै। पण एक दिन म्हारी आख लागगी। देवै रो बापू मौको देख र छोरी नै लाड रै मिस माँचै माथै सूती नै आपरै हाथा मे उठाली। कूडो लाड लडावतो छोरी नै घर रै लारै गाया री गौर माय लेयग्यो अर उण रो टैंटवो दाब दियो। हबडकै म्हारी आँख खुली। म्हैं छोरी नै माँचै माथै नीं देख'र झट बीनणी नै पूछ्यो तो बा टिचकारी सू उथळो दियो कै सुसरोजी बारै लेयग्या। म्हैं हडबडागी म्हैं घणी ई बेगी लारै भागी। पण म्हारै पूगणै सू पैली ई ओ पापी उण कळी नै आपरै अगूठै सू मसळ काढी ही।

म्हैं आकळ-बाकळ हुयोडी अर म्हारी फाटयोडी आस्या सू खडी-री-खडी रैयगी। म्हैं सुन्न मे आयोडी बठै कद ताई खडी रैयी ओ म्हनै कीं बेरो नीं रैयो।

देवै रो बापू छोरी नै आँगणै माथै न्हाख'र कूडो ई कूकणनै लाग्यो। आस-पड़ौस रै भेळै हुयोडै लोगा नै कैयो कै छोरी माथै पाडकी पग राख दियो अर छोरी मरगी। उण टैम बीनणती रोय-धोय र सबर कर लियो अर म्हैं ई माथो पीट र रैयगी।

पारो इण घर री इण पापी रीत नै नीं जाणै ही। इण नै तो बेरो उण टैम लाग्यो जद इण रै दूजी छोरी हुई। उण छोरी नै बचावण खातर म्हैं अर देवो म्हारै प्राणा री बाजी लगादी। घर माय घणा ई गोधम हुया घमसाण हुया। पण म्हे उण नै इण पापी सू नीं बचा सक्या। देवै रो बापू उण टैम देवै नै कैयो हो कै जे तू म्हारो तूखम है तो तू म्हारै घराणै री रीत मुजब ई चालैला। देवो जद आपरै बाप री आ बात सुणी तो बो म्हारै सामीं टाबर दायीं बिलख-बिलख र रोयो हो। बो डुसक्या भरतो-भरतो कैयो हो कै 'मा सा जे म्हैं म्हारै घराणै री रीत माथै नीं चाल्यो तो आप जैड़ी सीता अर सावत्री लुगाई माथै काजळ-सो काळो कळक लागैलो। अर जे म्हैं घराणै री रीत निभाई तो म्हारै ई खून नै म्हारै ई अस नै म्हारै हाथा सू म्हैं खुद बाढू इतरो बडो पाप म्हारै सू नीं हुवैला। 'मा सा म्है काई करू किसो कूओ-खाड करू ? म्हारो तो गाव अर चौखळै रै लोगा माय उठणो-बैठणो ई ओखो है।

म्हारा हीरै-सो बेटो घराणै री इण खूनी रीत अर बाप रै खोडीलै सुभाव

रो उथळा माग्यो। तो ऐ दोनू बाप-बेटा पूरी पचायत नै टक्को-सो उथळो दियो हो कै म्हारै खेत री बेल रै लोयै नै म्हे मतीरडी बणण देवा का नीं देवा आ तो म्हारी मरजी है। थे कुण हो म्हानै पूछणआळा ? अर थे कुण हो म्हानै बरजणआळा ? पछै थारै कनै काई सबूत है कै म्हे बेटी नै हुवता ई मार देवा हा उण टैम छोगजी रीस म आय र कैयो हो कै 'जोरजी टाबर बेल रो लोयो कोनी हुवै। बो मिनख रो अस हुवै। अर मिनख रै अस नै मारणो जुलम हुवै। अर जिण दिन म्हानै सबूत मिलग्यो तो जोरजी दोनू बाप अर बेटै नै छठी रो दूध याद अणाय देवाला पाना नै याद आई कै बा दिना म्हैं पूरै दिना सू ही। गावआळा म्हारै टाबर हुवण री ताक मे हा। गाव आळा नै जद बेरो पड्यो कै म्हारै बाल-गोपाळ हुवणआळो है तो उण टैम सगळो गाव रीस मे काठो भरीज्योडो म्हारी कोटडी कानी उलळ पड्यो हो। अर गाव रै लोगा नै इण भात भेळा हुयोडा देख र म्हारो धणी अर म्हारो सुसरो पूरै घर मे लापो लगाणै रो सरजाम कर लियो हो। क्यूकै उणा नै बेरो हो कै जे टीगरी हुयगी तो गावआळा उण नै मारण नीं देवैला।

पण जोग-सजोग सू म्हारै देवो हुयो। बेटो हुयोडो देख'र गाव रा सगळा लोग आप-आपरै घरा कानी चल्या गया। म्हारै धणी अर सुसरै रै सोनै रो सूरज ऊग्यो। कासी रो थाळ बाज्यो। रावळै मे उण दिन ढोलण्या जच्चा राणी अर हालरियो गायो। म्हारा सगळा दुख धरती रै माय धसग्या। म्हैं फूली नीं समायी ही। देवै नै लाडा-कोडा अर फूला सू बेसी पाळ्यो। उण रै केळ री कामडी-सी, गुलाब रै फूल री पत्ती दायीं फूठरी-फररी बीनणी लाया।

म्हारै दवै अर पारो रो जोडो सिव-पारवती रो-सो जोडो हो। आखो गाव थुथकारो घाल-घाल पूरो हुओ हो। पाना एक सिसकारो न्हाख र सोचणनै लागी नीं जाणै किण री निजर लागी कै हसा रो ओ जोडो बिछड्ग्यो। अर आज म्हानै ऐडा दिन देखणा पड रैया है। पाना री बूढी आख्या पाणी सू भरीजगी। बा आपरी आख्या नै पूछती थकी पूठी ई विगत रै लपटै घोरा माय तिस्सी हिरणी-सी भटकणनै लागी। जद पारो रै पैलडी बेटी इण रै गरीब मा-बाप रै घरै हुई ही तो पारो चार-पाच मईना तक नीं आई ही तो देवै रो बापू हिडकायोडै ऊठ दायीं म्हनै अर देवै नै बटका सू खावतो हो। देवो टाबर हो। बो आपरै बाप रै इण हिडकाव रो कारण नीं समझ सक्यो हो। म्हैं चावती ही कै भगवान करै पारो अठै नीं आवै। पण बेटी रै खातर तो लखपत्या रै घर मे भी ठौड नीं हुवै। पछै बापडै उण गरीबा रो डोळ बेटी नै सभाळण रो किया हुवतो हो ? बेटी नै तो अत-पत सासरै जावणो ई पडै है।

चार मईना सू पारो म्हारै घरै आई। फूला रो भारो-सी गुलाब री पत्ती-सी सोनै रो टुकडो-सी पोती नै लाई। पारो नै ओ बेरो नीं हो कै इण फूल री पत्ती नै ओ खोडीलो सुसरोजी आपरै अगूठै सू मसळ'र मार न्हाखसी अर आपरै घराणै री पापी रीत नै पूरी करसी।

म्है देवै रै बापू रो घणो ई ध्यान राखती ही कै इण जम रो हाथ इण बच्ची माथै नीं पडै। पण एक दिन म्हारी आख लागगी। देवै रो बापू मौको देख र छोरी नै लाड रै मिस माँचै माथै सूती नै आपरै हाथा मे उठाली। कूडो लाड लडावतो छोरी नै घर रै लारै गाया री गौर माय लेयग्यो अर उण रो टैंटवो दाब दियो। हवडकै म्हारी आँख खुली। म्हैं छोरी नै माँचै माथै नीं देख र झट बीनणी नै पूछ्यो तो बा टिचकारी सू उथळो दियो कै सुसरोजी बारै लेयग्या। म्हैं हडबडागी म्हैं घणी ई बेगी लारै भागी। पण म्हारै पूगणै सू पैली ई ओ पापी उण कळी नै आपरै अगूठै सू मसळ काढी ही।

म्हैं आकळ-बाकळ हुयोडी अर म्हारी फाट्योडी आख्या सू खडी-री-खडी रैयगी। म्हैं सुन्न मे आयोडी बठै कद ताई खडी रैयी ओ म्हनै कीं बेरो नीं रैयो।

देवै रो बापू छोरी नै आँगणै माथै न्हाख'र कूडो ई कूकणनै लाग्यो। आस-पडौस रै भेळै हुयोडै लोगा नै कैयो कै छोरी माथै पाडकी पग राख दियो अर छोरी मरगी। उण टैम बीनणती रोय-धोय'र सबर कर लियो अर म्हैं ई माथो पीट र रैयगी।

पारो इण घर री इण पापी रीत नै नीं जाणै ही। इण नै तो बेरो उण टैम लाग्यो जद इण रै दूजी छोरी हुई। उण छोरी नै बचावण खातर म्हैं अर देवा म्हारै प्राणा री बाजी लगादी। घर माय घणा ई गोधम हुया घमसाण हुया। पण म्हे उण नै इण पापी सू नीं बचा सक्या। देवै रो बापू उण टैम देवै नै कैयो हो कै जे तू म्हारो तूजम है तो तू म्हारै घराणै री रीत मुजब ई चालेला। देवो जद आपरै बाप री आ बात सुणी तो बो म्हारै सामीं टाबर दायीं बिलख-बिलख र रोयो हो। बो डुसक्या भरतो-भरतो कैयो हो कै 'मा सा' जे म्हैं म्हारै घराणै री रीत माथै नीं चाल्यो तो आप जैड़ी सीता अर सावत्री लुगाई माथै काजळ-सो काळो कळक लागैलो। अर जे म्हैं घराणै री रीत निभाई तो म्हारै ई खून नै म्हारै ई अस नै म्हारै हाथा सू म्हैं खुद बाढू इतरो बडो पाप म्हारै सू नीं हुवैला। 'मा सा म्हैं काईं करू किसो कूड़ो-खाड करू ? म्हारो तो गाव अर चौखळै रै लोगा माय उठणो-बैठणो ई ओखो है।

म्हारो हीरै-सो बेटो घराणै री इण सूनी रीत अर बाप रै खोडीलै सुभाव

र कारण घुण लाग्योड़ै धान दाईं सुळतो-सुळतो इण नरक सू लारो छुडा र चार मइना पैली ससार सू चल्या गया। इण वीडा री कुड माय म्हा दानू अभागण्या नै रोवती-धोवती छोडग्यो। अबै चाद रै टुकडै-सी पारो रा काई हुवैलो ? अर काई हुवैलो इण घराणै रो ? अबै म्हैं कठै हाथ घालू अर किण नै कैवू ? म्हारा एडा भाग कठै क म्हारै आज पोतो हुवै ता देवै रै बापू सू लारो छूटै अर बस चालै। पाना इण विचारा माय उळझ्योडी डुसक्या भर-भर रोवणनै लागी।

पाना विचारा रै जजाळ मे पूठी गमगी। मन म साच्यो, जे आज देवो जीवतो हुवतो अर बीनणी रै जे छोरी हुय जावती तो म्हैं देवै अर बीनणी नै इण जुलमी री आख्या सू अदीठ कर देवती अर उण नै कैवती कै तू इण नै पाळ-पोस अर बडी कर लेयी। तू म्हारै कळक री परवा नीं करी। क्यूकै सोनै नै काट नीं आवै। पछै दुनिया सामी आपा आपणो मूढो ऊजळो कर सकाला।

विगत रै इण जजाळा माय आथै दाईं गोता खावती-न्हावती पाना साच्यो कै स्यात बीनणी रो अब ताई छुटकारो नीं हुवणै रा कारण आ ता नीं है कै जे छोरी हुई तो ओ कस नीं छोडैला। पण अबै म्हैं काई करू ? म्हारा फूटयोडा भाग हुवण म काई कसर है कै आज छोगजी भी गाव म नीं है। म्हैं खुद उणा नै गाव तरै जावता देख्या है। अबकै म्हैं धार-विचार राखी ही कै टाबर हुवण री बेळा छोगजी अर गाव रै बीजै लोगा नै म्हैं खुद बुला र लावूली। अर जे अबै आधी रात री गाव नै जगाऊ तो देवै रो बापू टाबर हुया पैली इ खून-खराबै माथै उतर आवैलो। क्यूकै रुपिये मे पावली जितरो क डरै है तो छोगजी सू डरै है। छोगजी तरकीबआळो अर बात नै सवारणआळो मिनख है। अर बो ई आज अठै कोनी अबै काई हुवैला ?

पाना इण दसा म डाफाचूक हुयोडी अर गैली-गूगी दाईं ठाकुरजी रै आळै नै काठो झाल र गिडगिडावण लागी

'हे म्हारा भगवान' अबै आप ई म्हा गरीबणी रा नाथ हो-रखाळा हो-म्हारी लाज आप रै हाथा माय है- अबै तो म्हारै माथै दया करो म्हारा ठाकुरजी । पाना री आख्या सू चौसरा चालणनै लाग्या।

इतरै मे झूपडै माय सू टाबर रै कूकणै री आवाज पाना रै काना माय पडी। पाना झट ठाकुरजी रै आळै आगै टेक्योडै आपरै माथै नै उठायो। उण नै लाग्यो कै उण म बिजळी रा करट-सो दौडग्यो है। अर पाना पागल-सी हुयोडी बेगै-बेगै पगा सू झट झूपडै कानी लपकी। झूपडै रै बारणै आगै लटकतै पड़दै नै उठायो अर फुरती सू झूपड़ै रै माय बडगी।

पारो बेसुध हुयाडी एक कानी पडी ही। हमीदा टाबर नै हाथा माय लियाडी परसवै सू बुरी तरिया भींज्योडी ही। चिमनी रै टिमटिमावतै चानण म पाना आपरी आल्या हमीदा रै हाथा माय लियाडै टाबर पर गाड दी। हमीदा रै हाथा माय छोरी ही। छोरी झलर-झलर कूक रैयी ही। हमीदा उण नै साफ करणै मे लाग्याडी ही।

हमीदा रै हाथा माय छोरी नै देख र पाना रा पग जाणै धरती सू चिपग्या। उण नै धरती धरती माय धसती-सी लागी। पाना नै लखायो- ओ झूपडो आ धरती ऐ सगळी चीजा जाणै घूम रैयी है। थोडी देर मे उण री आल्या सामी अंधेरो-सो छायग्यो। पाना बरफ-सी ठडी हुयोडी। आपो भूल्योडी। चेतो चूक्योडी खडी-री-खडी रैयगी। उण नै कीं नीं सूझ रैयो हो। बा झूपडै रै बिचाळै लाग्योडी ठाड नै आपरै हाथा सू काठी झाल्योडी भाठै दायीं खडी ही। छोरी रो कूकणो जारी हो।

थाडी ताळ मे पाना नै चेतो बापरयो। बा हिम्मत कर र हमीदा नै पूछ्यो अबै काईं हुवैला हमीदा ? हमीदा आपरै होठा माथै आगळी राख'र धीरै सू इसारो करयो सी SSS ।' उण रो इसारो हो कै पानाबाई आप बारै चल्या जावो।

पण पाना सू नीं तो झूपडै सू बारै जावणो हुय रैया हो अर नीं बा झूपडै रै माय खडी रैय सकै ही। बा तो डाफाचूक हुयोडी ज्यू-री-त्यू खडी ही। छोरी रो कूकणो जोर पकड रैयो हो। इण बार हमीदा पाना नै आपरै मूढै सू कैयो 'पानाबाई आप बेगा-सा बारै चल्या जावो।'

पाना झूपडै सू बारै आयगी। इण बार बा ठाकुरजी रै आळै नै अणदेख्यो कर र ठाकुरजी री मूरती नै पीठ देय र खडी हुयगी।

तिबारी मे अजू ताईं जागतै बैठयै जीवणजी रै काना माय टाबर रै रोवणै री आवाज आई तो बो झट चेतो कर र खखारो करयो। पाना जाणगी कै देवै रै बापू नै टाबर हुवणै रा बेरो पडग्यो है।

जीवणजी दब्योडी आवाज सू तिबारी म ई बठयो बोल्यो देवै री मा टाबर हुयग्यो काईं ?

पाना जीवणजी रै हेलै री अणसुणी कर र चुपचाप खडी रैयी।

जीवणजी अबकै थोडो कडक र बोल्यो अरे देवै री मा टाबर रै रोवणै री आवाज आय रैयी है टाबर हुयग्यो काईं ? पण काईं बात है तू उथळो क्यू नीं दय रैयी है? अरे कीं उथळो तो दै।

पाना आपरै मन मे साच्यो 'जीवडा ओ लारो तो कोनी छोडै। पण अवै काई करू अर काई उथळो देवू ?' बा इण ससोपज मे पड्याडी आपरै पग रै अगूठै सू खडी-खडी आगणो कुचरै ही।

जीवणजी आपरै सिराणै सू अमल री डब्बी काढी। थोडो अमल खायो। फेर खखारा कर र पूछ्यो अरे देवै री मा कानां सू बोळी हुयगी काई ? का तनै म्हारो हेलो सुणीजै कोनी ? तू की उथळो क्यू नीं देय रैयी है ? थारी जीभ ताळवै किया चिप रैयी है ? अर जे टाबर हुयग्यो है तो वेगो-सा त्यार दिखा बाळै नीं !'

पाना भाठै री दवळी ज्यू चुपचाप खडी ही। वा की नीं सोच पा रैयी ही। उण रै अन्तस मे ऐडा विचार आय रैया हा कै इण डैण रो सुर अजू ई उण ढब इ चाल रैयो है।

पण जीवणजी नै चैन नीं हो। बो इण बार थोडो तप'र बोल्यो अरे राड म्हैं माय आवू, का तू टाबर नै ल्यावै है ?

पाना जीवणजी रै इण बार रै हेलै सू थोडी सावचेत हुई। उण रो सास फूलणनै लाग्यो। उण नै लाग्यो उण री सास-सास म सूळा-सी गड रैयी है। उण री जीभ रो सुवाद जैर दाईं खारो हुय रैयो है। अर उण रै कठा नै देवै रा बापू जाणै आपरै हाथा सू दूप रैयो है।

पाना बडबडाई हे सूरज भगवान ! बेगो ऊग, जिको थारी साखी मे म्हैं म्हारी पारो अर इण री छारी नै सगळै गाव नै सूप देवू। पछै ज देवै रो बापू म्हनै ज्यान सू भी मारैलो तो म्हैं मरण नै त्यार हूँ। अर जे म्हारा भाग चोखा हुया तो दिनूगै ताईं छोगजी अय जावैलो। अर बो बात नै आपै ई समेट लेवैलो।

उठीनै जीवणजी आपरै माचै कनै पडी लाठी नै जमीन माथै मारतो थको बोल्यो अरे ससम रोवणी राड तू तो की उथळो कोनी देवै। छेकड म्हनै ई माय आवणो पडैलो। अबै जीवणजी नै पूरो भरोसो हुयग्यो हो कै इण घराणै रा ता फेरू भाग फूटग्या अर छोरी हुयगी दीखे।

अबकै पाना हिम्मत कर'र कैयो देवै रा बापू, टाबर अबै हुयो है। दाइ आपरो काम कर लेवै तो म्हैं लेय र आऊ हूँ।

अर राड हुयो काई है ? जीवणजी अन्तस रै जोर सू झाळ मे आय'र पूछ्यो।

'म्हैं तो अजू ताईं नीं देख्यो है अर नीं ई म्हैं झूपडै मे गई हू।' पाना जीवती मासी गिट'र पडूत्तर दियो।

अरे करमफूटी राड बगी-सी देख तो सरी। अर म्हने बेगो-मो उथळो दे। जीवणजी रै सुर मे उतावळोपण हो।

बाड कनै बैठ्यै सुगनै अर उण रै साथ्या रै काना माय जद जीवणजी रै घर रो बोलारो पड्यो तो बै सगळा चौक्न्ना हुयग्या। आप-आपरै गाभा नै झाड्या अर खडा हुयग्या।

सुगनो बोल्यो देखो भाया टाबर तो हुयग्यो दीखै है। पण थे सगळा जिण भात म्हैं कैवू उण भात ई करोला।

बै सगळा वोल्या 'ठीक है-ठीक है।

सुगनो बोल्यो 'पैलपोत आपणै माय सू एक जणो बाबोसा रै घर माय जावैलो।

भैरू बोल्यो 'जे आपा सगळा ई एकै सागै बडा तो ?

सुगनो बाल्यो 'जे आपा सगळा ई एकै सागै बड्या तो बाबासा आपा नै देख र बिदक जावैला। अर जे छोरी हुयी है तो पछै बै झूपडै माय जाय र उण रो गळा टूप र मार देवैला। अर पूठो आय'र कैय देवैला कै मरयोडी छोरी हुई ही। पछै आपा काई उणा री पूछ बाढ लेवाला ?

उणा माय सू एक जणो बोल्यो 'यार पैली आपा नै आ बेरो तो लागै कै टाबर हुयो है का नीं ? आपा तो इण लोगा रो कोरो बोलारो सुण'र अटकळा लगावा हा। कठैई आ नीं हुवै कै आपा काम खराब कर न्हाखा। अर आपणी आख्या माय सू काढयोडी आ आखी रात अकारथ ई जावै। म्हारो तो ओ कैवणो है कै आपा नै दाई का ठकराणी सा जे दीख जावै तो आपा उणा सू बेरो लगा लेवा। पछै जे आपा सगळा ई एकै सागै बड र जीवणजी बाबोसा रै घेरियो घाल'र बैठ जावाला तो आपणो काम बण जावैला।

इण साथी री बात सगळा रै जचगी। इतरै मे एक जणो बोल्यो 'जे ठकराणी सा बारै आई अर आपा नै की नीं बतायो तो ? पछै गाव मे इण रै बारै मे भी बाता हुवै है कै ठकराणी ठाकर सू मिल्योडी है।

सुगनो बोल्यो- 'बापडी ठकराणी नै गाव-राव अर आपा जैडा रो दास देवणा म्हारी दीठ म तो ठीक कोनी ! क्यूकै उण बापडी मे काई बीत रैयी है ? का तो बा जाणै है का भगवान जाणै है। आपणै तो ऊदो कैयी जिकी बात दाय आई है कै थोडी ताळ दाई नै उडीकत्यो। पछै आपा सगळा ई एकै सागै जीवणजी बाबोसा रै घर माय बड जावाला।

अबै बै सगळा ई दाई री उडीक मे पूठा बैठग्या। जीवणजी रै घर माय किया

बड़ै? अर वद बड़े ? जैडी लग्वीवा माय उळझ्योड़ा जुगती सोचणनै लाग्या। उण मोट्यारा रै डील माय घणी सगती ही। माकळी फुरती ही अर सागीडी चुस्ती ही। पण उणा मे बात री बारीकी अर बगत री मूई री नौक रै मेल नै समझण री सूझ नीं ही। गाव रा ए माट्यार निरमळ जळ दार्मी वजळै मन रा कोरै अर थोळै रपड दार्मी साफ-सुथरा जीवणजी जैडै पापी री घात नै ऐ किया समझ सकै हा ?

जीवणजी अजू ताई पाना नै टाजर लेय र आपरै कनै आवती नीं देखी तो वै आपरी डाग नै उठाई। अर आपरै माचे सू धीरै-सी उठ्या। फेर बै होळै होळै पग रावता आपरै आगणै ताई पूग्या।

जीवणजी री आंख्या सू जाणै खून ओसरै हो। उणा रो मूढो डरावणो लागै हो। उणा रै डील माय अणूती करडाई बापरयाडी ही। चैरो झाळ सू लाल हुयोडो हो अर उणा रो डील रीस मे काप रैयो हो।

जीवणजी रा ऐडो रूप पाना आपरी छोरया अर देवै री दो छोरया रै बगत भी देख चुकी ही।

पून रै हळकै-से लहरकै मे जिण भात रूख री डाळी हिलणनै लागै उण भात पाना जुलमी जीवणजी रै इण रूप नै देख र धूजणनै लागी। पाना नै लाग्यो जाणै उण रै डील माय खून री एक बूद भी नीं है। उण री देह मे जाणै प्राण नीं है। वा बोलणो चावै है पण उण रै घीघी बध रैयी ही। उण रै मूढै सू एक आखर भी नीं निकळ रैयो हा। फेर भी पाना आपरै कांपतै डील सू हिम्मत कर'र जीवणजी सामीं हाथ जोड़णै री चेस्टा कर रैयी ही।

पण जीवणजी आपरै हाथ री ताठी नै काठी झाल र पाना माथै उबाक्तो थको बैयौ 'रीस तो ऐडी आवै है कै राड नै एक डाग मे लाम्बी कर देवू। पण गिजळी राड रै मूढै माथै सरम ई कोनी। अरे अठै खडी थारै माईता नै धोबा देवै है काई ? म्हैं दो घडी सू कूक रैयो हू कै टाबर हुयग्यो तो ल्या म्हनै दिखा दै दिखा दै। पण अबे म्हे आप ई झूपडै माय जाय'र देखूला ।'

जीवणजी री बात अजू पूरी नीं हुई ही। बिचाळै ई पाना दुसख्या भरती-भरती बोली 'काई ल्यावू देवै रा बापू काई ल्यावू छोरी ।' पाना आपरो मूढो फाड दियो।

'तो छोरी हुयगी काई ? तो पछै राड किण नै उडीकै है? अर क्यू मूढो फाड़ै है ? जोर-जोर सू कूक र काई सगळै गाव नै भेळो करणो चावै है ? चाली-चाली रैम अर बेगी-सी झूपड़ै मे जाय'र थारी कुण कैयोडी नै फुरती सू ल्या। जा तूं बेगी जा ।

पण पाना आपरी ठाड माथै चुपचाप खडी ही। बा टस सू मस नीं हुय रयी ही।

अबकै जीवणजी पाना रै खाधा नै मचकावतो बोल्या अरे राड तू छोरी नै वगी-सी ल्यावै है क म्है खुद जाय र ल्यावू ?

देव रा बापू आप न ठाकुरजी रो वास्तो है अबै आप म्हार दव री इण छकडली सैनाणी नै मत मेटा। पाना आपरै ओढणै रो पल्लो बिछा र गिडगिडाइ। पछ आग क्यो 'नीं तो आपण घराणै रो नावगो ई मिट जावलो।

अर राड बुढापै मे थारो हीयो क्यू फूटग्यो ? थारा देवा वडो का म्हारो बाप-दादो ? जे बेटया सू ई घराणै रो नावगो चालै तो बेटा नै कुण पूछैलो ? अरे बडेरा गूगा-गैला नीं हा ! बै बेटया नै परायो धन समझ्यो अर हीणो धन मान्यो। जदी ता म्हारै घराणै मे आ रीत रैयी है कै नीं तो म्हे परायो धन पाळा अर नीं ई दूजा री दीठ मे हीणा हुवा। तू तो बेगी-सी जा अर उण टींगरी नै ल्या।

देवै रा बापू अबै छेकडलै बगत कीं पाछली धारा बगत अर जमानै नै जाणो। आ जिद छोडदयो। पाना जीवणजी नै समझावणनै लागी बेटी थळी रो धरम हुवै। बेटी रो दान कुळ री स्यान हुवै बेटी विना घर रो आगणो कुवारो रैव। बेटी बिना घराणो अलूणो हुवै। जिण कुळ मे बेटी नीं हुवै बो कुळ काई जोगा नीं हुवै। बेटी सू कुळ रो मान बधै। बेटी सू ससार चालै। बेटी सू इण सृष्टि री रचना हुवै। फेर आप रै घराणै मे भी तो किणी री बेटी सू आप रो वस चाल्यो है। आ बात आप क्यू भूलो हा ? फेर बेटी ता लक्ष्मी हुवै। आज आपणै घराणै मे भगवान फेरू लक्ष्मी दी है। अर आप उण नै । पाना बेथाग रोवती जावै ही अर कैवती जावै ही देवै रा बापू ! घराणै री निसाणी जिण भात पोतै सू ओळखीज है उणी भात ई पोती सू अर दोयती दोयतै सू ओळखीजे है। पछै नर नानाणै रो ओखाणो तो जग जाणीजे है। आज ठाकुरजी महारान देवै रै बेटी दी है तो आपा इण नै बेटै जैडी माना। स्यात इण रै लारै आपणो बुढापो सुधर जावै। इण री मावडी री आतडी भी ठडी रैवैला।

जीवणजी रीस म बोल्यो 'तो म्हारे घराणै री रीत बळो ! म्हारी आन बळो ! म्हारी स्यान बळो ! मरजाद बळो ! पण इण री मावडी अर दादी री आतडी ठडी रैवणी चाईजै। पछै अबकै थारै ठाकुरजी री दियोडी छोरी जीवती रैवणी चाइजै ! क्यू ? इण रै ठाकुरजी सोनै री पाँख्या लगा र भेजी है काई ? म्है पूछू हूँ, आप रै ठाकुरजी रै घर माय बटा री काई कमी ही ? पछै म्हारै घरै इण छोरी नै क्यू भेनी ? म्हैं तो पूछो ई इण छोरी नै उण रै घरै भेजूला । जीवणजी जाडा

पीसता आगै वाल्या 'राड रा बळ्यो माजनो अर बळ्या डोळ। म्हनै सीस दवणनै लागी ह ! म्ह पूछू हूँ तू ऐडी सीस दवणआळी थारती टीगरयाआळै टैम कठै मरगी ही ?

'दवै रा बापू, उण टैम म्हैं नूवीं-नूवीं ही। आप रै घराणै री खोडीली रीत अर सुभाव नै परखण री दीठ म्हारै माय नीं ही। अर जद म्हैं आप री इण खाडीली रीत नै जाणगी तो म्हैं आप लोगा रो बराबर विरोध कर्‍यो है। उण रै बदळै मे आप अर आप रा जी सा म्हारै म काई-काई करी है उण नै आप भी जाणा हो अर म्हैं भी जाणू हूँ। म्हैं माय रा माय घमीडा लिया है। म्हैं जैर माथै जैर पीयो है। म्हैं ऊमर सू पैली बुढापा लिया है। म्है आप री इज्जत रा तामणा लोगा रै सामीं इण खातर नीं खिलेर्‍या कै म्हैं भलै अर लूठै घराणै री बेटी हूँ। अर एक भलै घराणै री बेटी पी र-सासरै री इज्जत री घणी मोटी धुरी हुवै। इण खातर ई म्हैं आप रा इन्याव सैवती रैयी। लोही री घूट ज्यू पीवती रैयी। अर आप इण नै म्हारी निबळाई समझ र म्हारै माथै अणूता जुलम करता रैया । पण अबै आप आ बात क्यू नीं समझा कै आज दुनिया म देवो नीं है। आ जवान मोटयार विधवा बीनणी आपरा दिन किण रै सायरै काटैली ? स्यात ओ सिसकता तिणकलो आपा सगळा री जिन्दगाणी म एक नूवैं सूरज रै रूप म आय जावै। पाना नै लाग्यो जाणै उण रै माय जीवणजी रै जुलमा रो विरोध करणै री सगती आय रैयी है।

पाना री बात सुण र जीवणजी काठो रीस मे भरीजग्यो। बो कडक र बोल्यो अर चुडैल थारी सुरळी क्यू निकळगी ? म्हारै घराणै री आ रीत नीं है कै म्ह परायै धन नै पाळा अर उण रै सायरै म्हारा दिन काटा। फेर म्हारै घराणै री आण माथै म्हारो घराणा मिटै का म्हारो नावगो मिटै तो मिटो म्हनै इण री परवाह कोनी।' इतरो कैय र जीवणजी पारो रै झूमडै कानी उण छोरी नै लेवणनै जावण लाग्यो।

अबै पन्ना रीस म आभोडी नागण दाईं फुफकारती आपरै दोनू हाथा नै चौडा कर र जीवणजी नै पारो रै झूपडै कानी जावणै सू रोकती थकी कैयो 'तो देवै रा बापू आप भी कान खाल र सुणल्यो अबै म्हैं इण घराणै रो परकोनियो नीं हुवण देवूली। म्हैं इण घराणै री घरोट खातर अणूता जुलम सैया है। म्है म्हारै देवै री आखरी निसाणी नै आप रै खूनी पजा माय नीं सूपूली। अबै आप पैली म्हारा प्राण ल्यो अर पछै इण छोरी रै हाथ लगावोला। अर आज म्हैं म्हारा प्राण दवणनै त्यार हूँ पण इण छोरी नै म्हारै जीवतै जीव थकी आप नै हाथ नीं लगावण देवूली। पन्ना री धस्पाडी आस्था रा मोटा-मोटा डेळा जाणै बारै पडणआळा हा। उण री

नाक सूं तेज सास चाल रैयी ही। उण रा मूढा रीस सू तावै दायीं लाल हुयग्यो हो।

पाना रो एडा रूप जीवणजी आपरै जीवण मे पैली बार देख्यो हो। आज ताईं उणा रै घराणै मे लुगाई नै धणा री धणरसी सू बेसी कदैई नीं समझी। आज उणी घराणै री लुगाई आपरै ई धणी सामीं इण रूप मे बात करै ? अर विरोध करै ? आ बात जीवणजी जैडै जरडू नै किया भावती ? वो पाना नै लाठी रै ठेगै सू एकै कानी पटकदी अर खुद झूपडै माय बडणै खातर आगै बध्यो। पण धरती माथै पडी-पडी पाना रै हाथा माय जीवणजी री धोती रो पल्लो झालीजग्यो अर वा उण नै काठो झाल्योडी जोर-जोर सू कैवणनै लागी थानै थारै कुळ री रीत री सौगन है। थानै ठाकुरजी री सौगन है। थानै थारै देवै री राख री सौगन है। अर थानै थारी कुळदेवी री सौगन है ये झूपडै म नीं जावोला। थे देवै री बेटी रै हाथ नीं लगावोला।'

जीवणजी आपरी लाठी रै घुद्दै सू पाना नै धुदाय रैयो हो। पण पाना भी उण री धोती रो पल्लो नीं छोड रैयी ही। जीवणजी उण नै घींसतो-घींसता झूपडै रै बारणै ताईं लेय आयो।

उठीनै झूपडै माय पारो अचेत पडी ही। हमीदा जीवणजी अर पाना रै गोधम सू थर-थर काँपै ही। जच्चा कनै बैठी आपरै हाथा रो काम झटाझट निपटावणै मे लाग्योडी ही अर बुरी तरिया सू घबरायोडी ही। उण नै डर हो कै ओ दुष्ट कठैई झूपडै माय नीं आय जावै। वा वेगो-सो टाबर नै गाभा सू ढक र झूपडै सू बारै निकळणनै लागी अर अठीनै सू जीवणजी रो झूपडै रै मायनै बडणो हुयो। इण दोनू रा एकै साथै ऐडो टकराव हुयो कै जीवणजी झूपडै रै बारै एकै कानी लड्यो हुयग्यो। हमीदा दायी रै हाथा माय गाभै सू ढक्योडो टाबर देख र जीवणजी आपरी मोटी-मोटी लात आस्या नै काढ र बोल्यो 'जमालियै री बहू, आज तू म्हारै घर री सगळी बाता सुणली है। अर थारो घर म्हारै घराणै रो पीढया सू दायीपो करतो आयो है। जे अबै म्हारै घर री बात कठैई आयी हुई तो म्हैं थारै घर माय एकै नै ई जीवतो नीं छोडूला। म्हारो काईं म्हैं तो मर्योडो हू। जीवणजी आपरी बात एकैसास सू कैयग्यो।

दायी हमीदा रो थाकयोडो चै'रो अर वा आपरै धापडी जम्याडै होठा सू कीं कैवणो चावै ही। उण सू पैली ई जीवणजी जाडा पीसतो बोल्यो 'ल्या ल्या पैली तू म्हनै टाबर झला ।

हमीदा नै डर हो कै जे टाबर इण रै हाथा म देय देवूली तो ओ कस इण टाबर नै आगणै माथै न्हाख र मार देवैला।

जीवणजी हमीदा र हाथा सू उण टावर नै खोसणनै लाग्या। इतरै म जीवणजी री धाती रा पल्ला आल्याडी अर उणा रै पगा माथ आपरै सिर नै बार-बार फोडती पाना जीवणजी री धाती रो पल्लो छोड र झट सू खड़ी हुयगी। वा जीवणजी अर हमीदा रै बिचाळै ढाल दायीं तण'र इण भात खडी हुयगी कै जीवणजी आपरी पूरी सगती सू भी पाना नै हटा नीं सक्यो। नीं जाण पाना र घाव दायीं डील माय इतरी सगती कठै सू आयगी ही? पाना रो चडी अर ककाळी रूप देख र जीवणजी बुरी तरिया सू सकपकायग्यो। विकराळ हुयोडी पाना विरमी दायीं लाल हुयोडी आख्या र डाळा नै काढ र चाडा नै पीसती भूखी सिंघणी दायीं गरजी, 'जे देवै रै टावर रै हाथ लगा लियो तो सूक्योडै आकडै दायीं थारी नमडी नै तोड र थारै हाथा माय देय देवूली।'

पाना रो एडो रूप अर ऐडी बाता देख र जीवणजी रो डील परसेवै सू भीजग्यो। वै सोच्यो कै थारी लुगाइ जिकी विनडी रै डाळा सू डरती ही जिकी थारै सामी कदेइ निजर उठा र भी नीं देखी ही जिकी रै माथे आज तार्ई थारा हुकम चाल्या हा आज बा इज लुगाइ थानै इण भात अपमान करै थारै कुळ री रीत नै ललकारै । थारै पराणै री आण नै धूड म मिलावै। जीवणजी नै लखाया जाणै उण रो पौरस उण नै धिक्कार रैयो है।

जीवणजी कादे म लपथीज्योडै कुत्तियै दायीं फडफडी खाय र पाना नै दकाळयो अरे राड ज गडकडी म्हाऱ्या री थुगी में जाय र भूँसली ला राड म्हारया रो वसेरो किया हुवैला ? आज तू थारी औकात भूलगी काई ? इतरो कैय र जीवणजी आपरै दोनू हथा माय झाल र पाना नै एकै कानी पटकणनै लाग्यो। पण पाना भी उणा रै सामी उण ढग सू ई तणीज्योड़ी रैयी।

एडै गोधम बिचाळै हमीदा टावर नै काठो झेल्याडी बोली अर मा सा बा मा आप दानू म्हारी बात तो सुणो। आप दानू लडो मती आप नै भगवान रो वास्तो है। आप नै रामजी रा वास्तो है आप म्हारी बात तो सुणो। पण बिचारी हमीदा री कुण सुणै हो। वै दोनू तो आपस म साप-छछूदर दायीं गुत्थमगुत्थी हुय रैया हा।

जीवणजी रै घर माय जोर-जोर रो बोलागो अर राफड-रोळी नै सुणी तो बाड आलै बैठ्या सुगना अर उण रा साथी भाग र झट जीवणजी रै घर माय बड्या। उण चारा रो तो घर माय बड़णो हुयो अर उठीनै दायीं हमीदा रो आपरै हाथ माय गाभै मू लपट्योडै टावर नै जीवणजी नै दिखावणो हुयो। टावर नै देख र जीवणजी हक्को-बक्को हुयग्यो। पाना गट्टा तार्ई सूनी हुयगी। सुगनो अर उण रा साथी खुसी सू नाचणनै लाग्या। हमीदा रै हाथा माय छोरो हा।

जीवणजी री बूढी आत्या नै विस्वास नीं हुयो। वा सांच्याणी वठै पड़ी पड़ी सुपना तो नीं देख रैयी है। वो टगटकी बांध र उण छोरै मे अपरी आत्मा गाड राखी ही। स्यात वा उण छोरै माय आपरै बेटै देवै रो रूप देख रैयो हा। का वा अपरै घराणै रै दीवै नै अर उण सू हुवणआळै उजास री जोत नै देख रैया हा। पण वो उणन बरावर देखता ईज रैयो हो। जग-मजग सू उण टैम उण टाबर नै मूत (पेसाब) उतरयो। उण री सीधी धार जीवणजी रै मूंढै माथै जा र पड़ी। पण जीवणजी अबू ई उण छोरै कानी देख रैयो हा।

पण घड़ी तळ मे जीवणजी नै भरोसो हुयग्यो कै आ म्हारो पोतो है। म्हारै देवै रो बेटो है। म्हारै कुळ रा चानणो है। म्हारै घराणै रा दीयो है। आ म्हारै वंस रो नावणो है। आज म्हारै आंगणै सोनै रो सूरज ऊग्यो है। आज म्हारै आंगणै मंगळ ढोल टीवो गैला। जीवणजी नै लखाया जाणै वो हरख सू रवड रै ढब्बू दायी फूल रैयो है।

जीवणजी रा बरसा सू विना हसी रा सूखा होठ। उण री तिस्सी आत्या। सळा पड्योड़ो चेहरो। दस-पन्द्रह दिना पैली वधयोडी दाढी रा तमणा। पिचक्योड़ा गाल। लाबी नाक रै नीचै परती कानी ढळती मूछया अर थोडी जम्याड़े दाता री बतीसी सू हरख री हसी इण भात फूट पडी जाणै सूक्योड़ै रेत रै खाळै माय घणचको ई पाणी रो वाळा चालग्यो है। अर वो हैं हैं हैं कर र कई ताळ ताई हसतो रैयो। उण रै चाव रा आसू उण रै चैरै सू इण भात ढळक रैया हा जाणै आकडै रै सूखै पत्ता सू ओस ढळक रैयी है।

सुगनो भैरू अर उण रा साथी हरख-चाव सू नाच रैया हा। अर बै जीवणजी नै बधाइया देय रैया हा। पण पाना सुन बापरयोड़ी भाठै री मूरती दायीं अण्बोल खडी ही। उण री समझ मे कीं नीं आय रैयो हो। उण रै मन मे तो बस एक बात बार-बार आवै ही कै जद बा देखी ही तो मारो रै छोरी ही। ओ छोरो कठै सू आयो ? छोरी रो छोरो किया हुयग्यो ?

पाना इण चिता मे डूब्योडी डाफाचूक हुयोडी आ भी सोचै ही कै कठैई म्हनै धोखो तो नीं हुयग्यो हो ? स्यात म्हैं छोरै नै छोरी समझली ही ! पण नीं नीं म्हारी आख्या धोखो नीं खाय सकै। बा एक लम्बो सिसकारो न्हाख र होठा ई होठा मे बडबडाई 'सावरिया तू म्हारै अर म्हारै घर सागै ओ काई खेल खेल रैयो है? तू म्हानै राघ्योडा नै क्यू राघ रैयो है ?

इण विचाळै हमीदा दादै अर दादी नै बिना वधाइ दिया अर बिना कीं कैया पूठी झूपड़े मे पारो कनै चली गई। जीवणजी आपरी तिवारी मे जावता सुगनै अर

उण रै साथ्या नै कैयो बेटा थे, गाव म जा र म्हारै पातै री बधाई दयो। सुगनो आपरै साथ्या सागै उठै सू चल्यो गयो।

अबै पाना आपरै लूगडै नै ठीक कर झूपडै मे गई। पारो अचेत पडी ही। हमीदा उण नै चेतै मे ल्यावण री चेस्टा कर रैयी ही। पण पारो म चतो बापर ई नीं रैयो हा। पारो री ऐडी दसा देख र पाना भी घबरायगी। बा हमीदा नै आ पूछणो भी भूलगी कै छोरी सू छोरो किया हुयो ?

छोरो गाभा माय लपेट्योडो माचै माथै पड्यो हा। दूजै कानी फट्योडी गूदड्या माय सू टाबर रै रोवणै री आवाज पाना रै काना माय पड़ी। तो बा झट उण गूदड्या नै अळघी कर र देखी तो उण नै ठा पड्यो कै इण छोरै सू पैली हुयोडी छोरी रोय रैयी है। अबै पाना झट समझगी कै पारो रै दो टाबर हुया है जिण नै बा पैली देखी ही जिकी छोरी ही अर देवै रै बापू नै इण छोरी पछै हुयाडै छोरै नै दिखायो हो।

अबै पाना रै माय विचारा री उथळ-पुथळ हुवणनै लागी। पैली तो बा सोच्यो कै जे अबै छोरी नै देवै रो बापू मारै है ता बळो मारो। पछै बा थोडी ताळ ठैर र फेरू सोच्यो कै जिण छोरी री हिमायत सारू म्हैं म्हारी आण मरजाद लाज अर सरम सगळा नै खो र दुनियाभर रो गोधम करयो है जिण नै बचावण खातर म्हैं म्हारी ज्यान तक देवणनै त्यार हुयगी ही उण नै अबै म्हैं किया मारण देवू ? पण इण नै इण दुस्टी रै हाथा सू बचावूली किया ? बा ऐडै ससोपज मे पड्योडी उण छोरी कानी देख रैयी ही। इतरै मे हमीदा बोली 'पानाबाई पारो जाबक ठडी हुवती जाय रैयी है। इण रा हाथ-पग ठडा हुयग्या है। इण री नाड टूटती लागै है।

पाना झट उण छोरी माथै गूदडी न्हाखी अर पारो नै सभाळण मे लागगी। पण पारो तर-तर लोथ हुवती जाय रैयी ही। अर देखता ई देखता पारो री आंख्या रा डोळा भाठै दामी काठा हुयग्या। पाना चाणचकी चीख पडी। उण री चीख सू जाणै झूपडै रो सगळो घास दाझीजग्यो हो। हमीदा पारो नै लूगडे सू ढक दी। पछै बा पाना रै मूढै माथै हाथ राखती थकी कैयो ओ काई करो हो ठकराणी सा ? बावळा हुयग्या काई ? अबार ई सगळो गाव भेळो हुय जावैलो। अर ठाकरसा नै जिण टैम ओ बेरो लागैलो कै पारो रै दो जुड़वा टाबरा माय एक छोरी है तो ठाकर सा सगळै गाव रै सामीं थारी अर म्हारी माटी छेतैला। अर छोरी नै ज्यान सू मार देवैला। अर गाव उण नै मारण नीं देवैला। म्हारा राड रा दिन ऊधा आया जिको म्हैं पारो नै ओ वादो देय दियो कै थारै टाबर नै म्हैं बचावूली। पछै ठकराणी सा आप तो इण छोरी नै ठाकरसा सू बचावण खातर घणो ई गोधम करयो हा।

अर आ छोरी ठाकर सा सू तो बचगी पण अवै ऊपरलै री मेहर नीं हुयी जदी तो थारो इण ससार मे नीं रैयी।' इतरो कैय र हमीदा भी पाना रै सागै-सागै रोवती-रोवती कैयो 'ठकराणी सा अवै आ म्हारी ज्यान री आफत बणगी है। पछै अ्रू ई ठाकरसा रै मन री कुण कैय सकै है कै बै इण छोरी नै वेरो पड्या पछै जीवती छाड दवैला ? पण म्हैं इण छोरी खातर म्हारी ज्यान री बाजी लगा देवूली। हमीदा पाना नै कैयो 'ठकराणीसा आप थोडी ताळ ताईं सबर राखो। आप नै खुदा रो वास्तो है। हुवणआळी बात तो हुयगी है। अबै म्हैं इण छोरी नै लेय र कठैई निकळू हूँ। आप इण छोरै नै पाळण री चेस्टा करया ?

पाना रोवती-रोवती कैयो अरे बैनडी हमीदा आगलै भौ म म्हैं रामजी रै घर रा घणा ई काळा चाब्या हा। घणा ई मोटा पाप करया हा जिण रा फळ आज म्हैं भोग रैयी हूँ। आज ठाकुरजी महाराज म्हारी पुरस्योडी थाळी नै ई ऊधी मारदी। म्हैं नीं जाणै ही कै ओ भगवान इतरो निर्दयी हुवैला। म्हैं नीं जाणै ही कै सावरियै नै इण तिणकलै माथै दया नीं आवैला। अबै इण दोना रो ई बचणो भारी हुयग्यो है। पण बैनडी तू इण छोरी नै लेय र कठै निकळैला अर कठै नीं निकळैला ? जद थारो ई इण दुनिया मे नीं रैयी है तो इण टाबरा रो बचणो घणो ओखो लागै है। पछै जे इण डैण नै बेरो पडग्यो तो ओ पताळ ताईं पूग र ई इण छोरी नै थारै कनै जीवती नीं छोडैलो। म्हारी तो गुवाडी उजडणी ही जिकी उजडगी।' इतरो वैय'र पाना पूठी रोवणनै लागगी।

हमीदा भी पाना रै सागै रोवती-रोवती कैवणनै लागी 'ठकराणीसा म्हैं सोचू हूँ कै इण दुनिया मे म्हारै सू बेसी दुखियारी कुण हुवैला ? जिको म्हारा ऊगती रा तो माईत मरग्या। दूजा बैन-भाई हा नीं। लागती रा काको-काकी म्हनै पाळी। पछै आपरै सिर रो भार समझ र म्हनै बूढै रै लारै कर दीनी। पण खुदा नै तो म्हारै सिर माथै काचै रग रो ओढणियो भी नीं सुवायो अर तीन-चार बरसा माय म्हैं तो रडापो ओढ लियो। अवै आप रै सामी बरसा सू गाव रो गोलीपो करू हूँ अर म्हारो पेट भरू हूँ। कदैई उण जेठूतै रै कानी का कदै उण देवर रै पगोथिया पड र म्हारा दिन ओछा करू हूँ। अबै जाणू हू कै आगै रो बगत तो सुधारू क्यूकै म्हैं थारो नै टाबर बचावण रो वचन देय चुकी हूँ। नीं तो खुदा रै घरै म्हैं थारो नै काईं मूढो दिखावूली अर काईं उथळो देवूली ? ठकराणीसा जिया-तिया इण छोरै नै बचावण री चेस्टा तो आप करो अर इण छोरी नै बचावण री चेस्टा म्है करूली।

पाना मन मे सोच्यो 'हमीदा स्यात ऐडी गैली बाता म्हारो मन बिलमावण

सातर करती हुवला ! क्यूक जे इण छोरी-छोरै रै भाग म जीवणो ई हुवता तो आज पारो । अर आ आपरै सिर नै आपरै गाडा बिचाळै घाल र जोर-जोर सू रोवणनै लागी।

इण बिचाळै हमीदा उण छोरी रै हाड-मास रै सिमकतै लोथडै नै एक गाभै म लपेट्या अर झट झूपडै सू बारै हुयगी। हमीदा टुरणै सू पैली एक पलक पारा री ल्हास कानी देख्यो। पछ आपरी हळकी-मी निजर उण छारै माथै फकी अर साथै-साथै पगा सू ठाकर जीवणजी री कोटडी सू बारै हुयगी।

उण टैम जीवणजी आपरी कोटडी सू बारै निसरती हमीदा नै देखी तो सोच्यो कै दाई स्यात किणी काम सू बारै गई हुवैला।

तीन

झाझरकै री वेळा ही। हमीदा सामीं एक लाबो अर अणजाण गेलो हो। बा बदळ सू टपकी बूद ज्यू आपरो घर छोड र इतरै बडै ससार म आपरै वचन री भोभर मे सिकणै सारू निकळगी। हमीदा उण छोरी री जिन्दगी अर मौत री जेवडी सू बध्योडी चालती-चालती गाव री काकड नै कद पार करगी उण नै इण रो कीं ठा नीं पड्यो। उण मे एक गूग ही। गूग ही आपरो वचन पूरो करणै री। उण री गूग म एक चेतो हो अर उण चेतै मे बा बडी सावचेत ही जिण रै कारण ई बा अपरै नथै साथै पगा सू भागती-सी जाय रैयी ही। बा आ भी नीं जाणै ही कै ओ मारग किण गाव रो है ? अर गाव कित्तरो क अळघो है ? बा तो चालती जाय रैयी ही। चालती जाय रैयी ही ।

अठीनै पना झूपडे में मरो री ल्हास कनै बैठी आपरै गोडा सू जद आपरा सिर उठायो तो उण नै उण झूपडे मे नीं तो हमीदा दीसी अर नीं बा छोरी। पाना रै काळजै म एक हब्बीड़-सो बोल्यो। अर बा पागल दायीं हुयोडी कदेई पारो री ल्हास नै उथळ-पुथळ करै ही तो कदेई बा उण छोरै नै पचेडै ही। छेकड बा हारयड़ी उण छोरै नै आपरी गोदी मे घाल्यो अर एक लाबो सिसकारो न्हाख्यो। छोरै नै आपरी गोदी माय लेवणै सू उण नै आपरै अन्तस माय एक अनूठी त्रिप्ति हुई। उण नै लखायो जाणै उण री पीढिया री साधना पूरी हुई है। पण दूजै ई पळ उण नै अपरै काळजै मे होळी बळती-सी लागी। अर बा भू-भू कर र कूकणनै लागी।

दिन ऊगणै म घड़ी क बाकी ही। कूवै माथै बरो (चड़स) झेलतै बरियो बोल्यो अलाचो रे अलाचो धरती मेल दे रे धनिया। बळदिये धोती खेंर्न। पाणी रो भरयोड़ो चड़स धड़ंद करतो पठ मे पड़यो अर खळ खळ करतो पाणी ऊपरी गूज सू जपी सूदी मच नै छाटा न्हाख र आणंद दिदे हुवै।

चाठ सू पाणी कूवै रै कोठा अर घडोया कानी जावणनै लाग्यो। यरियो चडस नै पूठा ई कूवै म उसेरया सारण सू चडस नै कूवै माय लेग्यती लव धूड म बठ सवती रीस म आयोडी नागण ज्यू जोर-जोर सू भाग रैयी ही। अर कीलियो आपरै बळदा री जोडी नै सारण सू कूवै माथै पूठा लाय रैया हो।

अठीनै गाव रै चौक अर कूवै बिचाळै सङ्य जूनै पीपळ माथै बैठ्या पाख पखेरू चींचाट करणनै लाग्या।

घरा मे पाडिया टोघडिया बोलणनै लाग्या। दूधारू गाया-भैंस्या चाटै अर नीरै सातर ढयावणनै लागी। घरा री लुगाया आप-आपरै धन नै घास बाटो घलणनै जुटगी। कई आप-आपरै हत्या माय त्याणा बाल्टया अर गूण्यि लियोडी गाय-भैस्या नै दूवण री त्यारी मे ऊभी ही तो कई जण्या दूघ रैयी ही। किणी घर सू आटो पीसती चाक्या रो घर-घू घर-घू रो घर्राटो आवणनै लाग्यो तो किणी घर सू बिलोवणा री झरड-झू झरड झू सुणीजणनै लागी।

ठाकुरजी रै मिंदर माय सख-नगारा अर झालर री गूज सागै झझरकै री आरती हुवणनै लागी। अर मिंदर सू थोडै अतरै बण्योडी मस्जिद सू फजर री नमाज री आजान सुणीजणनै लागी। इण भात रोज मुजब सूरज ऊगणै सू पैली ई गाव मे चैळ-पैळ सरू हुयगी।

पणिहारया रा झूमका रा-झूमका कूवै सू पाणी ल्यावणनै कूवै माथै आवणनै लाग्या। अर कई आप-आपरै घडा नै भर र घरा कानी जावणनै लागी। कूवै माथै खडी कई लुगाया आप-आपरा घूघटा उठा र आपस मे कीं फुसफुसाट कर रैयी ही। स्यात् उण माय सू कई तो कैवती ही कै इ याव हुयग्यो। अर कई मोकळमूया कैवती ही कै आछो हुयग्यो । जितरा मूढा उतरी ई बाता हुवणनै लाग रैयी ही।

कूवै सू पाणी पाय र आप आपरै सासरा नै आघी करणआळै लोग-लुगाया टाबरा-टींगरा रै मूढै माथै एक ई चख-चख ही कै गाव में फेरू अन्याय हुयग्यो ।

कूवै री सारण ताई आवतै-जावतै कीलियै अर कूवै री चाठ माथै खडै बारियै रै काना माय आ चख-चख पूगै ही। पण उणा नै आपरी सावचेती सू काम करता थका चिंता ही कै इण कडकतै तावडै माय गाव रै ढोर-डागरा नै पीवणनै पाणी जदेई मिळैला जद कूवै रा कोठा पाणी सू भरीजैला अर पाणी खेळ्या ताई पूगैला। अर बै आपरै काम नै पूरो करणै मे लाग्योडा हा।

चार

अगूण मे सूरज हाथेक ऊचो आयग्यो हो। गाव री गुवाड मे रोज री भात बूढा बडेरा लोग होका नै हुडहुडावता चिलमा नै चूसता अर हाथा रै ढेरिया नै भुवावता भेळा हुवणनै लाग्या। उणा रा चैरा अचरज सू अचराईज्योडा एक-दूजै रै मूढै सामीं ताक रैया हा। उणा रा होठ कीं कैवण नै फडफडावै हा। पण किणी रै ई मूढै सू बाल नीं फूट रैयो हो। उणा रा मूढा भर्योडी बन्दूका दाईं कीं उगळण सारू माय-रा-माय घुट रैया हा। अबै कोई बोलैला अबै कोई बोलैला री ताक मे कई जणा चुपचाप हुयोडा बैठ्या हा तो कई जणा खड्या हा। पण कोई कीं नीं बोल रैयो हो। उठै रो वातावरण पक्योडै काकडियै दाईं कदैई फाट सकै हो। बस ऐडी दसा माय दरकार ही तो किणी रै ई पैल करणै री ही।

भेळा हुयोडै लोगा माय सू कइया रो विचार हो कै आज ताईं ऐडी बात हुई कोनी काईं ? आ तो जीवणजी रै घराणै माय लारली चार-पाच पीढ्या सू हुवती आयी है। अर कई सोच रैया हा कै इतरो बडो अन्याय तो अबकै ई हुयो है। अर कई जणा रो सोचणो हो कै जिण भात आज ताईं पूरो गाव जीवणजी रै घराणै री कुरीत नै जीवती माखी दाईं गिटतो आयो है उणी भाँत ई अबकै गिटतै नै कुण बरजै है ?

इतरै मे ढेरियो कातती-कातती लालजी खखारो कर्यो। उठै बैठ्यै लोगा रा कान खड्या हुयग्या। बै जाण्यो स्यात लालजी कीं कैवैलो। पण लालजी कीं नीं बोल्यो। अर पूठो ई आपरी आगळ्या माथै ढेरियै नै नचावणनै लाग्यो।

थोडी ताळ मे छोगजी आवतो दीग्यो। हाथ मे होको। सिर माथै केसरिया गोळ फेटो। भरवा धोळी दाढी। बळ खायोडी धोळी मूछा। लाल चिरमी-सी मोटी-मोटी आख्या। रौबीलो चैरो। चैरै माथै स्याणप। उण स्याणप मे एक सूझ। सूझ मे एक दीठ। दीठ री गैराई रो ओ मिनख छोगजी आपरै गुण अर स्याणप रै

कारण सगळै चरसळै अर गाव-राव म आछा मानीनै।

छोगनी दस-बारै पावडा रै आँतरै सू गरज्या 'सगळै गाव रो राम निकळग्या का सगळै गाव नै साप सूघग्या ? अठै भेळा हुयाड़ा एक-दूजै रै मूढै कानी काई तावो हो? चालो जीवणजी री कोटडी चाला। आज मौको है। उण दिन तो जीवणजी अर बाबासा जारजी सगळै गाव रा गाव री भरी पचायत मे माजणा ले लियो हो अर कैया हो कै गाव कनै काई सबूत है ? पण आज तो गाव कनै सबूत ई है। अर गाव रो माजणो लिया गाव काई कर सकै है इण रो उथळो भी है। इतरो कैवतो-कैवतो छोगनी उण लागा रै कनै आयग्यो। अर बाल्यो अरे भई-मरयो है तो जोरजी मरयो है। जीवणजी तो अजू ई बारह बरसा रो बैठयो है।

छोगनी री दाकळ सुण र भेळा हुयोड़े लोगा मे चेतो-सो बापरयो। अर उणा नै आप-आपरै पेटा रा आफरा झाड़ण रा जाणै मौका-सा मिलग्यो।

रैंवतो सीपडी अर सीणियै री जेवडी नै बटतो बोल्यो 'छोगजी रो कैवणा साव साचो है। जे आज गाव पापी जीवणजी नै उण रै पाप री सजा नीं भुगताई ता राम रै घरै सगळै गाव रो मूढो काळो हुवैला अर इण रै घराणै रै कारण सगळै गाव रो आगोतर बिगड़ेला।

इतरै म लालजी आपरै ढेरियै नै थाम र बोल्यो अरे भई इण रो काई सबूत है कै लारली रात फेरू ई जीवणजी रै घरै छोरी हुई है ? अर उण नै भी ओ मार काढी है ? ओ पाप तो इण घराणै मे पीढ्या सू हुवतो आयो है। पछै आपा रा बडेरा मरग्या हा काई ? जिको इण पाप नै रोक्या कोनी ? अर अबै ताई आपा सगळा ई मरयोडा हा काई ? देवै रै पछै इण रै घर मे इण रै अर इण रै देवै रै कोई टाबर हुयो कोनी ? पण सगळा ई सबूत नीं हुवण रै कारण कीं नीं कर सक्या। हा अबकै देवै रै मरणै माथै गाव नै बेरो पड्यो हो कै देवै री बीनणी चार-पाच मईना रै पेट सू है। जे रात काई बाल-गोपाळ हुयो है तो कीं सबूत तो ढूढो !

छोगजी होको पीवतो बाल्यो 'लालजी इण घराणै री पापी रीत नै सगळो गाव आछी तरया सू जाणै है। गाव नै ता इण रै सबूत री कीं दरकार कोनी। रैयी लारली रात री बात जिको आज झाझरकै-झाझरकै कूरडियै नायक री लुगाई म्हारै घरै रोज री भात छाछ लेवणनै आयी। बा बतायो कै जीवणजी बाबोसा री कोटडी मे देवै रै बाल-गोपाळ हुयो है अर ठकराणी सा सगळी रात कूकती-कूकती काढी है। अबै सगळा उठै चालो अर बेरा करो कै काई बात है ? स्यात आपा नै कीं सबूत मिल जावै तो आपा इण पापी नै राजआळा नै सूप देवा नीं तो आ कदैइ सगळै गाव रो मूढो काळो करा देवैलो। क्यूकै इतरै दिना तो जिया-तिया सगळो गाव

जीवणजी र घराणै री बात गिटता आया है पण आज री पीढी रा टींगर जीवती माखी नीं गिटैला। अर बै मिनख र अस नै मरतो नीं देखैला। अर जे कोई राजआळा नै चुगली खाय दी तो सगळै गाव नै लेवणै रो देवणो पड जावैला। राजआळा सगलै गाव नै पूछला कै गावआळा इतरै दिना ताईं इण पाप नै क्यू छिपाया राख्यो ? क्यूक पाप नै छिपावणआळा भी ता पापी हुवै है। पछ था-म्हा सगळा रै राजआळा रा तल्लड पडैला अर कइया नै जेळ हुवैली जिकी पाखती मे।

छोगजी री इण बात म सगळा नै सार लाग्यो। अर उणा रै हीयै ढूकगी। सगळा छोगजी रै लारै जीवणजी री कोटडी कानी बहीर हुवणनै त्यार हुयग्या।

इतरै म सुगनो अर भैरू उठै आयग्या। उणा री आग्या अर चैरै सू रात री जाग अर थकावट साफ दरसै ही। पण उणा रै बोलणै मे कीं कडक ही। बै उणा भेळा हुयोडै लागा नै रात री सगळी विगत बतावता थका कैयो कै जीवणजी बाबोसा रै घरै रात देवै रै बेटो हुयो है। आ सुण र कई जणा राजी हुया। कई जणा सोच्यो अबै राज री बात रा कीं डर कोनी। कई जणा फुसफुसाट करी कै ठाकर नै बधाई देवा ता कई जणा बोल्या, उण पापी नै क्यारी बधाई देवणी है ?

इण बिचाळै छोगजी अर लालजी रै चैरा माथै अजू ताई उदासी ही। अर बै गभीर हुयोडा सुगनै अर भैरू री बाता सुण रैया हा।

सुगनो छोगजी सू बोल्यो, 'दादोसा हमीदा दाई बडी हिम्मतआळी लुगाई है। हमीदा ठकराणी अर ठाकर सा रै बिचाले हुवतै गोधम नै आपरी स्याणप सू सान्त कर दियो।

छोगजी पूछ्यो 'तो हमीदा दाई सगळी रात उठै ई ही काई ?

भैरू बिचाळै ई बोल्यो 'हा दादासा बा सगळी रात उठै ई तो ही। बापडी भींत अर लाठी बिचाळै आयोडी ही।'

लालजी बोल्यो 'म्हारो विचार तो है कै पैली हमीदा दाई नै अठै बुला र रात री विगत पूछो। पछै आपा सगळा जीवणजी री कोटडी चाला।

छोगजी एक जणै नै कैयो 'जा रे हमीदा दाई नै बुला र ल्या।

छोगजी रो हुकम सुण र दो जणा हमीदा दाई नै बुलावण खातर जीवणजी री कोटडी कानी गया। थोडी देर मे बै दोनू पूठा आय र बतायो 'दादोसा हमीदा तो आखी रात सू ई ठाकरा री कोटडी मे ई है। पण दादोसा म्हारी ता कोटडी ताईं जावणै री हिम्मत कोनी हुई। क्यूकै जीवणजी बाबोसा डाग लियोडा आपरी तिबारी आगै चुपचाप बैठ्या हा। रावळै माय आस-पडौस री लुगाया जाय रैयी ही। अर माय सू ठकराणी सा अर एक-दा लुगाया रै जोर-जोर सू रोवणै-कूकणै री आवाज

आय रैयी ही। ठकराणी सा रोवती-रोवती पारो-पारो करै ही।

इण दोनू जणा री बात सुण र सगळा एकै सागै बोल्या 'ल्यो चाला। उठै ई हमीदा है अर उठै ई ठाकर जीवणजी। जिको हुयो है उण रो बेरो उठै ई पड जावैलो अर नित री आ चखचख सगळै गाव खातर मिट जावैली।

छोगजी नै लाग्यो स्यात कोई मोटी बात हुई है। अर ऐ टींगर पूरो बेरो कर र नीं आया है। उणा रै मन माय एक उथळ-पुथळ-सी हुवणनै लागी। छोगजी सोच्यो जीवणजी रै घरै रावणो-कूकणो हमीदा रो आखी रात सू उठै ई रैवणो बेटै रै जलम रो थाळ नीं बाजणो जरूर दाल मे कीं काळो है '। छोगजी ऐडै उळझाड मे उळझ्योडो चुपचाप खड्यो हो।

छोगजी नै चुपचाप देख र लालजी कैयो 'तो काई सोच-विचार करो हो छोगजी ?

छोगजी झिझक र बोल्यो 'सोच-विचार क्यारो है ल्यो चालो।

अबै छोगजी अर लालजी उण सगळै लोगा रै आगै-आगै चालणनै लाग्या। उणा रै सागै चालणिया लोग इण भात चाल रैया हा जाणै बै कठै ई गढ जीतणनै जाय रैया हा।

ज्यू ई छोगजी अर लालजी आपरै सागै रै लोगा सागै जीवणजी री कोटडी माय बड्या तो जीवणजी आपरै फळसै कनैआळी तिबारी मे बैठ्यो ई अरडायो अरे छोगजी अरे लालजी आज म्हैं तो जीवतो ई मरग्यो। अरे आज म्हारी ता गुवाडी ई रुळगी। अबै म्हैं काई करू ? म्हैं तो मरग्यो।

जीवणजी री ऐडी दसा देख र छोगजी लालजी अर उणा रै सागै आयोडा लोग एकदम सू सकपकायग्या। बै सोच्यो जिको मिनख आखी ऊमर सूक्योडै ठूठियै दायीं अर अणघड भाठै दायीं कदैई किणी री पीड नै पीड नीं समझी अर कदैई किणी रै मरणै-परणै आयो-गयो कोनी। बो आज गादडियै दायीं कूक रैयो है ? बा आज गिडगिडावै है ? अर बो आज निढाळ हुयोडो दूजा सू ढाढस री भीख माग रैयो है ?

जीवणजी रोवतो-रोवतो कैय रैयो हो अरे थे लोग स्यात म्हनै म्हारै पोतै री बधाई दैवणनै आया हुवोला पण म्हारी तो गुवाडी रै ताळो लागग्यो। म्हारी बीनणी पारो म्हारै देवै री बहू, आ जींवती लट म्हारै बुढापै नै धुखण खातर छोड र आप भगवान रै घर रो गेलो लियो अबै आ जिलफ किया तो पळसी ? अर किया म्हारै घराणै रो नावगो चालसी ? अबै म्हैं काई करू अर काई नीं करू ?

जीवणजी रा रोवणो इण भात लागै हो जाणै घणै बगत सू बद पडी बोदी

मसीन नै चलावण खातर कोई धक्को लगाय रैयो है। अर बा मसीन धक-धक कर चाल अर जाणै पूठी ई बद हुय जावै। इण भांत ई जीवणजी रै माय सू जाणै कोई धक्को लगाय रैयो है। अर बो रोवतो-रोवतो कदेई चुप हुय जावतो तो कदेई रोवणनै लाग जावतो। पण उण री फाट्योडी आख्या रै डोळा सू अर उण रै सूक्योडे चैरे सू साफ दरस हा क उण रा पाप आज उण रै सामीं ग्वड्या है । आज बो दूजा री हमदरदी खातर टाबर दायीं बिलख-बिलख रोय रैयो है।

छोगजी अर लालजी पीड भोग्योडा दूजै री पीडा नै समझणिया स्याणा मिनख हा। बै झट समझग्या कै जीवणजी रै घरै पोतो तो हुयो है। पण इण रे बदै देवै री दीनणी पारो नीं रैयी है। उण सगळा री रीस अर सोच्योडी बाता री झुझळाट ऐडै हादसै नै देख र माटी रै ढिगलै दाई ढहगी। बै मिनख हा अर मिनखपणै सू जीवणजी नै धीरज बधावण लाग्या।

सागै आयोडै लोगा माय सू दो-चार जणा नै लालजी कैयो अरे भई सगळा खड्या काई देखो हो ? जाओ ल्हास नै बेगी ठिकाणैसर पूगावणै रो बन्दोबस्त करो।

पाना आपरै आगणै मे लुगाया बिचाळै बिलख-बिलख रोय रैयी ही। उण रो बिलखणो हाथ काळजो खड्यो करै हो।

उठै भेळा हुयोडै लोगा नै पाना रै अन्तस री पीडा सू निकळती चीख अर दुख भर्योडो करळाप इण भॉत लागै हो जाणै आभो दरक रैयो है अर धरती फाट रैयी है। पाना रोवती-रोवती कैवै ही हे रामजी थाळी पुरस र ऊधी क्यू मारी अरे रामजी तू निरदयी है तू हया-दया बायरो है । उण रो रोवणो थमै ई कोनी हो।

थोडी ताळ मे देखता ई देखता पारो री सीढी लोगा रै कांधा माथै ही। लोग राम नाम सत् कैवता-कैवता समसाण भूमी कानी जाय रैया हा। पारो नै आगभेळी कर दी। पारो नै दाग दे र लोग-बाग गाव रै कूवै माथै सिनान कर्यो अर जीवणजी रै घरै आयग्या।

पॉच

अबै जीवणजी रै घरै बैठक हुवण लागी। इण बैठका माय जीवणजी रा चिडचिडो सुभाव झुन्झलाट बात-बात पर बायेडो करणै री बाण अर अक्खडपणो जाणै साठ हाथ ऊडै कूवै मे जाय पडग्या हा। यो भाठै दायीं सूनो हुयोडो चुपचाप बैठयो रैवतो अर आयोडा लोग-बाग आप-आपरी बाता करता रैवता। गाव रै घरा माय जीवणजी रै घर री ठौड-ठौड चरचा ही। पण हमीदा दाई किण नै ई याद नीं आय रैयी ही।

गावआळा नै जीवणजी सू अर उण रै घर-घराणै सू कदैई कीं हमदरदी कोनी ही। जे थोडो-घणो इण दिना कीं झुकाव हुयो हो तो वो ठकराणी पाना रै कारण हुयो हो। जदी सो गावआळा पारो रै बारियै ताई पाच-दस आदमी जीवणजी री कोटडी मे बैठण सारू मन मे तेवड ली'ही ही अर ओ गाव री मरजादा मुजब हा।

निकमाळै रा दिन हा। एक दिन जीवणजी री कोटडी मे गाव रा मोकळा लोग भेळा हुयग्या। स्यात उणा री आ सोच रैयी हुवैला कै निकमाळै मे गाव री गुवाड मे नीं बैठ'र जीवणजी री कोटडी मे बैठया दो घडी आपस मे हथाया कराला।

उण दिन छोगजी भी जीवणजी री कोटडी रै आगै सू आपरै किणी काम सू जाय रैयो हो। घणै सारै लोगा नै जद उठै देख्या तो छोगजी भी उणा मे जाय र बैठग्यो। छोगजी रै आवणै सू उण दिन री बैठक रो रूप कीं और ई हुयग्यो। बाता-चीता चालणनै लागी। छोगजी सातरै मूड मे हो। वो जीवणजी नै चचेडतो थको बोल्यो 'ठाकरा आज नौवो सूरज ऊग्यो है। अर इण आठ-नौ दिना माय आप अन्न-पाणी रै मूढो नीं लगायो है। आप नींद नै भी नेडी फटकण नीं दे रैया हो ऐडी बाता म्हारै काना ताई पूगी है। जे ऐडी बाता साची है तो अबै म्हा लोगा

रा ओ कवणा ह क आप कीं खावो-पीवो। अवै पारा तो पूठी आवणै सू रयी। क्यूकै उण नीली छतरीआळ रै सामीं किणी रो जार नीं है। पछ आप तो भगवान री जय बालो क आप रो पोता बकरी रै दूध रै फाआ माथे आठ-नौ दिन तो काढ दिया है। अवै रामजी चायो तो उण रो कीं नीं बिगडैला। अर बो जीवैला।

छागानी आपर जीव मे सोच्यो कै तू कैवण न तो एडी बाता इण दुष्ट न कैयदी। पण जिको मिनख गाव री नाक लवण नै घर रै मिनख नै मारणै मे कदैई नीं चूक्यो ऐडै मिनख खातर थारै मूढै सू ऐडा हमदरदी रा बोल क्यू निकळ्या ? छोगजी रै मन माय एक पछतावो खड्यो हुयग्यो।

छोगजी री ऐडी बाता जद जीवणजी सुणी तो स्यात इण दिना माय बो पली बार आपरी राफा नै सिडकाई ही। सवाला सू भरयोडी जीवणजी री आख्या सकै सू भरयोडी उण री दीठ कदैई छोगजी कानी देखै ही तो कदैई उठै बैठयै लोगा नै देखै ही। छोगजी री बात जीवणजी नै काचै सूत रै डोरै दायीं लागी। पण बो आपरै अन्तस मे आ धीरज भी बाधै हो कै स्यात छोगजी रै मूढै भगवान बोल रैयो हुवैला। बो आपरै होठा नै फडफडा र मन ई मन बडबडायो स्यात ओ टींगर जीवैला अर म्हारो वस चालेलो पण थोड़ी ताळ पछै बो आपरो सिर आपरै गोडा बिचाळै घाल र फफकणनै लाग्यो अर फफकतो-फफकतो बोल्यो अरे छोगा तू म्हारो बरोबरियो भाई है। थारै सू काई छानो है ? म्हैं पापी हूँ हत्यारो हूँ म्हैं अभागो अर निकाम जोगो हूँ म्हनै ओ रामजी जितरा दुख देवै उतरा ई थोडा है म्हारी माटी मे कीडा पडसी ओ म्हनै बेरो है। पण अबै आ सिसक्ती जिलफ किया तो जीवैला अर किया म्हारो नावगो चालै ?' जीवणजी भू-भू कर र रोवणनै लाग्यो।

छोगजी सोच्यो जीवणजी जैडो भाठो कीं तो पिघळ्यो है। अर बो जीवणजी नै धीरज बधावता थका कैयो 'ठाकरा, आप रो तो रोवणो है वस अर घराणै खातर। अर सगळै गाव नै पीड है पारो जैडी धीरजआळी सबरआळी अर स्याणी लुगाई री मौत री।'

अबै उठै बैठया लोगा नै छोगजी बतावणनै लाग्यो आज सू दस-पन्द्रै बरसा पैली पारो छक जवानी मे परणीज र इण रै घर माय आई ही। पारो रो बाप मघजी घणै पईसाआळो कोनी हो बो म्हारी तरिया छुटभाया माय सू हो। पण जीवणजी रो घर म्हारै माय टीकाई है। इण खातर मेघजी जिण बेळा देवै नै टीको देवणनै आयो हो तो उण टैम गाव रा घणा लोग उण नै जीवणजी रै घर री रीत अर विगत रै बारै मे आछी तरिया सू बतायो हो। पण मेघजी भी खरो अर सातरो मरद हो। बातडियो अर ठाकरियो आदमी हो। जीभ रो पक्को अर विचारा सू साचो मिनख

हा। उण रो उथळा हा क 'म्हे इण घराण री सगळी विगत जाणू हूँ अर इण बळती भाभर म म्हे म्हारै काळजै रै टुकडे नै इण खातर सिक्यौ सारू देय रैयो हू कै इण र घराणै री ओळ अर रीत सुधर जावै। अर ओ घराणो आपरो ऊजळो मूढा कर र भाईप री जाजम माथै बैठ सक। जे म्हारी डावडकी म्हार घराणै रो असली खून हुया ता वा आपरी ज्यान माथै खेल'र पी र अर सासर री लाज रा सूत भी नीं छीजण देवैली। पछै मेघजी दवै खातर कैया कै 'म्हनै तो ओ टाबर दाय आयग्यो अर इण रो घर-घराणो हाड-खाप रो घणा ई आछो है। छोगजी खखारो कर र आगै कैयो कै 'मेघजी तो आ सोच र पारो नै इण घराणै म देयग्यो अर पारो साचै घराणै रो साचो खून ही निकी आपरी ज्यान माथै खेल र आपरै दुख-दरद रो पीड रो पूरै गाव-राव नै सिसकारो तक भी नीं सुणायो। बा इण दुनिया सू चल वसी अर आज जीवणजी आपा सगळा रै सामीं आपरै पापा री हामळ भरी है। गाव-राव ता इण नै माफ कर देवेला पण भगवान रै घर री तो भगवान ई जाणै।

जीवणजी भींत बण्योडो छोगजी री सगळी बाता सुण रैयो हो। छोगजी आगै बाल्यो 'लुगाई पी रै अर सासरै बिचाळै घुप्तै छाणै री भात हुवै है। जिको नीं तो उण रो खीरो बणै अर नीं उण री राख बणै। क्यूकै लुगाई पी रै सू आपरो मोह नीं ताड सकै। बा आपरै सासरै री मरजाद रै धरम नै निभावण खातर तलवार री तीखी धार माथै चालै अर आपरी पूरी जिदगाणी होम देवै। एडै धरम री धुरी लुगाई जात नै जिका घर-घराणो सतावै उण नै भगवान ई माफ नीं करै। लुगाई जात रै इण धरम नै निभायो ठाकर जीवणजी रै बटै री बीनणी पारो। धिन है उण री मात-जात नै अर धिन है बा जलमी जिकी रात नै।

लोग छोगजी री बाता नै बडै ध्यान सू सुण रैया हा। इतरै म हमीदा दाई रो देवर नेजू आयो। बो उठै बैठ्यै लोगा नै मुजरो कर्यो। पछै नेजू छोगजी सू कैयो 'दादो सा म्हारी भाभी हमीदा आज आठ-दस दिन सू म्हारै घरै नीं आई है। अर बा जिण रात अठै जापो करावण नै आई ही उणी रात सू ई उण रो कीं अतो-पतो नीं है।

इतरो सुणता ई जीवणजी जिको सुन बापरयोडै सासर दायीं बैठ्यो हो छोगजी जिको बाता रा बखाण कर रैयो हो उठै बैठ्या लोग जिका बाता माय डूब्योडा हा सगळा रा कान खड्या हुयग्या।

जीवणजी नै लखायो जाणै तिबारी री छत उण माथै आय र पडगी है अर उण रै भार सू दब्याडो बो तडप रैया है। जाणै उण रो सास घुट रैयो है। लारलै आठ-नौ दिना री भूख सू जीवणजी इतरो कमजोर हुयग्यो हो कै उण मे उठणै री

सरधा भी नीं ही। देखता इ दखता उण रा सास तेज हुयग्यो। उण नै लाग्यो क उण रै सागै धोखो हुयो ह। अर धाखो भी उण री लुगाई पाना अर दायी दोनू मिल'र करयो है। बो मन माय तेवड्या कै अबै उण नै जीवणो है। जीवणो है साच रै सार खातर अर जीवणो है हमीदा दाई रो बेरा करणै खातर ।

नजू री बात सू छागजी नै एक-दो पल खातर झटको-सो लाग्या। बा साच्या कै रसतै-बसतै गाव माय सू एक लुगाई आठ-नौ दिना सू गायब हुयोडी है अर गाव-राव नै कीं ध्यान ई कोनी ? उण नै वडा अचरज हुयो। सोच्यो कै कीं खटको तो हुयो ह।

तिवारी मे बैठया इत्ता लाग हक्का-बक्का-सा हुयाडा कदैई नेजू कानी तो कदैई छोगजी अर जीवणजी कानी देख रैया हा।

छागजी पूछ्यो अरे नेजिया, तू आ काई कैवै है कै थारी भाभी रो कीं अतो-पतो ई कोनी ? अर बावळा वा कठैई आपरै पीरै कानी तो नीं निसरगी है ?

नेजू उथळो दियो 'दादो सा उण रै पीरै री किवाडी तो जदैई ढकीजी ही जद बा आठ-नौ बरसा री ही। अर म्हारो भाई जीयो मरग्या पछै आ तो म्हारी छाती रो भाठो बण र रैयी है। आ बात सगळो गाव-राव आछी तरिया सू जाणै है। अबै नीं जाणै बा कठै निसरगी ? म्हारो तो मूढो काळो करायगी।

छोगजी नै नेजू री बात मे कीं दरद अर कीं ओळभो-सो लाग्यो। छोगजी नेजू नै कैयो 'जे आ बात साची है तो भाया थारो ई मूढो काळो नीं हुयो है समझो तो ओ पूरै गाव रो ई मूढो काळा हुयो है। पण इण बात रो सगळा ई बेरो तो करो कै उण रात गाव म किणी और रै ई टावर हुयो हो काई ?

नेजू बतायो 'ठाकर सा लारलै चार-पाच मईना सू जीवणजी दादो सा रै घरै पैलो जापो हुयो है।

नेजू री बात री उठै बैठया लाग सास भरता थका कैयो कै आ बात साव साची है कै लारलै चार-पाच मईना सू गाव मे किणी रै ई घरै टाबर नीं जलम्यो है।

गाव म किणी रै अठै ई टाबर नीं जलमणै री बात सुण र जीवणजी रै मन माय एक-ठडी सी लीक पडी। क्यूकै जीवणजी सोच्यो स्यात गाव मे उणी रात हुयोडै किणी दूजै रै टाबर सू हमीदा दाई फोर-सार कर र कठै ई भाजगी हुवैला। अबै जीवणजी रो कीं सास जम्यो।

थोडी ताळ रुक र छोगजी कैयो 'पैली जीवणजी री ठुकराणीसा नै तो पूछो स्यात उण नै कीं सीध हुवै ?

तेडो गाव न हा सो सगळा नै भेळो हुवणो भी जरूरी हो।

धीरै-धीरै गाव रा लोग-बाग गाव रै मोटोडै पीपळ नीचै भेला हुवणनै लाग्या। गाव रो ओ बूढो पीपळ अबै तांई आपरी छाया नीचै कितरी ई पचायता रा कितरा ई फैसला सुण चुक्यो है। इण रै जूनै डाळा रै छोडा ओलै लुक्योडी अणगिणत बाता है। ज इणा रै जीभ हुव ता ऐ बाल र बखाण करै। ओ कितर इ आछै-माडै फैसला रो साखी है। इण री छाया नीचै हीरो कोटवाळ दो सातरा-सा माचा ढाळग्यो। पछै एक जणो आयो जिको सखरै चिलमिया रा भरयाडो होका अर तम्बाखू रो गट्टो धरग्यो। थोडी ताळ म छोगजी लालजी अर उणा री ऊमर रा केई जणा पचायत री ठौड कानी आवता दीस्या। अबै उठै भेळा हुयोडै लोगा मे बोलारो बन्द हुयग्यो। छोगजी लालजी अर उणा रै सागै रा लोग सगळा सू रामा-सामा करया पछै उण पीपळ री छाया नीचै ढालयोडै माचा माथै बैठग्या।

गाव रा अधबूढ जवान अर कीं छोरा-छापरा उठै गोळ घेरो बणा र खड्या हा तो कीं बैठ्या हा। उठै असवाडै-पसवाडै रै घरा रै थळकोटा अर बीजी ऊची ठौडा माथै काणा घूघटा काढयोडी लुगाया चारू-मेर खडी ही। इण लुगाया आगै कीं छोटा-छोटा टाबर खड्या हा तो केई आपरी गोदया मे टाबरा नै लियाडी खडी ही। ऐ सगळा पचायत नै सुणणनै अर फैसलै री उडीक मे उतावळा-सा लागै हा। पण सगळा रै माय छोटै-बडै री काण कुरब कायदो अर गाव री मरजाद जाणै कूट-कूट भरयोडी ही। बै सगळा छोगजी अर लालजी कानी देख रैया हा।

लालजी बात नै पौळाई 'देखो भई आज समाकूळ गाव भेळो हुयोडो है। आज री पचायत म न तो कोई फरियादी है अर न कोई चोर। आज री पचायत तो भेळी हुई है सगळै गाव री इज्जत खातर। जे समझो तो इण पचायत सामी आपा सगळा ई ता फरियादी हा अर आपा सगळा ई चार हा। क्यूकै आज गाव री दाई हमीदा नै गाव सू गायब हुई नै इतरा दिन हुयग्या उण रो अजू ताई कोई अता-पतो नीं है। इतरै बडै रसतै-बसतै गाव माय सू एक लुगाई रो गायब हुय जावणा आपा सगळा खातर सोच-विचार री बात है। आपणो एडो अणचेतो आज तो गाव री दाई खातर है काले आपा रै घरा री लुगाया खातर भी तो हुय सकै है ? अरे भइ गाव घर अर गुवाडी री इज्जत लुगाइ हुवै है। मिनख ता खाली रखाळो हुवै है। लालजी आपरी बात मे एक बात और पौळाई कै 'एक बार एक गाव म एक लुगाई आपरै घर माय सिनान करै ही। भाई जोग ऊठ चढयोडै एक बटाऊ रो उठै सू निकळणो हुयो। बटाऊ री चाणचकी निजर उण सिनान करती लुगाई माथै पडी अर उण लुगाई री निजर उण बटाऊ माथै पडी। बस ! बा लुगाई सोच्यो

कै आ ऊठ चढचोडा बटाऊ म्हारी इज्जत नै उघाडी देगली । अब आ आग जा र म्हारी अर म्हारै गाव री इज्जत र बार म नीं जाणै काई-काई बाता करैला ? अवै इण सू ता मरणो आछो है। अर वा जा र गाव रै कूवै मे पडगी। उण दिन सू ई आज ताई किणी गाव रै माय सू कोई बटाऊ ऊठ चढ र नीं जाय सकै है। जद एक लुगाई गाव री अर लुगाइ जात री इज्जत खातर इतरा बडा त्याग कर र एक आछी रीत घाल सकै है तो आपणै गाव री दाई बापडी नीं जाणै क्यू अर किण कारणा सू चाणचकी ई गाव छोड र चली गई का वठै ई गायब हुयगी उण रा वरो करणो सगळै गाव रो धरम है अर सगळै गाव री इज्जत रो सवाल है ।

लालजी थोडी ताळ रुक'र बोल्यो 'जे हमीदा रो देवर नेजू, जीवणजी री कोटडी म छोगजी अर बीजै लोगा नै नीं कैवतो तो नीं जाणै गाव कितरै दिना ताईं इण वात रा ध्यान नीं करतो ?

जेठू नाई बोल्यो 'म्हारी तो गाव री पचायत सामीं आ अरदास है कै हमीदा रै देवर नेजू कानी सू सगळी विगत जे पचायत रै सामीं राखी जावै तो ठीक है।

उठै ई पचायत म नेजू बैठ्यो हा। बो झट खड्यो हुय'र बोल्यो 'जीवणजी बावोसा री ठकराणीसा उण रात म्हारी भाभी हमीदा नै घडी चारैक रात बीत्या पछै लालटैण ले र बुलावणनै आया। म्हारी भाभी उण टैम ई उणा रै सागै वहीर हुयगी ही।

'म्हारो पर पीढ्या सू ई इण गाव रो दाईपो करतो आयो है। अर दाई जापैआळै घर मे रात-विरात रुकती आई है। पछै जीवणजी बावोसा री बीनणी घालती रैयी। म्हैं सोच्यो म्हारी भाभी स्यात उणा रो दुख बटावण अर टाबर री सार-सभाळ सारू कोटडी म ई रुकगी हुवैला अर बा म्हारै घरै नीं आई हुवैला। बीनणीसा रै घल्या रै आठ-नौ दिना पछै म्हैं वेरो कर्‌यो तो म्हनै ठा लाग्यो कै म्हारी भाभी तो उणी रात जीवणजी बावोसा री कोटडी सू चली गई। पण बा अजू ताईं म्हारै घरै कोनी आई।'

अल्लावख्सी तेली बोल्यो 'ठाकर जीवणजी री कोटडी सू हमीदा गायब हुई है। जे ठाकर जीवणजी नै कोटडी सू बुला र पूछयो जावै कै उणा नै इण बारै मे मीं सीध हुवै अर जे वै बता सकै तो गाव री आ चिता मिटै।

छोगजी अर लालजी दोनू बैठ्या हा अर दोनू ई सगळी वाता नै ध्यान सू सुण रैया हा।

इतरै म रघजी रावी नाक म हळवी-सी रीस भर र बोल्यो 'सुणो सा जीवणजी इतरो कितरो क वडो आदमी है ? जिको आज समाकूळ गाव तो भेळो हुयो

अर उणा रै सोग न आछी तरिया सू जाणै है। किणी सू कीं छानो कोनी। अर :
सग्ळै गाव न हमीदा रा तळतळियो लाग रैया है। क्यू SSS ?

उठै बैठ्या चार-पाच आदमी बाल्या 'वात तो साव साची है। अवै जीवणजी नै पचायत म बुलावा अर पूछा कै हमीदा कठै है ?

उणा माय सू एक जणो तो अठै ताईं कैयग्यो कै 'जीवणजी हमीदा नै मार गाड तो नीं दी है ? उणा रै मूढै मिनख रो लोही लाग्योडो है।

आ बात सुण र छागजी चाणचकै खखारो करयो। सगळा चुप हुयग्य छोगजी गभीर हुय र बोल्यो 'देखो मोट्यारो गाव री पचायत मे ऐडी वाता सो नीं देवै। हा आ बात साव साची है अर सगळो गाव जाणै है कै जीवणजी कै आदमी है ? पण पचायत मे बैठ र माडी बात कैवणै सू पचायत री मान-मरज री हाणी हुवै। छोगजी थाडी ताळ रुक र बोल्यो 'जे सगळा री मरजी है जीवणजी नै पचायत मे बुलाया जावै तो उणा नै बुलायल्यो।

लालजी दो जणा नै कैयो 'जावो रे मोट्यारो जीवणजी नै बुलाय ल्याओ लालजी रै कैवणै सागै ई दो जणा जीवणजी री कोटडी कानी टुरग्या।

उण दो मोट्यारा रै जावणै पछै छोगजी मन मे सोच्यो 'जीवणजी बुलावण नै तो बुलावो भेज दियो पण जीवणजी नीं आयो तो ? आज री भ पचायत मे म्हारी बात री तो धूड हुय जासी। क्यूकै जीवणजी लारलै दस-प: बरसा सू गाव री पचायत मे आवणो-जावणो छोड राख्यो है। पछै जीवण बातचीत रो बैडो आदमी है। बोलणै री सुध कोनी। काकी कैवता भाभी कैयीजै है इण खातर गाव री पचायत मे उण नै बुलावणो कदेई आछो नीं समझयो। पण अ ता उण रै घर रो मामलो है। उण रो आवणो जरूरी है। छोगजी एडै विचारा खोयाडो चुपचाप बैठ्यो हाका पीवै हो तो बठै बैठ्यै लोगा मे कीं घुसर-फुसर ह रैयी ही।

पचायत कानी सू भेज्योडा दोनू आदमी, जीवणजी री कोटडी पूग्य जीवणजी नै पचायत मे बुलावण रो कैयो अर उणा नै विगत बताई। जीवणजी उ दोनू नै ऊपर सू नीचै ताईं गौर सू देख्या। पण उणा नै कीं नीं कैयो। झट आप मेलै-कुचेलै अर ठौड-ठौड सू फाट्योडै फैंटै नै आपरै सिर माथै लपेट्यो अर प माय फाट्योडी-सी पगरखी घाली अर हाथ मे लाठी लय र उणा रै सागै-स

पचायत कानी टुरग्यो।

बुलावणै आयोडा दोनू मोट्यार सोच्यो कै जीवणजी स्यात*पचायत मे जावण खातर त्यार बैठ्यो हो अर ओ तेडै नै ई उडीकै हा। पचायत कानी जावतो जीवणजी गेलै मे सोच रैयो हो कै जिण दिन म्हे म्हारी कोटडी मे हमीदा रै गायब हुवणै री बात सुणी ही उणी दिन सू ई म्हारै मन मे गुणतुण हुय रैयी है कै दाळ मे की काळो है। पछै अबै तो म्हनै जीवणो है इण साच रो बेरो करणै खातर। बो आपरै सकळप नै मन ई मन दुसराय रैयो हो। जीवणजी री आख्या सामीं टावर हुयो हो उण दिन री विगत, एक-एक कर र आवणनै लागी। बो माना रै बारै मे सोच्यो जिकी लुगाई म्हारी आख्या रै डोळा सू डरती ही बा भूसी सेरणी दायीं अर बिचरयोडी नागण दायीं म्हारै सामीं फुफकारा करै ही अर तण र सामीं खडी हुयगी ही। उण म उण दिन कोई ओपरी छाया कोनी ही पण उण रै लारै छिप्याडो कोई भेद हो। क्यूकै जद छोरो हुवणै रो ठा पडयो तो बा भाठै री मूरती दायीं खडी-री-खडी रैयगी ही। पछै जीवणजी एक ठडै सिसकारै सागै बडबडायो, 'काई करू बीनणी रो मरणो म्हारै खातर गजब हुयग्यो !

थोडी ताळ मे बै तीनू पचायत म पूग्या। जीवणजी किण सू ई रामा-सामा नीं करया। जठै छोगजी अर दूजा ठावा-चावा लोग बैठ्या हा उठै जाय र बैठग्यो। उण रै मूढै सू रीस टपकै ही।

जीवणजी रै आवणै सू छोगजी मन म राजी हुयो। दूजा उण रै आवणै नै अचरज सू देख रैया हा। लोगा माय चुप्पी बापरयोडी ही।

एक जणो उण चुप्पी नै तोडता थका कैयो 'अबै ठाकर सा आयग्या है बात सरू करो।

इतरै मे जीवणजी बोल्यो अरे भई सगळै गाव नै ठा है कै इण बेळा म्हारो पचायत म आवणै जैडा जोग नीं है। अर आ भी सगळो गाव जाणै है कै लारलै दस-पद्रै बरसा सू देस री आजादी पछै म्हैं पचायत म आवणो-जावणो छोड राख्यो है। पछै आप म्हनै क्यू बुलायो है ?

थोडी ताळ रुक र जीवणजी फेरू बोल्यो 'अबकै अबखाई री घडी मे म्हारी बीनणी रै मरणै माथै पूरै गाव री जिकी म्हनै हमदरदी मिली सायरो मिल्यो, उण नै म्हैं नीं भूलूला। पण उण रै बदळै मे गाव म्हारै सू काई चावै है ?' जीवणजी रै कैवणै मे खासी करडाई ही।

लालजी धीरज सू बोल्यो 'ठाकरा आपरै खातर तो आप भला अर आप री कोटडी भली। पण जिका लोग दूजै गावा मे आवै-जावै है उणा नै जे कोई आ कैय

दवैला कै थारे गाव री दाई भागगी अर थे की नीं कर सक्या ? आ बत सगळ गाव खातर माडी बात है अर लूठो मैणो है। अबै जे आपा उण दाई नै ढूढा तो कठै ढूढा ? उण रो अजू ताई कीं बेरा नीं लाग्यो है। इण बारे मे आप रा काई कैवणा है जिको आप पचायत सामीं नैवो। क्यूकै जिण दिन आपणै देवै रै बेटो हुयो हो उण दिन सू ई दाई आप री कोटडी सू गायब है।

जीवणजी कीं उतावळो-सा हुय र बोल्यो 'लालजी ए सगळी बाता लारलै दिना म्हारी कोटडी मे हुयोडी है। पछै म्है तो दाई नै ज्यान सू मारी कोनी अर न उण नै मोम री माखी बणा'र कठैई चेपी है । भळै म्हनै इण बाबत काई पूछणो है ? गाव खातर माडी बात हुवै का मोटी बात हुवै ! म्हैं काई करू ? जे दाई म्हारी धोती रै पल्लै बाध्योडी हुवती तो उण नै अबै ई था सगळा रै सामीं पटक देवतो ! मोटा-मोट बात आ है कै म्हनै उण रै बारे म कीं सीध कोनी कै बा कठै है ?

फेरू जे गाव नै म्हारे माथै बैम है ता बा म्हारी कोटडी अर म्हारो घर-बार सगळै गाव रै सामी है। जिया चावो बिया आपरो बैम काढल्यो।

जीवणजी आपरै साची रूप मे आगै बोल्यो 'म्हैं गाव री पचायत नै ओ कैवणो चावू हू कै गाव री आ ई पचायत म्हारै जी सा रै बगत भेळी हुय र म्हारै घर-घराणै री पागडी उछाळणी चाई ही। आज फेरू ई म्हारै घर माथै पचायत भेळी हुई है। क्यू ?

'म्है पचास-पिचपन बरसा रो आदमी हूँ। म्हैं धान खाऊ हू! धूड कोनी खाऊ! म्हैं सगळी बाता नै जाणू हू अर समझू हूँ। जद-कद पचायत भेळी हुवै तो म्हारै घर माथै ई भेळी हुवै क्यू ? म्हारो ठेको है काई ? म्हैं दाई रो ध्यान राखू ? म्हनै काई ठा बा कठै न्हाठगी ? का कठैई मरगी ?

'पण आप सगळा कान खोल र एक बात फेरू ध्यान सू सुणलो अबकै ता सावरियो म्हारै धाळा री लाज राख दी अर म्हारे पाता हुयग्या जे इण बार भी म्हारै घरै छोरी हुवती तो म्हैं म्हारै घराणै री रीत सू अर लीक सू नीं टळतो ।

जीवणनी खासा तपग्यो हो !

पचायत मे बैठ्या लोग-बाग जीवणजी री इण भात धरछूट बात सुण र अचरज सू उण रै मूढै सामीं देखणनै लागग्या। उणा री सोच ही कै ओ कैडी माटी रो घड्योडो मिनख है जिको भरी पचायत मे इणनै आ कैवता थोडी-घणी लाज सरम ई कोनी आई कै ओ फेरू ई आपरै घर-घराणै री लीक सू नीं टळतो। ओ मिनख है का मिनख-मारणो जिनावर ?

पण अबकै लालजी जीवणनी सू बेसी रीस मे आयोडो अर लाल ताबै दाई

तप्योड़ै चैरै सू बोल्यो 'ठाकरा अबकै जे आप आपरै घर-घराण री लीक सू नीं टळता तो पूरो गाव भी आ धार-विवार राखी ही क अबकै गाव भी आप सू नीं टळतो। अर आप नै सागी ठिकाणै लेजाय र छाडतो । पछै आप कवो हा कै म्हारो ठेका है काई ? हा ठाकरा दाई रै बारै मे आप रो इज ठेको है अर सगळा सू बसी ठको है। क्यूक दाई आप रै घर सू गायब हुई ह ।

लालजी नै रीस मे आयोडा देख र अबै ताई चुपचाप बैठ्यो छोगजी जाण्यो कै बात कठैई बेसी नीं बध जावै अर जीवणजी जैडो मिनख मूढै सू कीं अचपचोळो नीं बाल जावै। इण खातर छागजी लालजी नै चुप राखता थका धीरज अर ध्यावस सू कैयो 'जीवणजी दाई रो बेरो पाडणो तो सगळै गाव रा ई ठेको है। क्यूकै गाव री आछी-माडी बात जद बीजै गावा ताई पूगै तो गाव रै नाव सू ई वात उछाळीजै। उठै किणी आदमी रै नाव री बात नीं हुवै बल्कि आ कैयीजै कै फलाणै गाव म फलाणी वात आछी हुई है अर फलाणी बात माडी हुई है। आछी बात सू गाव रो नाव हुवै। अर माडी बात सू गाव बदनाम हुवै। पछै आप भी ता गाव रै भेळा ई हो। आप गाव सू अळघा थोडा ई हो।' छोगजी जिण भात टाबर नै समझावणी देवै उण भात उण नै समझायो। अर आगै कैयो 'ठाकरा आप रो ओ कैवणो साव साचो है कै जद भी पचायत भेळी हुई है तो आप रै घर रै बारै मे ई भेळी हुई है। क्यूकै आप रै घर-घराणै री खोडीली अर पापी रीत सू, अबै गाव कठा ताई भरीजग्यो है। उण दिन आप रा जी सा भरी पचायत मे आखै गाव सू सबूत माग्यो हो। जीवणजी सबूत ता गाव चावतो तो उण टैम ई खड्यो कर देवतो पण गाव रो ओ बडपण हो का गाव री आप रै घर-घराणै माथै महर ही कै आप रै पाप माथै पूरो गाव धूड न्हाखतो आयो है। अर आप पूरे गाव नै बोको समझ र अजू ई आपरी खाडीली रीत माथै अड्योडा हो। पण ठाकरा आज रो जुग पैली रो-सो जुग नीं रैयो है। बात नै कीं समझण री चेस्टा करो।

जीवणजी जाड पीसतो बोल्यो 'छोगजी म्हारै खातर तो आज भी वो ई जुग है जिको पैली हो।'

इतरै मे धूडो चमार बोल्यो 'साची कैवो हो ठाकरा ! जिको नीं मानै उण खातर तो पैलाआळो ई जुग है। पण ठाकरा पैली रुपियै री बाजरी अठारह सेर आवती ही अर आजकाळै ?

इण विचाळै ई पन्नो चारण बोल्यो अरे भई जिको नीं मानै बो कोनी मानै ! पछै गाव उण री पूछ बाढ लेसी काई ?

सुरजो कुभार बोल्यो 'गाव मे राम हुवै तो बारठजी आप ता पूछ बाढणै

री बात करो हो गाव रा मूछ बाढ लेवे अर काळो मूढो भठ कर देवै।

ईसर ढाली वाल्यो देरा रा ज वत नै घणी ताणस्यो तो आ बात ता उठै ईज खडी रैसी। क्यूकै ठाकर सा मानणआळा मिनग कोनी। इणा रा बडेरा मान्या कोनी अर ऐ मानै कोनी। पछै क्यू बात रो बतगड बणावो हो ? आज ताईं सगळा गाव इणा री इण बुराई नै जीवती माखी दायी गिटतो आया है। भळै ई धूड न्हासा। अबै इणा नै काई कलमा भराओ हो ? इणा रो आगोतर ऐ जाणै अर इणा रो राम जाणै।

धूडो नायव बोल्यो ईसर दादा इण भात बात मुकाया मुकै कोनी। आन समाकूळ गाव अर पचायत सामीं चोर-ढार दानू मौजूद है। कीं फैसलो हुवणा चाईजै। जीवणजी दादासा रै घर री आ फास सगळै गाव सातर एक सूळ है। इण रो निस्तारो जे आज री पचायत गाव सामीं नीं करयो तो पछै क्या री तो आ पचायत है अर क्या रो ओ गाव है ?

जेठो जाट पचायत सामीं आपरी बात रासता थका कैया देरो सा पचायत तो ठाकर जीवणजी रै घर री बात रो निस्तारा अर निचोडो करणै सारू ईज बैठी है। पण ठाकर जोरावरसिहजी रा बेटा जीवणसिहजी कोनी चावै कै उण पाप अर पापी रीत री सगळै गाव सामीं माफी मागै। पछै अबै तो नीं रैयो बास अर नीं बाजै बासरी। अबै ओ तिणकळो कदै तो बडा हुवैला अर कदै घर-गुवाडी मडसी ? कुण देखी है ? काई ठा बै ई घोडा अर बै ई मैदान रैवैला का उठ किणी ओर ढब बैठैला ?

इतरै मे जीवणजी ताचक र निचाळै इ बाल्या सुणो भई इण पचायत मे जेठै रो ओ मानणो है कै म्हारी गुवाडी काई ठा कद मडसी का नीं मडसी ? जे मडगी तो काई ठा इणी ढब हुसी का दूजै ढब हुवैला। पण ओ म्हारो पोतो म्हारै देवै रो बेटो जे म्हारो असली खून हुयो ता ओ भी आपरै घर-घराणै री रीत माथै ई चालैलो। क्यूकै आज री इण भरी पचायत मे म्हैं ओ कैवणो चावू हूँ कै आज सू म्हारी तीन-चार पीढ्या पैली म्हारै दादा-पडदादा रै एक ई इछैलादी बेटी ही। जिण रो ब्याव घणै ई लाडा-कोडा सू करया हो। आछो धन-दायजो दियो हो। पण उण रै सासरला री भूख रो छेडो ई कोनी हो। उण रा सासरला आयै दिन रुपिया मागता ता म्हारा बडेरा आपरा घर खेत जगा-जमीन बेच र उणा नै दिया कै उणा री बेटी नै दुख नीं हुवै। पण बाई रै सासरला रो खाडो तो भरीजतो ई नीं हो। अर बै म्हारी भूआ दादी नै तिल-तिल कर र मारणनै लाग्या। म्हारै पडदादोसा सू, इण भात आपरै काळजै री कोर नै मरता नीं देखीज्यो। छेकड म्हारा पडदादासा कूवै मे पड र मरग्या। अर मरणै सू पैली आपरै बटै नै कैयो कै

बटा बेटी रो पी रो मा-बाप तणो ई हुव है। थारी मा तो इण दुःत्र सू पली ई मरगी ही अर अबे म्हैं कूवै म पड र मरूला। म्हारै मरया पछ लारै थे भाई हो अर भाई-भाजाई कनै सू बाई रा सासरला कीं नीं मागला। तीजै दिन दादोसा री ल्हास कूव सू निकाळी। उण टैम ई म्हारा दादोसा ओ सकळप करया हा के म्हारै घराणै मे ता बटी नै जलमतै ई मारणो म्हारो धरम हुवैला अर जिका म्हारो असली खून हुवैला बो इण धरम नै निभावैला अर मानैला। इण भात दायजै जैडी कुरीति बडै घरा सू चाल र आज रीची-पीची जात ताईं पसरगी। अर बाडी दाईं कठैई छोरी नै खावै है तो कठैई छोरी रै माईता रै बटको बोढै है। एडी कुरीति सू लारो छुडावणनै म्हारै घर-घराणै मे आ रीत पडी। जिण माथै आज री पचायत म बैठ्या चूडा-चमार खाती नाइ ढोली चारण जाट कुभार सगळा रा सगळा म्हारै घराणै माथै आगळी उठावै है। कदैई इणा रा बडेरा ई इण सू पैली गाव री पचायत म बोल्या हा काईं ? पण कोई काई करै ? बगत ई ऐडो आयग्यो है कै रूई रा फोआ तो डूबणनै लागग्या अर भाठा पाणी मे तिरणनै लागग्या। पण तुलसीदासजी महाराज गला नीं हा जिको आ कयग्या कै प्राण जाय पर वचन न जाई। इण खातर म्हारा तो प्राण जाय सकै है म्हे म्हारै वचना सू नीं फिरा जिका म्ह म्हारै माईता नै देवता आया हा। पछै अजू तो म्हैं अर म्हारा ठकराणी जीवता बैठ्या हा। म्हारै घर री गाडी ता चीला-चीला चालसी । जीवणजी नै बोलता - बोलता झाग आवणनै लागग्या। अर उणा रो सगळो डील धूजणनै लागग्यो।

पण म्हैं अर म्हारी ठकराणी अजू ई जीवा हा री बात सुण र उठै बैठ्यै लागा मे जोर री हसी खिडगी। पण छोगजी जद उण लोगा कानी देख्यो तो सगळा री हसी बद हुयगी।

छोगजी अर लालजी सोच्यो कै आज री पचायत रो मूळ मुद्दो तो हमीदा दाई रो बेरो करणै रो हो। अर उण नै ढूढण रा कोई उपाय सोचणो हा। पण उण माथै तो बात हुई थोडी अर लोग जीवणजी नै फफेड्यो बेसी। आज इण कुजीव नै आ तो ठा लागग्यो हुवैला कै गाव मे सुन्न कोनी बापरयाडी है बल्कि गाव सचेत है सावधान है।

पण जीवणजी भी ऐडी माटी रो घड्याडो लोयो हो कै बो आपरै हठ सू हेठो आवै ई कोनी हा। बो ता उण पत्थर दायीं हो कै जिण नै बरसा ई पाणी म राख र जे तोडै ता माय सू सूखै रो सूखो निकळै।

अबै छोगजी नै भी आ भरोसो हुयग्यो कै नीं तो जीवणजी नै हमीदा रो कीं ठा है अर नीं ओ पचायत सामीं आपरै कुकरमा सारू निवै। पण इण नै दो बोल

तो कवा जिकै सू इण नै आपरी औकात रो तो ठा पड़ै।

छागनी बोल्यो 'ठाकर सा निको मिनख बगत अर पून रै रुख मुजब नीं चालै बा मिनखाजूणी मे सासर समान हुवै है। आज आपणी ठकराई अर राजासाही रो जमानो लदग्यो है। अब आपा सगळी जनता रै भेळा ई हा। आप सगळा नै आप-आपरी वात कैवण रा पूरो हक है। आज जात-पांत रो भेदभाव जतावणिय नै राज जेळ कर देवै। इण खातर किणी नै ई नीचो समझणो नीं तो कदैई पैली आछो हो अर नीं अबै आछा है। पण म्है आ जाणू हूँ कै ऐडी बाता आप रै ढब नीं ढूकै है। क्यूकै निको मिनख आपरै खून नै ई फरक सू दखै बो दूजा नै आपरै बरावर नीं मानै।

जीवणजी बोल्यो 'देख रे छोगा म्हैं अठै थारा उपदेस सुणणनै का थारै कनै सू सूझ लेवणनै नीं आया हू। तू थारी सूझ थारै कनै राख। म्हैं ता म्हारी सूझ अर मरजी सू ई चालस्यू। रैयी बात खून मे फरक री सो म्हारै खून म फरक ता म्है समझू हूँ। म्हैं पूरै गाव नै तो खून मे फरक समझण री बात कोनी कैवू? पछै थारी आ पचायत अर सगळो गाव म्हारै माथै क्यू जोर देवै है? म्हारै एत मागै है काई? म्हैं तो म्हारी मरजी नै अर म्हारै घराणै री लीक रै काम नै आज छोडू नीं काल छोडू।

छोगजी बोल्यो 'ठाकरा आप आपरी वात सू पूठा फिरो कोनी अर अबै गाव आप रो लारो छोडै कोनी। क्यूकै दुनिया म बेटी अर बेटै म कीं फरक कोनी। अर आप रो घराणा बेटी नै परायो धन समझता आया है। पण बो धन बेटै सू घणा प्यारो धन हुवै है। अर ठाकरसा कान खोल र सुणल्यो कै साचै अरथ म माइता रो साचो अर सखरो धन तो बेटी हुवै है। बेटो किण घराणै रो है? आ कोई कोनी पूछै। पण बेटी परणीज र सासरै मे जावता ई उण री नानी-नानी रै बारै मे जाणीजै। अर बा आपरै घराणै रै नाव सू ई ओळखीजै। घराणै रो आछो-माडो नाव बेटी सू हुवै है। इण खातर घराणो बेटै सू नीं है बल्कि बेटी सू है।

छागजी आगै कैयो 'जिकै बेटै नै मा-बाप पाळ-पोस र बडो करै बो परणीज र टाबर-टींगराआळो हुया पछै मा-बाप सू घर-बार जगा-जमीन मागणनै लाग जावै। नीं दिया माईता रै कठा माय डाग दय देवै। अर जिकी बेटी नै दूध री ठौड कढाळणी री खुरचण दही री ठौड छाछ अर लाड-प्यार री ठौड घर रो खोरसो सूपा बा मा-बाप री हारी-बीमारी औडी-अबखाई म माचै कनै खडी सूखै अर उणा री सेवा करै। बो घर रो धन नीं है परायो धन है? अर बेटो घर रा धन है? क्यूकै बेटै सू बस चालण री धारणा आद सू चालती आई है। पण उण

ने अबे आ धारणा तोडणी पडसी। पछै म्है अठ बठै लोगा नै पूछ हू क इणा माय सू कितरा क जणा आपरी धुर मेड सू आपरी पीढ्या रा नाव जाणै है ? जे कोई जाणै है ता बताओ ?

छागजी बोल्यो 'जीवणजी जिण बात री आप अर आपरो घराणो पूछ झेल राखी है बा इण मरद समाज री धींगामस्ती है अर गट्टा ताइ सुन्न बापरचोडी एक मस्ती है। जिको अपणआप सू लुगाई नै हीण मानतो आयो है अर इण बडपण रै कारण कई बडै घराणा मे बेटी नै मारणै रो पाप हुवणनै लागग्यो। जद कै इण माटी माय कई ऐडा लोग भी हुया है जिका बेटी रै जलम नै लिछमी अर दूजी देव्या रा औतार मा या है।

छागजी आपरी बात मे बात कैयी कै टीकू नाव रो एक जाट आपरै पडौसी गाव रै भीयै जाट री छोरी सू आपरै छोरै रो सास कर र जद पूठो आपरै गाव आयो तो उण रै लार-रो-लार भीयो आयग्यो। उण नै आयोडो देख र टीकू उण नै अचरज सू आवण रो कारण पूछ्यो। भीयो बोल्यो वै म्हारै घरआळी रो सोने रो टेवटो गायब हुयग्यो। अर किणी स्याणै नै बूझयो तो टेवटो थारै गाव री दिस मे आयाडा बतायो। भीयो घणो ई सकतो-सक्तो आ बात कैयी ही। पण टीकू स्याणो आदमी हा। अर बात नै झट ताडग्यो कै सगै रो बैम उण माथै ई है। बो बेगो-सो आपरै घर माय गयो। अर आपरी चौधरण नै सगळी विगत बताई। टीकू, आपरै घर रा चार-पाच टेवटा भीयै सामै राखता थका कैयो 'सगा म्हारी भूल सू आप रो टेवटा म्हारै सागै आयग्यो अर म्है म्हारै घर रै टेवटा सागै मिला दियो। अबै आप रो टेवटो किसो है म्हैं नीं पिछाणू हूँ। अर जे आप री पिछाण म भी नीं आवै है ता आप ऐ सगळा टेवटा लेय जावो अर सगीजी नै दिखा र आप आपरा टेवटो राख लिया अर म्हनै म्हारा टेवटा पूगता कर दिया।

भीयो जद उण टेवटा नै ले र आपरै गाव पूठो गयो तो उण री लुगाई टेवटा नै देख र हक्की-बक्की रैयगी अर बोली कै आपा तो सगै री इज्जत माथै हमलो कर दियो। क्यूकै आपणो टेवटो तो आपण घर माय ई लाधग्यो। बा बतायो कै जद बा भैंस दूवण नै बैठी तो उण रै गळै सू टेवटो खुल र जा पड्यो हो अर भैंस उण माथै पोठा कर दियो। जद आपणी छोरी पोठा उठावणनै गई तो उण नै टेवटो लाधग्यो। पछै बा कैयो कै बेगा-सा सगै रै गाव पूठा जावो अर टेवटा उणा नै देय र माफी मागो। अर अबै जे बै आपणी छोरी नीं ली तो पूरै गाव मे इज्जत रा टक्का हुय ज्यासी। बै दोनू ई गैरी चिता मे डूबग्या। पण भीयो हिम्मत कर र पूठो टीकू रै गाव गयो।

टीकू भीयै री आवभगत करी। पण भीयै री छोरी लेवण सू साफ नटग्यो वात पचायत ताई पूगी। गाव रा पच फैसलो टीकू माथै इ छोड दियो। टीकू आप फैसले म कैयो कै म्हैं भीयैं री छोरी तो लेवू कोनी पण म्हैं म्हारी छोरी भीयैं छोरै नै देवूला। टीकू रै इण फैसलै सू लोगा रा कान खड्या हुयग्या। टीकू बाल्यो जिण बेटी नै घर री बहू बणा र ल्यावा हा उण रो लारलो परियो देखणो चाईजै अर म्हारै सू आ भूल हुयगी कै म्हैं भीयैं रै लारै भीयैं री छोरी रो साख म्हारै छा सू कर दियो। क्यूकै जिकी बेटी बहू बण र जावै है बा बेटी घराणै री आण हु है। बा आछै-माडै खून री पिछाण हुवै है। बेटी पी रै अर सासरै नै तारणआळ हुवै है। अर बेटी ई उणा नै डुबावणआळी हुवै है। पछै जे बेटी भलै घरा री अ भलै सस्कारा मे पळ्योडी हुवै तो बा दोनू ठौडा नै धिन-धिन कैवा देवै। नीं तो सासरला कैवै कै नीं जाणै किण कुघराणै री राड आई है। अर बा बेटी ई पी रल री सात पीढ्या ताई भुडाय देवै। म्हनै म्हारै खून माथै अर म्हारै घर रै सस्कार माथै पूरो भरोसो है कै म्हारी छोरी भीयैं री सात पीढ्या ताई ऊजाळ दवैली। अ जे भीयैं री छोरी म्हारै घरै आजावै तो म्हारी सात पीढ्या नै डुबोय देवैली।

छोगजी बोल्यो ओ है बेटी रो जलम। ओ है बेटी रो मान अर ओ है बेट रो जमारो। बा घर रो घरोट बणाय न्हैवै अर बा ईज घर रो घरकालियो बणाय देवै। इण खातर घर-घराणो साचै अरथा म तो बेटी सू है। बेटै सू कोनी।

उठै बैठ्या लोग छोगजी री बाता नै बडै गौर सू सुण रैया हा अर बाग-बाग हुय रैया हा। थळकोटा माथै ऊभी लुगाया नै तो छोगजी री बाता अमरित दार्य लागै ही। केई लोग सोच रैया हा कै छोगजी स्यात आज आपरै आपै मे नीं है। पण छोगजी आपरै आपै मे हो अर पूरी तरिया सावचेत हो।

जीवणजी सूखे ठूठ दायीं भाठो वण्योडो-सो बैठ्यो हो। उण रै मूढै रै भाव सू लागै हो कै इण मिनख माथै इण बाता रो कीं असर कोनी। बो कदैई आपर पेचो तो कदैई आपरै कनै पडी आपरी डाग नै टटोळै हो।

छोगजी पूरी पचायत नै कैयो 'सुणो भई जिको मिनख मिनखा रा कैवणे नीं मानै अर बगत री पून रै तेवर नै नीं समझै ऐडै मिनख ।

इतरै मे एक जणो बिचाळै ई बोल्यो 'धिरकार है ऐडै मिनख रै जमारै नै अर धूड है उण रै माजनै नै जिको समझाया नीं समझै अर मनाया नीं मानै।

पण जीवणजी रै कीं भावैं कोनी ही।

छागजी थोडी ताळ रुक र बोल्यो 'तो भई पचायत आपरो फैसलो देवो।

सगळा एकै साथै बोल्या कै 'ठाकरा फैसलो आप ई सुणावो।

छोगजी आपरो फैसलो सुणावणै सू पैली एक बार सगळी पचायत कानी देख्यो। पछै जीवणजी कानी देख र भळै जीवणजी नै पूछ्यो कै 'ठाकरा आज री पचायत सामीं आप कीं कैवणो चावा हो तो बोलो ।

जीवणजी बोल्यो 'ठाकर छोगजी फैसला देवणो तो थारै हाथ म है। पण मानणो तो म्हारी मरजी है। म्हनै तो इण पचायत सामीं कीं कोनी कैवणो। थे थारी मरजी आवै ज्यू फैसलो करो कुण पकडै है थारी जीभ ? अर कुण रोकै है थानै ?

जीवणजी रै इण लूखै उथळै रै सागै लोगा मे रोळा हुवणनै लाग्यो। लोग-बाग कैय रैया हा कै ओ तो मिनख कोनी। ओ तो ठूठ है। अर अजू ई उठै ई खड्यो है।

छोगजी सगळा नै चुप रासता थका आपरो फैसलो सुणायो 'सुणो भई आज री पचायत रो ओ फैसलो है कै आज सू ठाकर जीवणजी रो इण गाव रै सागै हाको-पाणी बद है। अर आज सू ई सगळै गाव रो ओ धरम है कै सगळा इ आप-आपरै ढग सू हमीदा दाई रो बेरो पाडै। बा कठैई मरगी है का जीवै है ? जे बा कठैई जीवै है तो उण नै पूठी लावणो आपणो धरम है। इण सू गाव री स्यान है। गाव रो मान है।

छोगजी गावआळा सू पचायत रै फैसलै री हामळ भरावण खातर पूछ्यो 'काई सगळी पचायत अर भेळा हुयोडै गाव रै लोग-लुगाया नै ओ फैसलो मजूर है ?

सगळा मिनख बोल्या 'हा, मजूर है ! हा मजूर है ।

पचायत पूरी हुई। लोग-बाग फैसलै नै सरावता अर जीवणजी नै बिसरावता आप-आपरै घरा कानी जावणनै लाग्या।

जीवणजी भी उठै सू उठ्यो अर आपरी काटडी कानी जावतो जोर-जोर सू कैय रैयो हो कै 'छोगजी म्हारै बराबरियो सरीक है। अर सरीक बादै सू म्हनै नीचो दिखावणो चावै है। अर म्हारो होको-पाणी बद कर्यो है। पण म्हैं किसै दिन गाव रै सागै होको-पाणी राख्यो हो ? पछै ओ गाव तो आजादी मिल्या पछै चूडै-चमारा रै भेळो सेळ-भेळ हुय र कोडी-तरिया भिसळीजग्यो। म्हैं तो म्हारो होको-पाणी उण दिन ई अळघो कर लियो हो जिण दिन देस नै आजादी मिळी ही। पछै थे कुण हो म्हारो होको-पाणी बद करणिया ? बळ्यो डोळ अर बळ्यो माझनो । जीवणजी कैवतो-कैवतो साथै-साथै पगा सू आपरी काटडी कानी जाय रैयो हो।

जीवणजी आपरी कोटड़ी पूग र आपरी ठकराणी कनै गयो। उठै जा र छोगजी रै बारै मे दो-चार भली-भूडी बाता कैवतो थको पाना सू गोधम करणनै लाग्यो।

पाना आपरै पातै नै रियोडी बकरी र दूध रै पोवा सू उण रै मूढ म दूध
ा देय रयी ही। जीवणजी रीस म आय र पाना सू पूछ्या "राड उण दाइ नै तू कठै
काट दी ? आज म्हारै दुसमणा न म्हारै माथै कादा उछाळण रो मोको मिलग्यो पण
म्हारै गाभा माथै दाग कोनी लाग। क्यूक म्है म्हारै घराणै री मरजाद अर मान नै
आज तोडू नीं काल ताडू। पण रासमरवणी राड तन बिल जरूर ठा है कै वा राड
दाई कठै गायब हुयाडी है ? इतरा कैय र जीवणजी पाना नै मारण खातर डाग
उठा ली। पण डाग ठैरगी। अर उण रा दानू हाथ ऊपर रा ऊपर रैयग्या। क्यूकै
उण रै मन माय चाणचकी आ बात आई कै न तू इण नै मार नाखसी तो इण छोरै
नै कुण पाळसी ? अर ओ पाळया बिना किया बडो हुसी अर किया थारो नावगा अर
किया थारो बस चालसी ? अर बो डागडी नै एकै कानी फक र सास म हापी योड़ो
बारयो "देवै री मा तनै उण राड रो बेरो है कै बा कठै है ? अर तनै आ बात तो
म्हनै बतावणी पडसी। नीं तो म्है थारो लारो नीं छोडूला।

पाना साधारण-सी मुद्रा म बोली "देवै रा बापू, क्यू गाभा फाडो हो ? अर
क्यू अणूता ई रीस करो हो ? म्है ठाकुरजी री सौगन खाय र कैवू कै म्हनै हमीदा
दाई रो कीं अता-पता कोनी कै बा राड कठैई मरगी का बा कठैई जीवै है। हा राड
जावती-जावती म्हारै जीव नै तसियो करगी।

सात

उठीनै उण छोरी नै लियोडी हमीदा रा बुरा हाल बाका धियाडा। भूखी तिस्सी। हारी-मादी। सागीडी थक्योडी। कठैइ गेलै कठैई उजड कठैई रिदरोही कठैई ढाणी तो कठैई गाव। चालती जाय रैयी ही। या कठैई उण छोरी नै दूध माग र दूध रै फोवा सू पेटै ही तो कठैइ बा आपरै सूखै हाचळ सू उण नै रवडावै ही। बा खुद कठैई बासी खीचडो का छाछ-राबडी अर सूखा टुकडा माग र आपरी काया नै भाडो देवै ही। तो कठैई बा कोरै पाणी सू ई वगत काटै ही। इण भात बा एक गाव सू दूजो गाव लापती जाय रैयी ही। उण नै डर हो कै जीवणजी उण रो कठैई लारो तो नीं कर रैयी है ?

हमीदा री मनस्या ही कै बा इण छोरी नै ऐडै घर-घराणै मे सूपै जठै छोरी री पावना हुवै। का बा खुद इण नै किणी रै सायरै सू पाळ पोस र बडी करै। इण सारू बा अपरै पीरा-फकीरा सू मन्नत मागती उण छोरी नै गळै रै हारियै दाई छाती सू चिपकायोडी अर हथेळी रै छालै दायी सभाळयोडी बैवती जाय रैयी ही। जद उण री हिम्मत उण नै आगै चलणै सू उत्तर दे दियो उण रो डील आपरा ऊठा हाथ दिया या चलती-चालती अबै पडू-अबै पडू री हालत मे आयगी ता टेकड बा डूबतै सूरज मुह अधारै सू पैली एक गाव मे पूगी।

गाव रो नाव नैणाऊ हो। बो गाव गाव जिस्सा गाव हो। उण गाव रो ठाकर सुल्तानसिह बरस पैंताळीस पचासेक रै अड़ै-गड़ै हो। ठाकर स्याणो समझदार अर पूर्जतो मिनख हो। ठाकर रो ठिकाणो भी मानीजतै ठिकाणा मायं सू हो।

ठाकर सुल्तानसिह यतडियो अर घर-घराणै सू ऊतडियो हो। मुलक री आजादी सू पैली बारह गावा रो पटायत हो। पण अजन भी ठाकर री ठकराई अर इज्जत मे कीं फरक नीं आयो हो। ठाकर धधो-धन्धा मेकळै धन-धीणै रो धणी हो। घणेई सैरो-सुखी हा। बडै बडै सहरा ताई उण री पूच ही।

ठाकर री पलडी लुगाई विना औलाद रै वगी ई मरगी ही। दूसरी लुगाई सू दस-बारह वरसा रा गोपाळसिह नाव रो एक लड़को है जिको आपरै मामोसा बनेसिह कनै मुम्बई म पढै हा। बनेसिह नै ठाकर आपरै कनै सू पइसा द र मुम्बई म धधा कराय राख्यो हो।

ठाकर री इण दूजी लुगाई रै अबकै आठ-दस दिना पैली उण छोरै गोपाळसिह रै पछै छोरी हुई ही। जिकी जलम रै दो-तीन दिना पछै पूरी हुयगी ही। ठकराणी रा हाचळ दूध सू फाटै हा। पीड सू उण रा बहाल हा। वा सगळी-सगळी रात रोवती काढै ही तो उण रो दिन घणो ई ओखो निकळै हो। गाव रै ढग सू उण री दवा-दारू हुय रैयो हा। पण ठकराणी नै एक पल भी चैन नीं हो।

रोज री भात ठाकर आपरी तिवारी री चौकी माथै ढाळचोडै ढालियै माथै बैठ्यो होको हुडहुडावै हो। बो आपरी ठकराणी रै बारै म चिंता मे डूब्योडो सोच रैयो हो कै बुढापै मे आ कठैई धोखो नीं देय जावै। पाछली ऊमर है। दस-बारै बरसा रो एक ई तो छोरो है जिको नीं जाणै कद बडो हुवैला अर कद उण री गुवाडी वधैला ? ठाकर एक ठडो सिसकारो न्हाख्यो। पण थोडी ताळ म ठाकर मन नै काठो कर र तय कर्‌यो कै अबै ठकराणी रो स्हैर री किणी बडी अस्पताळ म इलाज कराणो ईज पडसी। नीं तो पार नीं पडैली। अर वो पूठो ई आपरो होको हुडहुडावणनै लाग्यो।

अठीनै हमीदा गाव म बडता ई एक जणै नै पूछ्यो अरे भाई थारै गाव म ठाकरा री कोटडी कठीनै है ?

बो उथळो दियो 'बाई, अठै ठाकरा री कोटडी तो कोनी। पण ठाकरा रो गढ बो सामनै दीसै जिको है।

हमीदा कर हिम्मत अर ठाकर सुल्तानसिह रै गढ माय बडगी। सामै ठाकर चौकी माथै बैठ्यो होको पीवै हो।

मैला-कुचैला गाभा। पगा माय फाट्योडी पगरखी। बुरा हाल हुयोडी बरस पैतीस-चाळीस री एक अणजाण लुगाई नै आपरै गढ री पिरोळ मे बडती देखी तो ठाकर आपरो होको एकै कानी राख र उण नै गौर सू देखणनै लाग्यो। इतरै मे हमीदा उण चौकी ताईं पूगगी जठै ठाकर बैठ्यो हो।

ठाकर कडक र पूछ्यो 'कुण है भई तू ?

हमीदा ठाकर नै पडूत्तर दिया बिना ई पगोथिया चढी अर ठाकर रै ढोलियै कनै पूगगी। बा झुक र ठाकर नै मुजरो कर्‌यो।

अरे भाई तू कुण के ? ठाकर री बोली म करडापणो हो।

हमीदा ठाकर नै भळै झुक र मुजरो कस्यो अर गिडगिडा र बोली 'ठाकर साब आभै पटकी है। धरती झलै कोनी। इण ससार मे म्हारै सू बेसी कोई दुखियारी कोनी। आप री सरण म आई हूँ।

ठाकर अचरज सू पूछ्यो अर भइ तू है कुण ? तू अठै ई क्यू आई है ? गाव तो घणो ई बडो है। तनै अठै कोई भेजी है काइ ? पछै थारै दुखा रो म्हार कनै काई इलाज है ? जे भूखी-तिस्सी है ता की खावण-पीजण नै लेयलै अर बन्ना थारै मारग लाग ।'

ठाकर रो टक्को-सो उत्तर सुण र हमीदा निरास कोनी हुइ। बा ठाकर रै ढोलियै सू थोडी अळघी हुय र सामीं बैठगी। अर आपरै मेलै-कुचलै गाभा माय लपेटयोडी उण छोरी नै आपरी पलाथी माथै गेर'र रोवती-रोवती कैयो 'ठाकरसा ऊपर तो सावरियो है अर नीचै आप हा। आप म्हारी वात तो सुणो। स्यात आप नै म्हारै माथै दया आय ज्यावै। अर बा आपरा दोनू हाथ जोडणनै लागगी।

ठाकर हमीदा री बात नै अणसुणी कर र उण री पलाथी मे पड्यै टाबर कानी दखणनै लाग्यो। दस-बारह दिना री जिलफ आपरै हाथ रै अगूठै नै मूढै मे लियोडी कदैई आख भींचै ही तो कदैई आख खोलै ही। फूठरो नाक-नक्सो गोरो रग अर सूक्याडै-सै उण टाबर नै देख र ठाकर मन माय सोच्यो कै ओ काई फैताळ है ? ठाकर ओ भी नीं जाणै हो कै इण लुगाई री पालथी म पड्यो टाबर छोरी है का छोरो ?

ठाकर टाबर कानी सू ध्यान हटा र हमीदा नै भळै पूछ्यो अरे भई तू कुण है? तू काई जात री है ? किसै गाव री है ? थारो काई नाव है ? थारै कनै किण रो टाबर है ? तू कठै जावै है अर तू अठै क्यू आई है ? ठाकर हमीदा सामीं छाजलो-एक सवाल नाख दिया।

हमीदा हाथ जोड-जोड र ठाकर नै उथळो देवणनै लागी 'ठाकर सा म्हैं मिनख जात री हूँ। ओ सगळो मुलक म्हारा गाव है। लुगाई म्हारी जात है। अर लुगाई म्हारो नाव है। ओ टाबर मिनख रो बीज है। म्हैं अठै क्यू आई अर म्हैं कठै जाय रैयी हूँ ? ठाकर सा ओ तो म्हनै ई कीं वैरा कोनी । इतरो कैय र हमीदा डुसक्या भर-भर अन्तस सू रोवणनै लागी। उण रै हिवडै रो समदर उमड पड्यो। उण रै अन्तस री पीडा उण नै माय सू झकझोर न्हाखी ही। उण री आख्या सू चौसरा आसू गिर रैया हा। अबै उण रै मूढै सू एक आखर भी नीं बोलीज रैयो हो।

हमीदा रा ऐड़ा उथळा सुण र ठाकर जाण्यो कै लुगाई तो खासी भुगतभोगी

ह। पछै इण रै रावण म कोइ अणकैयी पीडा ह। इण रै आसूआ म कोई साची कहाणी ह। ठाकर नै लखाया कै इण री डुसक्या मे अन्तस रो दरद है।

ठाकर हमीदा री ऐडी दसा देख र पिघळग्यो। उण रो हीया पसीजग्यो।

ठाकर धीरज सू हमीदा नै ध्यावस बधावतो थको कैयो 'देख बावळी म्हैं भी मिनख हू। म्हन लाग ह क तू वींरै री मारधाडी ह। पण म्हनै थारै बारै म बात तो पूरी बताणी पडसी। हा अबार तू घणी थकी-हारी है अर भूखी-तिसी हुवैला। इण खातर तू पैली चाय-पाणी करलै। पछ धीरज सू सगळी बात बता देयी। फैर म्हारै सू जिकी मदद हुवैली म्है करूला। इतरो कैय र ठाकर आपरै दरोगै धनजी नै हैलो मार्‍यो। धनजी झट आयग्यो।

ठाकर धनजी नै कैयो धनजी इण नै चाय-पाणी करा दयी। इण नै रोटी-बाटी खुवाय र रातवासै सारू इण रै सोवणै रो सरजाम अठै ई कर देयी।

ठाकर मन म जाण्यो बापडी लुगाई जात है। पछै कनै छोटो टाबर है। आ इण अन्धेरी रात म कठै जासी अर कठै नीं जासी ? दिनूगै इण नै इण री विगत पूछ र कीं मदद कर देवूला।

ठाकर री इण ध्यावस सू हमीदा रो जीव जम्यो। उण नै लाग्यो उण रै घाव माथै जाणै मल्लम री ठडी पाटी बाध दी है। बा धनजी रै लारै-लारै रावळै कानी टुरगी। धनजी उण नै रावळै रै माय बडणै सू पैली अण्योडी साळ री चौकी माथै बिठाय दी। उण नै उठै ई चाय-पाणी कराय दी। थोडी ताळ मे धनजी हमीदा खातर उणी साळ म सावण-उठण रो सरजाम कर दियो। रात रो अधारो पसरणनै लाग्यो।

हमीदा चाय-पाणी कर्‍या पछै धनजी नै धीरै सू कैयो 'बीरा' 'किणी छोटी-सी कटोरी मे थाडो-सी क दूध दिराओ नी। इण जिलफ नै पावणो है। इतरो कैय र हमीदा उण छोरी रै ऊपर सू गाभो अळघो करयो।

छोरी नै देखता ई एक पल खातर धनजी रो माथो घूमणनै लागग्यो। अर नीं जाणै उण पल माय उण रै माथै माय कितरी ई बाता रो जाळ बिछग्यो। पण बा आपरै आपै माथै काबू राखतो थको उण छोरी खातर दूध लायो अर पूठो ई आपरै काम-धन्धै माय लागग्यो।

हमीदा नै जीमा-जूठा र मोडी रात नै ताजा चिलमिया रो होको भर र धनजी ठाकर खातर लेयग्यो। ठाकर होको पीवणनै लाग्यो। धनजी ठाकर रा पग दबावणनै लाग्यो। ठाकर नै इण बळा होको पावणो अर उण रै पगा नै दबावणै रो काम धनजी रोज करै है अर दोनू जणा मोडी रात ताई हथाई करता रैवै।

हेका पीउता-पींवता ठाकर धनजी नै पूछ्यो धनजी उण लुगाई न रोटी जीमा दी ? अर उण र रातवास रो सरजाम कर दिया ?

धनजी उथलो दियो 'हा सा उण न जीमा-जूठा र रावळ री आगली साळ म सावण ग्यातर सरजाम कर दियो है।' इतरो कय र धनजी चुप हुयग्यो। पछ बो ठाकर कानी इण आसा सू देखणन लाग्यो स्यात ठाकरसा इण लुगाइ र बाबत आग कीं कैवैला ?

धनजी ठाकर रो वफादार दरागो हो अर मूढ लागतो हा। ठाकर उण न कदेई-कदेई आपरै मन री बात भी कैय देवतो हो।

आज ठाकर सोच्यो कै धनजी घर रो माणस है। स्याणो है। स्यात ओ उण लुगाइ नै कीं पूछताछ करी हुवला ? इण सोच रै कारण उण दोनुवा माय कीं ताळ चुप्पी बापरयोडी रैयी।

पण धनजी नै कीं नीं बालता देख'र ठाकर खुद ई उण चुप्पी नै ताडता थका पूछ्यो धनजी इण लुगाई रै बारे मे कीं ठा करयो काइ कै आ कुण-काईं ह ? अर इणरै कनै आ टाबर किया है ?

धनजी बोल्यो 'ठाकर सा म्है तो सोच्यो कै आप उण री पूरी जाण-पीण करया पछै ईन इण नै रावळै मे रातवासै रा हुकम दिया हुवोला। इण खातर म्है तो उण सू कीं नीं पूछ्या। हा इण री गोदया म दस-बारै दिना री छोरी है जिकी इण री तो कोनी दीखै। क्यूकै उण खातर म्है दूध देय र आयो हूँ।

छोरी रो सुणता इ ठाकर का ता सूत्यो हो अर बो झट बैठ्यो हुयग्यो। ठाकर धनजी नै अचरज सू पूछ्यो के 'उण री गोदया मे छारी है ? अर बा उण री कोनी ?

धनजी बोल्यो 'हा सा छारी है। अर म्हनै इण भात लाग्यो जाणै आ छोरी इण री तो कानी। आ बात धनजी पूरे भरोसै सागै कैय र ठाकर री पीठ नै दबावणनै लागग्यो।

अबै ठाकर हाकै नै जोर-जार सू हुडहुडावता सोचणनै लाग्यो। जे ठकराणी इण छोरी नै आपरै हाचळा सू लगाय लेवै तो ठकराणी सौरी हुय ज्यासी। अर ज ठकराणी इण नै अगेज लेसी ता पाळ-पोस र बडी कर लेवाला। पछै म्हारै घराणै मे ता लारली चार-पाच पीढ्या सू छोरी हुयोडी कानी इण नै ई घर म जलम्योडी मान र मनस्या पूरी कर लेवाला। ठाकर री आख्या माय तारा चमचमावणनै लाग्या।

पण थोडी ताळ पछै ठाकर साच्या कै 'ठाकर सुल्तानसिंह तू बावळा

हुयग्यो काई ? थारै मन माय एडा विचार आया तो क्यू आया ? तू जाणै है काई व आ कुण है ? अर थारै मान्या सू थारो कुटम्ब-कबीलो सगा-साई गिनायत अर आखा जमानो आ किया मान लेसी कै आ छोरी थारै घर मे जलम्योडी है ? पछै साच नै लुकोय र किता क दिन लुकासी ? एक दिन जद सगळा न ठा पड ज्यासी ता थारै ठिकाणै री साख धूड मे मिल ज्यासी अर लोग-बाग थारै माथै आगळ्या उठासी। अर जे तू सगळा नै भेळा कर र उणा रै सामीं आ बात राखै कै तू इण छोरी नै थारी छोरी मानै है। इण नै पाळैलो-पोसैला अर ब्या-थ्या र आघी करैलो। पण क्यू ? थारै ऐडी काई अडी पडी है कै तू उडतो तीर लेवै ?

ठाकर ऐडै विचारा मे कीं ताळ तो घुळतो रैयो पछै वो इण विचारा सू बारै निकळ र होको पीवणनै लागग्यो। पण ठाकर इण विचारा सू बारै नीं निकळ सक्या। मूढै आगै इतरी बडी रात ही। अर ठाकर रै मन माय रैय-रैय र ऐडा विचार वार-बार आय रैया हा 'कै भाई- गिनायत कुटम्ब- कबीला अर गाव- राव जे म्हारी बात मान लेवै अर बै सगळा इण नै म्हारी छोरी मान र म्हारो सागो भी देय देवै। पण काई ठा आ छोरी किण रो खून है ? काई जात री है ? किसै घर-घराणै सू है ? कुण इण रा मा-बाप है ? काई ठा किणी विधवा रो कळक है का किणी कुआरी रो पाप है ? पछै म्हैं किणी रो कळक का पाप म्हारै गळै मे क्यू बाधू ? फेर काई ठा आ लुगाइ टाबरा नै उठावणआळी कोई लुगाई हैं अर स्हैरा माय जाय र बेचणै रो धधो करती हुवै ? अर स्यात आ किणी रो टाबर उठाय लाई हुवै ? पछै काल-कदास कोई लारै ब्हार लेय र आय ज्यावै ता पूरै गाव म अर आमै-पासै रै चाखळै मे म्हारी बडी भारी बदनामी हुवैला अर लोग धूड घालैला पाखती म। पछै ठकराणी खुद बडै घर री बेटी है। बा म्हारी वात मान र इण छोरी नै किया हेजैला अर किया अगेजैला ?

ठाकर ऐडै विचारा माय उळ योडो अर गतो भूल्योडै बटाऊ दायीं आपरै ढोलियै माथै उथळ-पुथळ हुवणनै लाग्यो। ठाकर नै इतरै गैरै सोच मे डूब्योडो देख र धनजी मोच्यो कै अबै ठाकर सा नै मुजरो कर र अठै सू जावणै मे ई सार है। अर धनजी मुजरो कर र उठै सू चल्यो गयो।

ठाकर ढोलियै माथै उथळ-पुथळ हुवतो फेरू सोच्यो कै उण टैम इण लुगाई रै रोवणै म तो दरद हो अर इण लुगाई मे कीं सच्चाइ लागी ही। पण दिनूगै इण सू पूछताछ कर'र इण नै कीं दय र अठै सू बहीर कर देस्या। ठाकर अपणै आप सू उळझ्याडो अर ससोपज म पड्योडो कीं ताळ तो जागतो रैयो पछै नीं जाणै कद उण री आख लागी अर बो सोयग्यो।

अठीनै ठाकर एडी दसा मे हो तो उठीनै ठकराणी आपरे हाचळा री पीड सू बुरी तरिया तडफे ही। एकै कानी रावळै री आगली साळ मे हमीदा उण छोरी नै लियोडी आपरा पल्ला विछा-बिछा'र खुदा सू दुआ मागै ही 'या खुदा ओ ठाकर जे म्हनै आपरै घर रो खोरसो करणै सारू राख लेवै तो म्हैं इण री छाया मे इण छारी नै पाच-छव मईना री कर र आगै कठैई बीजी ठौड म्हारो मुह-माथो लेय र निकळ जाऊली।

जोग-सजोग सू उण रात ठकराणी नै सभाळणआळी लुगाई नीं आई ही। अर ठकराणी पीड सू कुरळा रेयी ही। हमीदा नै ठकराणी रो रोवणो अर कुरळावणो साफ सुणीजे हो। बा झट ताडगी कै ओ कळाप तो जापैआळी लुगाई रो ई हुय सकै है। पण इण रो बेरो किया करीजे ? ओ सवाल हमीदा रै सामीं हो।

थोडी ताळ मे धनजी उण साळ रै आगै सू निकळ्यो जिकी मे हमीदा बैठी ही। धनजी स्यात ठकराणी खातर दवा-दारू रो सरजाम कर रैयो हो। हमीदा धीरै सू धनजी नै पूछ्यो 'बीरा रावळै मे किण रै ई कोई तकलीफ है काई ?

धनजी थोडो-सो रक्यो अर विगत बतावतो थको कैयो 'ठकराणी सा रै बाई सा हुया हा अर पूठा हुयग्या। अबै उणा नै हाचळा री तक्लीफ है । धनजी पूठो ई खाथै-खाथै पगा सू आपरै काम मे लागग्यो।

धनजी सू विगत सुण र हमीदा रै पगा माय घूघरा-सा बधग्या अर हमीदा उण छिणा माय नीं जाणै कितरा ई सुपना सजोयगी। पण उण री धनजी सू उण टैम कीं कैवण री हिम्मत नीं हुई।

थोडी ताळ मे जद धनजी फेरू उण साळ रै आगै सू निकळ्यो तो इण बार हमीदा उण नै रोक र बस इतरो-सो निमठाई सागै कैयो 'बीरा जे ठकराणी-सा रो हुकम हुवै तो म्हैं उणा नै देख र कीं दवा-दारू करू जिकै सू उणा री आ रात सौरी निकळ जावै। म्हे थोडो-घणो दाईपै रो काम जाणू हूँ।

धनजी नै ठकराणी सा सू अणकूत हेत हो। धनजी अर ठकराणी ऊमर मे बराबर-सा हा। पण ठकराणी धनजी नै कदैई आपरो चाकर नीं सम यो। बा उण नै बेटै दायी राखती ही। अर धनजी भी नीयत रो साफ-सुथरो मिनख हो। बो ठकराणी नै मा सू बेसी आदर देवतो हो। धनजी री भी आ सोच ही कै जे ठकराणी सा इण छोरी नै आपरै हाचळा सू लगाय लेवै तो उण रो पीड सू छुटकारो हुय जावै। पण उण म छोटै मूढै बडी बात करणै री हिम्मत कोनी ही। बो हमीदा रै दाई हुवणै री बात सुण र सीधो ठकराणी सा कनै गयो अर बोल्यो 'मा सा आज आपणै गढ माय एक अणजाण लुगाई दस-बारै दिना री छोरी नै लियोडी आई है

अर ठाकर सा रै हुकम सू उण नै रातबासो दियो है। उण रो रावळै री आगली साळ माय सोवणै-उठणै रो सरजाम करयो है। बा थोडो-घणो दाइयै रो काम जाणै है। जे आप रो हुकम हुवै तो बा आप नै देख र कीं दवा-दारू कर देवै जिण सू आप री रात सौरी निकळ जावै।

दरद सू कुरळावती ठकराणी धनजी री आधी बात सुणी अर आधी अणसुणी मे इतरो-सो कैयो 'जे बा दाईपै रो काम जाणै है तो उण नै माय भेज दै।' ठकराणी री उण टैम मरतो काई नीं करतो पैडी हालत हुयोडी ही।

हमीदा उण छोरी नै लियोडी धनजी रै सागै ठकराणी री साळ म बडी। हमीदा ठकराणी नै मुजरो करयो। अर उण छोरी नै एकै कानी जमीन माथै सुवाण दी।

ठकराणी हमीदा नै देखी अधेड ऊमर री डील मे थक्योडी। मैला-कुचैला गाभा पैरयोडी अर बीखै री मारयोडी-सी कीं ढग री लुगाई लागी। ठकराणी नै लाग्यो कै ओ कोई छळावो तो कोनी।

हमीदा ठकराणी नै देखी तो नाक-नक्स सू अर रग सू असली रजपूती रूप। पण उण रग-रूप नै हाचळा रो दरद जाणै मठोठी देय रैयो हो। उणी हालत मे ठकराणी हमीदा नै पूछ्यो 'बाई काई नाव है आप रा ? आप किण साख मे हो ? किसो गाव है आप रो ? अर आप दाईपै रो काम जाणो हो काई ?

अबै हमीदा रै सामीं ठकराणी रा ऐडा सवाल डूगर दाईं खड्या हुयग्या। जिण नै लाधणो हमीदा खातर दौरो ई नीं हो बल्कि घणी अबखाई रो काम हो। बा सोच्यो जिण बेळा ठाकर सा ऐडा सवाल करया हा तद उणा सू तो म्हैं रोय-धोय र लारो छुडाय लियो। पण अबै ठकराणी तो खुद लुगाई जात है। इण सू म्हैं किया तो लारो छुडाऊ अर इण नै काई उथळो देवू ? जे इणा नै साफ-साफ साची बात बतादी तो ऐ म्हारी बात माथै किया भरोसो करैला ? अर जे इणा नै झूठ कैवूली तो साव रो बेरो पड्या पछै नीं जाणै म्हारै माय काई करैला ? हमीदा ऊकत सू काम लियो। बा ठकराणी रै सगळै ई सवाला नै टाळ र बोली 'ठकराणी सा म्हैं थोडो-घणो दाई रो काम जाणू हूँ। जे आप रो हुकम हुवै तो आप रा हाचळ हळका करणै सारू कीं उपाय करू। आप म्हनै म्हैं कैवू जिकी चीजा मगवादयो।' हमीदा चीजा रा नाव गिणावणनै लागी। इण बिचाळै ठकराणी री निजर सामीं सूती छोरी माथै गई।

छोरी फूठरी-फरी गोरी-निछोर नाक-नक्स री सातरी। ठकराणी नै लाग्यो जाणै आ बा ई छोरी है जिण नै म्हैं अबार-अबार जलम दियो हो। ठकराणी

आपरी आख्या उण छोरी माय गाड दी। छोरी फ्या फ्या कर र रोय रैयी ही। न्तर मे ठकराणी रै हाचळा म इतरै जोर सू पैनो आयो कै उण री काँचळी री टूक्या माय सू दूध री सीका चालणनै लागी। अबै ठकराणी आपरै आपै माथै काबू नीं राख सकी अर हमीदा नै पूछयो 'बाई ओ टाबर किण रो है ? अर आ आप रै कनै किया है ?

हमीदा बोली 'बाई सा इण नै माटी माय सू लेय'र आई हूँ। अर आ माटी री एक सिसकती लोथ है। जे इण नै आप जीवणदान देय देवो तो आप रो सावरियो भलो करसी अर दुनिया म आप री बाता चालसी। पछै बा रुक र आगै कैयो 'बाई सा स्यात ठाकुरजी महाराज इण लोथ नै आप री छतरछाया मे पळण खातर बणाई है तो काई ठा ? अर काई ठा सावरियो जे इणी खातर म्हनै आप रै चरणा माय भेजी है ? कुण जाणै ओ जोग-सजोग क्यू हुयो है ? म्हैं तो कीं नीं जाणू सा ! म्हैं तो कीं नीं जाणू ।' अर हमीदा सिसक्या भर-भर रोवणनै लागी।

उठीनै ठकराणी सा नै भळै पैनो आयो अर इण बार भी दूध री सीका सू उण री काचळी री टूक्या झरणनै लागगी। अबै नीं जाणै ठकराणी रै हिवडै मे उण छोरी खातर एक अणकैयो हेत बापरयो अर बा हमीदा नै बोली 'बाई इण छोरी नै म्हनै देवो।' हमीदा उण छोरी नै ठकराणी रै हाथा माय देवण सू पैली एक बार ऐडी निजर सू देख्यो जाणै इण छोरी माथै सावरियै री असीम क्रिपा हुयगी हुवै अर हमीदा रो अन्तस उण नै कैय रैयो हुवै कै हमीदा बेगी कर कठैई ओ पळ टळ नीं जावै। अर हमीदा उण छोरी नै आपरै धूजतै हाथा सू ठकराणी रै हाथा माय देय दी।

ठकराणी उण छोरी नै आपरै हाचळा सू लगायली। छोरी हाचळा नै चसड चसड चूयणनै लागी अर ठकराणी रो जीव सौरो हुवणनै लागग्यो। ठकराणी नै लाग्यो कै उण नै नूई जिन्दगाणी मिलगी है।

आठ

हाथळा री अबखाई सू ठकराणी अबै तई री राता जागती काढी ही अर दिन तड़फ-तड़फ बिताया हा। इण रात बा छोरी ठकराणी रै हाथळा सू लाग्योड़ी चूप रैयी ही जिण सू ठकराणी नै बेथाग आराम मिल रैयो हो। इण सू नीं जाणै ठकराणी री आख्या बंद लागी अर उण नै गैरी नींद आयगी। अर बा छोरी हाथळा सू लाग्योडी ठकराणी रै सागै ई सूती पड़ी रैयी।

ठकराणी रै ढोलियै कनै बैठी हमीदा कदैई उण छोरी कानी तो कदैई ठकराणी कानी देखती थकी मालिक रा सुकर मनावै ही तो कदैई बा चाणचकी अणहूणी चिंता म सुमड-सी जावै ही। बा ठैर-ठैर सोचै ही कै दिनूगै ठाकर का ठकराणी तनै आपरै रावळै सू धक्का मार र काढ तो नीं देवैला ? क्यूकै तू एक अजाण रूंन नै अर बो ई छोरी री जात नै एक बडै घर री लुगाई रो दूध चूधा दियो है। राड तनै मारैला अर थारै माय एडी करैला कै कुत्ता ई खीर नीं खावैला। अर बा थर-थर कापणनै लागगी ही।

हमीदा पछतावै री झळ माय झुळसीजती अर चिंता री भोभर माय सिकती सोच रैयी ही कै जीवड़ा म्हनै तो इण घर मे बडता ई साची-साची बात बता देवणी चाईजै ही। म्हैं म्हारै बारै मे अर इण छोरी रै बारै मे इण लोगा नै की नीं बता र बडो भारी जुलम करयो है। जे इण रै घराणै म भी छोरी नै हुवता ई मारण री रीत हुइ तो ओ ठाकर भी आ ई कैवैला कै तू इण छोरी नै म्हारी ठुकराणी रा दूध क्यू चूघायो ? म्है तो इण छोरी नै जीवती नीं छोडूला। तू इण छोरी नै ठकराणी रै चूघाय र आछो काम नीं करयो है। काई ठा ठकराणी रै हुयोडी छोरी आपै ई मरी है का उण नै हुवता ई ओ ठाकर मार दी है ? कुण जाणै ? विचारा री एडी उधेड़बुण रै माय उळ्योडी हमीदा आपरै फाटयोड़ै ओढणै रो पल्लो पसार-पसार मालिक सू अरदास करै ही कै हे मालिक इण औडी री बेळा मे तू म्हारी मदद करी।

हमीदा इण विचाळै उण छोरी नै ठकराणी र आगै सू उठावणै री साची। पण उण री हिम्मत नीं हुई। पछै बा थोडी ताळ रुक र सोच्या के आ छारी ता स्यात दिनूग ताईं मर ज्यासी। क्यूकै आ जलम्या पछै लुगाई रा दूध इतरै दिना सू पैली बार पीयो है। स्यात इण रो जीवणो दौरो है। पछै बा एक ठडो सा मिसकारा हास र बडबडाई 'का तो आ आपै ई मर ज्यासी का इण नै ओ ठाकर मार हा'नसी अर पछै म्हैं म्हारो मुह माथा लय र पूठी म्हारै ठौड ठिकाणै लागसू। पण नींवडा तनै उठै कुण जीवती रैवण दसी ? एडी सोच री भट्टी माय बा मक्की रै सिट्टै दाईं सिक रैयी ही।

पण मारणआळै सू जीवावणआळो बडो हुवै है। पछै विधाता री बात नै तो विधाता ई जाणै मिनख तो उण रै बारै मे कारी अटकळा ई लगा सकै है का आपरी बुद्धि रै मुजब सोच सकै है।

जद हमीदा इण विचारा माय उळ योडी ही ता नींद म सूती ठकराणी एक भयनक सपनो देख रैयी ही कै भूडै चैरै रो डरावणै डोळ रो वेडोळै डील रा एक बूढो गूमट गाव रै एक एक घर माय सू छोरया नै काढै है अर आपरै हाथ मे लियोडै गडासै सू उणा नै बिना हया दया रै बाढै है। छोरया री मावा धाड मर मार बुरी तरिया सू कूक रैयी है। सगळै गाव म कुरळाटो माच्योडो है। घर घर म च्यारुमेर खून ई खून लिड रैयो हो। मरद आप आपरै घरा माय लुक्योडा बैठया है। कोई उण रो सामनो नीं कर रैयो है। बा खूनी मिनख आपरै हाथ मे ग्याडो लियोडा ठकराणी री साळ मे बड्यो अर बडता ई गरज्यो कै म्हैं ता इण छारी नै ईज दूढ रैयो हो। अर बो आपरै खून सू भरयोडे हाथा सू ठकराणी रै सागै सूती छोरी नै बाढण सारू उठावणनै लाग्यो तो ठकराणी झिझक र एक जार री चिरळाटी सागै हवड र ऊठी अर उण छारी नै आपरी छाती सू चिपकावती थकै एक चिरळाटी मारी अर कैयो "नीं नीं आ म्हारी छोरी है आ म्हारी छारी है म्हैं इण नै नीं देवूली म्हैं इण नै नीं देवूली। नीं नीं आ म्हारी" ठकराणी परसेवै सू बुरी तरिया भीजगी ही। उण री छाती सास सू फूल रैयी ही। बा अपरी फाटयोडी आख्या सू हमीदा कानी टुकर टुकर देख रैयी ही। उण रै मूढै सू वी नीं वोलीज रैयो हो। बा अपरी छती सू चिपकायोडी छोरी नै बरबर दा रैयी ही।

हमीदा झट समझगी स्यात ठकराणी नै कोई डरावणो सपनो आयो हुवैला। वा ठकराणी नै ध्यावस बधावती थकी कैयो 'काई बात है बाई सा ? ल्याओ इण छोरी नै म्हनै देयद्यो। अर बा उण छोरी नै ठकराणी सू लेवण लागी।

ठकराणी उण नै मना करती बोली 'नीं नीं आ म्हारी छोरी है। म्हैं इण नै किण नै ई नीं देवूली। नीं नीं देवूली। अबै ठकराणी उण छोरी नै पूठी आपरै हाचळा सू लगायली।

नौ

ठकराणी री ऐडी पुख्तगी रै सागै छोरी नै अपणावण री बात सू हमीदा नै एक अणकैयो सुख लखायो। पण इण अणकैयै सुख रै मायनै हमीदा एक अणकैयी कप-कपी सू भळै कापणनै लागी। अर बा आपरै मायलै डर सू डरू-फरू-सी हुयोडी कदैई ठकराणी कानी तो कदैई उण छोरी कानी देखणनै लागी।

ठकराणी आपरी सागी हालत मे आयगी ही। बा उण छोरी नै चूचावती-चूचावती सोच्यो कै म्हनै ऐडो सुपनो क्यू आयो ? पछै इण छोरी कानी म्हारो तर-तर झुकाव अर पल-पल हुवतो हेत कठैई म्हारै खातर मूघो तो नीं पडसी ? अर म्हारी काया मे आ छोरी उळझती क्यू जाय रैयी है ? म्है तो इण रै बारै मे कीं नीं जाणू हूँ। काई ठा ओ किणी रो पाप है का ओ म्हारै सू कोई पुण्य रो काम हुय रैयो है ? फर बा एक लम्बो सास लेय'र बोली हे भगवान तू ओ काई रास रचावणो चावै है ?

पछै ठकराणी अपणैआप सू कैयो कै 'हाचळा रै दुख सू लुगाया मरै थोडी ई है जिको तू इण छोरी नै थारै हाचळा सू लगाली ? फेर जे ठाकरसा नै ठा लाग्यो कै आ छोरी रातभर म्हारै हाचळा सू लाग्योडी म्हारो दूध चूघ्यो है तो नीं जाणै ठाकरसा म्हारै माय काई करसी ? बा उण छोरी नै आपरै हाचळा सू अलघी करणनै लागी। पण उण नै रातआळो सुपना याद आयग्यो अर बा उण छोरी नै आपरी छाती सू चिपायली।

ऐडै सोच-विचार अर ससोपज मे पूरी रात बीतगी अर दिन ऊगग्यो।

दिनूगै धनजी ठकराणी खातर चाय लेय र आयो। ठकराणी री गोदया माय उण छोरी नै देखी। उण रै पगा रै जाणै घूघरा बधग्या। हमीदा भारी आस्था सू उण रै कनै बैठी ही। धनजी आपरी इण अणजाण खुसी मे खाथै-खाथै पगा सू घर रै बीजा कामा नै वेगो-बेगो करणनै लाग्यो अर आपरै हाथा रै काम नै निपटा दियो।

पछै धनजी एक हाथ मे चाय री गिलास अर दूजै हाथ मे ताजा चिलमिया रा होका लेय र ठाकरसा री बैठक मे पूग्यो अर उणा नै चाय देय र हाका कनै राख दिया।

ठाकर चाय पीवता-पीवतो धनजी नै पूछ्या धनजी ठकराणी सा री रात नै तबियत किया रैयी ?

'मा सा रो रात घणो ई जीव-सौरा रैयो। अबै वै बिलकुळ ठीक दीसै है। क्यूकै जिकी लुगाई नै आप कालै रातबासो दिया हो बा लुगाई दाईपै रो काम भी जाणै है अर बा आखी रात मा सा री देखभाळ करै ही।

'तो बा लुगाई रावळै रै माय ताई पूगगी ? ठाकर त्यौरया चढा र अचरज सू पूछ्यो 'ता आपणै गाव री दाई कठै मरगी ? बा रात क्यू कोनी आई ? अर आपणी दोनू माणसा कठै है ?

अबै धनजी सकतो अर डरतो-सो बोल्यो 'सा आपणी दोनू माणसा माय सू, धूडीबाई रो तो बाप मरग्यो उण नै गई नै तो आज पाच-छव दिन हुवणनै आया है। अर अबै बा बारह दिन पूरा हुया पछै ई स्यात आवैला। अर चावली रै बाल-गोपाळ हुवणआळा है सो उण नै तो आप खुद ई छुट्टी फरमाई ही सा।

ठाकर अबकै हळकी-सी रीस सू पूछ्यो 'तो गैला ठकराणी सा नै कुण सभाळै है ?

धनजी ठाकर रा तेवर देख र अबकै की बेसी डरतो-डरतो बोल्यो 'सा मा सा कनै दिन मे आसै-पासै री एक-दो लुगाया आवै है अर बै आपस म हथाया करै अर उणा नै सभाळ भी लेवै है। घर रो ऊपर रो काम सगळो म्हैं सभाळ राख्यो है सा। अबै आ लुगाई आयगी। जिकी आपणै गाव री दाई नीं आवैली उण टैम ताई मा सा री सार-सभाळ कर लेसी। आ बापडी दुखा री मार्योडी लागै है।

ठाकर कडक र बोल्यो 'बापडी रा कुण कैयोडा आ कुण है ? तनै ठा है काई ? बावळा कठैई रो ! अरे आपा नै अजू ताई तो ओ ठा ई कोनी कै आ कुण है ? अर आपा इण नै ठेठ रावळै माय ई लेयग्या ? पछै इण कनै टाबर न्यारो है। इण रो भी बेरो कोनी कै ओ किण रो है ? अर आ कठै सू ल्याई है ? जे काल-क्दास नै कोई फैताळ खड्यो हुयग्यो तो ?

ठाकर री बात पूरी हुई कानी ही इण बिचाळै ई धनजी बोल्यो 'तो सा उण छोरी नै तो मा सा आपरी गोदी । धनजी कैवतो-कैवतो इण भात रुकग्यो जाणै बोलतै-बालतै रेडियै री बिजळी चली गई हुवै।

'तो ठकराणी सा उण छोरी नै आपरी गोद्या मे लेय राखी ही ? तू आ इ ता कैवणो चावे हो नीं ?' ठाकर होका हुडहुडावता एक सूकी हसी हास्यो।

फर ठाकर धनजी ने कैयो धनजी तू मायनै जाय र ठकराणी सा नै कैय दै कै ठाकर सा रावळै मे आय रैया हे अर हा उण लुगाई नै भी उठै ईज राख्या।'

अबै धनजी रै मन माय बडो भारी पछतावो खड्या हुयग्यो। उण नै लखायो कै भरयोडी बदूक सू जिण भात गाळी निकळै उणी भात उण रै मूढै सू बात तो निकळगी। पण अबै इण रा निसाणो कुण हुवैला ? पण उण नै ठाकर सा रै हुक्म मुजब ठकराणी सा नै कैवणो जरूरी हुयग्यो। अर बा रावळै मे जाय र ठकराणी सा नै कैयो 'मा सा ठाकर सा माय पधार रया है।

ठकराणी धनजी रै कैवणै रै ढग सू अर मूढै रै भावा सू झट ताडगी कै धनजी रै मूढै सू कीं बात इण छोरी रै बाबत ठाकरसा रै सामीं निकळगी हुवैला अर ठाकरसा इणी खातर ई रावळै माय पधार रैया है। नीं तो सवा मईनै सू पैली कोई मरद जच्चा री जचगी कनै नीं आवै ।

हमीदा आ बात सुण र कापणनै लागगी। पण ठकराणी सा उण छारी नै आपरी गोदी म लियोडी बैठी रैयी।

आ जग जाणीजती बात है कै दूजी बार परणीज्योडो मरद कितरो ई सूरमो का सवळ क्यू नीं हुवै पण बा आपरी दूजबर लुगाई सामीं का तो कायर हुवैलो का निमळो हुवैलो। पछै ठाकर सुल्तानसिह तो बुढापे मे आपरी ऊमर सू घणी छोटी ऊमर री लुगाई परणीज्योडो हो। सो ठाकर नै ठकराणी सू मोकळो हेत हो। अर ठकराणी री बात नै टाळण रो उण म दम नीं हो। बिया दोनुवा माय मोकळो प्यार हो अर एक-दूजै री बात मानता हा।

अबै ठाकर हाथ मे होको लियोडो मन म राजी हुयोडा ऊपरलै मन सू रीस म आयोडो रावळै मे बड्यो। बडतै ई जोर सू खखारा कर्यो। पछै जच्चा री साळ आगै जाय र खड्यो हुयग्यो। जच्चा री साळ रै बारणै आगै बढिया कपडै रो पडदो लाग्योडो हो।

ठाकर बारै खड्यो-खड्यो पूछ्यो अबै आप री तबियत किया है ?

ठकराणी उथलो दियो 'लारला दिन तो घणा ई औखा अर अबखाई रा दिन हा। राता रावती काटी ही अर दिन-दिन तडपती ही। अबै रात सू कीं जीव-सौरो है। आ आयाडी बटाऊ म्हारै खातर देवी रै रूप मे आई है। म्हनै ऐडो लखावै है कै आ म्हनै नूई जिदगाणी दी है।

ठाकर समझग्यो कै ठकराणी इण छोरी नै अंगेज ली है। अर बो मन माय राजी हुया। अठीनै हमीदा रो मन खुसी सू फूल्या नीं समावै हो। उण रै चैरै री आभा देखण जोग ही। पण हमीदा आपरी खुसी नै छिपायोड़ी चुपचाप बैठी ही। तो उठी नै ठाकर आपरी खुसी माथै काबू राखता थका ठकराणी नै पूछ्यो 'तो आ आयोडी लुगाई दाईपै रो काम जाण है काई ? पण इण रै कनै तो दस-पन्द्रै दिना री एक जिलफ भी है नी ! बा कठै है ?

ठकराणी गंभीर हुय'र उथळो दियां 'ठाकर सा बा लडकी म्हारी गोदया माय है। अर म्हैं रातभर इण नै म्हारै हाचळा सू दूध दियो है। इण सू म्हारो जीव-सौरो तो हुयो ई है सागै-सागै इण बच्ची नै भी प्राण मिल्या है। पछै म्हनै ऐड़ा लाग्यो कै म्हैं बच्ची नै खोय र बच्ची पाई है। अर भगवान जाणै बच्ची नै म्हारै सू लेय र म्हनै बच्ची पूठी दी है ।'

ठकराणी रै ऐडै उथळै सू ठाकर मन म राजी हुवतो थको ऊपरलै मन सू हळकी सी रीस भर र कैयो ओ काई करयो ठकराणी सा आप ? इण छोरी नै आप आपरो दूध देय दियो ? ओ तो आप भौत माडो काम करयो । जठै ताई इण बच्ची नै आप गोदया माय लियोडा हो बठै ताई तो ठीक है। पण एक अणजाण खून नै आप आपरै हाचळा सू लगाय र दूध देवण री कोई समझदारी नीं करी है ।

ठकराणी अबकै कीं करड़ाई सू, पण संजीदा हुय र बोली 'ठाकर सा आ किणी रो ई खून हुवै पण मिनख जात रो खून है। पछै आ किणी जात री अर किणी ठौड री हुवो इण नै म्हारै कनै भगवान भेजी है। अर म्हैं ली है। आज सू आ म्हारी बेटी है। आ म्हनै जिन्दगाणी दी है अर बदळै मे म्हैं इण नै जिन्दगाणी दयूली आगै सावरियै रै हाथ है।

ठाकर कैयो 'ठकराणी सा आप ऐडो पक्को विचार करणै सू पैली ओ तो सोच्यो हुवैलो कै आपा नै आपणै घराणै नै सगळो गाव-राव भाई-गिनायत अर सगळो चौखळो काई कैवैला ? किण दीठ सू देखैला ? अर आपणै बारै मे काई-काई बाता बणावैला ? क्यूकै म्हारै पडदादा अभयसिहजी रो ओ ठिकाणो पूजीजतै ठिकाणा माय सू है। इण री लाखीणी साख है। इण रो दूर-दूर ताई नाव है। कठैई ओ सगळो मिटियामेट तो नीं हुय ज्यावैलो ? इण खातर आप नै इण बच्ची रै बारै मे कीं जाणणो तो जरूरी हो कै आ है कुण ?'

ऐडी बाता सू हमीदा नै जद उठै रो वातावरण गंभीर हुवतो लाग्यो तो बा झट साळ रै बारणै आगै लाग्योडै पडदे नै अळघो कर र ठाकर नै मुजरो करता

थका कीं कैवणनै लागी। पण इण बिचाळै ई ठाकर उण नै पूछ्यो 'हा भई अबै तू थारै बारै मे सगळी बात बता नीं तो थारो अठै सू जावणो औखो कर दयूला। ठाकर रै कैवणै मे खासी करडाई ही।

अबै हमीदा हाथ जोड र ठाकर सा नै बतावणनै लागी 'ठाकर सा म्हारो नाव हमीदा है। म्हे जात री मुसळमान हूँ। पछै ठाकर सा दुनिया मे लुगाई री कीं जात नीं हुवै। लुगाई री जात तो लुगाई हुवै। हमीदा उण छोरी रै बाप-दादै अर नाना-नानी रो नाव अर गाव बतावता थका कैयो 'ठाकर सा म्हारै कनै ओ टाबर घराणै रै राजपूत रो खून है। इण रो नानाणो-दादाणो दोनू ई ऊजळै पख रा धणी है। इण बापली रो बाप जद आ छव मईना री आपरी मा रै गर्भ म ही आपरै बाप रै जुलमा सू दुखी हुय र इण ससार सू चल बस्यो। अर इण री अभागण मा आपरै धणी री मौत रै तीन मईना पछै बेलो जलम्यो। इण छोरी रै सागै इण रो एक भाई भी हुयो। दोनू बैन-भाई नै इणा री मा पाल्या बारै गेर र इण ससार सू चली बसी। पण म्हैं उण मरणआळी सू अणजाणपणै मे ओ वादो कर लियो कै जे पारै छोरी हुई तो उण नै बधावण खातर म्हैं म्हारी ज्यान देय देवूली। अबै इण गिलफ नै लियोडी म्हैं भटकती-भटकती आप रै गाव री दिस कानी निकळ आई। अर भगवान म्हनै आप री सरण मे भेजदी। अबै आप मारो का छोडो आ आप री मरजी है।'

हमीदा री आख्या मे चौसरा आसू चाळणनै लाग्या। बा झारो-झार रोय रैयी ही। ठाकर उण री बात ध्यान सू सुण रैयो हो। ठाकर रो हिवडो हमीदा री बाता अर रोवण सू मोम दाई पिघळ रैयो हो अर साळ मे बैठी ठकराणी हमीदा री बाता गौर सू सुण रैयी ही।

ठाकर हमीदा नै पूछ्यो 'तो बो छोरो कठै है ? अर उण नै तू सागै क्यू नीं लाई ?'

हमीदा उथळो दियो 'ठाकर सा बो छोरो आपरै दादा-दादी कनै है।

ठाकर अचरज सू पूछ्यो 'तो इण रै दादा-दादी भी है काई ? पछै दादा-दादी इण छोरी नै क्यू नीं राखी ?'

अबै हमीदा आपरा आसू पूछ र बोली 'ठाकर सा इण बच्ची रै घराणै मे लारली चार-पाच पीढ्या सू छोरी नै हुवता ई गळो घोट र का कीं देय र मारणै री रीत चालती आई है। इण बार इण छोरी री दादी आपरै बेटै री आखिरी निसाणी मान र इण रै दादै सू घणो ई गोधम कर्यो हो। पण म्हैं इण नै पाल्या बारै पड़ता ई लुका र इण रै जुलमी दादै नै कीं बेरो नीं पडण दियो। बस इण

रै बाद हुयाड छारै नै बता दियो तो वा जाण्या कै उण रै पातो ई हुया है। अर म्हे म्हारो वादा पूरो करण खातर इण छोरी नै लय र उठै सू निकळगी। पछै हमीदा रोती रोती बोली "ने मह उण पापी सू इण छारी नै नीं बचावती तो म्हैं खुदा रै घर म इण री मा नै काई मूढो दिखावती ? काई उथळो देवती ? अर हमीदा पूठी इ रावणनै लागगी।

ठाकर न हमीदा री बाता म सार लखायो। क्यूकै वो आ जाण्तो हो कै कई रजपूता रै घराणा माय एडी कुरीत्या हुया करै है। पछै उण नै आपरै बचपण म खुद रै बडेरा कनै सू सुण्योडी एक बात याद आई कै उण रै गाव सू बौछा अळघो उतराद म किणी ई गाव रै ठाकरा रै घराणै म छोरी नै हुवता ई वाढणै री रीत है। पण उण बेळा उण नै एडी बाता माथै भरोसो नीं हो कै कठैई आपरी बेटी नै भी कोइ काटै वाढै है काई ? आज वो ऐडै ई घराणै री कुरीत रो फळ सापडतै आपरै सामी दख रैया हो। पछै ठाकर खुद इ इण बात नै आप ताइ हळकी करता थका साच्यो काई ठा आ छोरी उण ही ठौड री है का दूजी ठौड री ? पण हमीदा री बत म साच लखावै है।

ठाकर बोल्यो "तो बो इतरो पापी है ? इतरो जुलमी है ? हत्यारो है ? अर उण रो सगळो गाव कीं नीं कर सकै है ? राम राम ।

हमीदा बोली "ठाकर सा उण रो घराणो तो नीं गाव नै कीं धारै अर नीं गाव खातर कीं सबूत छोडै।

अबै ठाकर होकै री नळी नै अळघी कर र बोल्यो "धिन है थारै मात पिता नै अर धिन है थारी छाती नै जिको तू इतरै बडै जुलम माय सू इण छोरी नै लेय र निकळगी । तू ओ घणो लूठो अर हिम्मत रो काम कर्‌यो है । पण तू कैवै है जिकी बात है तो बिलकुळ साची ? कठैई झूठ तो नी है ? अर जे झूठी हुई तो ?

हमीदा पूरै भरोसै सू बोली "ठाकर सा म्हैं मुसळमान हू, जे आप रै गाव मे किणी मुसळमान रै घरै कुरान है तो मगाओ अर म्हारै सिर माथै राखदयो। म्हैं जिकी बाता आप नै बताई है उणा मे कीं झूठ नीं है।

इतरै मे साळ म बैठी ठकराणी बोली "ठाकर सा इण रै सिर कुरान दवण री कीं दरकार नीं है। इण रै कैवणै म साव सच्चाई है। म्हैं सूरज भगवान नै साखी राख र कैवू हू कै लारली रात म्हनै एक डरावणो सुपनो आयो। ठकराणी आपरा सुपनो अर उण टैम हुयी आपरी हालत बतावता थका कैयो "ठाकर सा काई ठा सावरियो इण छारी नै बचावण खातर ज आपणै कनै भेजी है तो कुण जाणै ?

ठाकर आपरी ठकराणी अर हमीदा री सगळी बाता सुण र कीं नीं बोल्या। बा आपरै होकै नै हुडहुडावतो रैयो। उठीनै ठकराणी ठाकर रै उथळै अर निर्णय री उडीक मे चुपचाप बैठी ही। ता ठाकर र सामीं बैठी हमीदा ठाकर रै फैसलै खातर टुकर-टुकर भूखी-तिस्सी गाय दार्यी आस्या फाड्योडी देख रैयी ही। पण ठाकर गैरी सोच म डूब्योडा अर दुनिया री दीठ सू किया बच्या जावैला एडी उळझाड माय उळझयोडो होको हुडहुडावतो ई जाय रैयो हो।

इतरै म ठकराणी कन सूती छोरी 'फ्या फ्या कर र कूकी। छोरी रै कूकणै री आवाज ठाकर रै काना मे जद पडी तो ठाकर री गैरी साच सूत रै काचै धागै दाई टूटगी अर ठाकर रै मूढै सू निकळ्यो 'ठकराणी सा बाई नै बाबा दवो।

ठाकर रो इतरो कैवणो हुयो अर ठकराणी रै मन माय खुसी री फूलझड्या-सी छूटणनै लागी। बा अणमूत खुसी सू फूली नीं समाई। उण नै लखायो कै बा आपरै ढालियै सू हेठै पडणआळी है। पण बा अपणैआप नै सभाळ र झट उण छारी नै आपरै हाचळा सू लगाली। ठकराणी रै उण टम री खुसी रो बखाण नीं कियो जाय सकै हो।

हमीदा ठाकर री बात नै सुण र थोडी ताळ ताईं तो अपणैआप नै सभाळ ई नीं पाई। पछै बा आपरी सगळी पीडा दरद अर अबखाया नै भूल र जाणै हवा में उड रैयी ही। बा एक अणकैयै सुख सू भरीजगी ही। उण नै लखायो उण रो जमारो अर उण रो आगोतर सुधरग्यो है। बा आपरै मन माय आपरै पीरा-फकीरा नै मनावणनै लागी।

रावळै रै ऐडै छिणा म ठाकर खखारो कर र भारी आवाज मे बोल्या 'ठकराणी सा म्हारो भगवान साखी है कै म्हैं भी बेटी खातर तरसता हो। आपणै बेटी हुई। अर गई। पण बा गई नीं आ बा ईज बेटी है जिकी आपणै हुई ही। आ आपाणी बेटी है म्हनै लागै है कै ठाकुरजी महाराज म्हारी इण इच्छा नै पूरी करी है। म्हारै माथै उण रो घणो ओसाप है । अबै आप सू म्हारो ओ कैवणो है कै आप इण बच्ची नै आप री मनस्या सू अगजी है इण नै हेजी है अर म्हारै कैया बिना ई आप म्हारी इच्छा पूरी करी है। इण खातर दुनिया री लूठी सू लूठी अबखाई रो सामनो करणो है। अबै दुनिया री कोई सगती इण नै अठै सू नीं ले जाय सकैली।'

इण बिचाळै गाया-भैंस्या रै काम नै निपटा र धनजी भी उठै ई आयग्या अर एकै कानी खड्यो वाता सुणणनै लागग्यो। धनजी रै मन माय हरख नावड नीं रैयो हा। बो साच्यां जे ठाकर आपरी बैठक म जाव तो म्हैं पूरै आगणै मे उछळ-उछळ नाचू।

ठाकर आपरी बात नै आगै वधावता थका रीस सू बोल्यो 'जे बो पापी हत्यारो अठै ताई पूगग्यो तो म्हैं उण रा टुकडा-टुकडा कर वाढूला। पण हमीदा तू थोडी मजबूत रैयी । अर आज सू तू हमीदा नीं है आज सू तू हीराबाई है । अर म्हारी बेटी रो नाव लाडो है बाई लाडकवर।

ठाकर इतरो कैय र आपरी बैठक कानी टुरग्यो अर धनजी उण रै लारै-लारै होको लियोडो बैठक माय पूगग्यो।

ठाकर धनजी नै कैयो देख धनजी थारै सू म्हारै घर री कीं बात छानी कोनी है। अर तू थारै मा-बाप रै मरया पछै अठै दरोगै दायीं नीं घर रै टाबर दायीं पळयो है। अबै इण बायली री अर इण दाई री बात का तो तू जाणै है का आ दाई खुद जाणै है। इण बात नै था दोना रै अलावा किण नै ईज मालम नीं पडणी चाईजै। नीं तो म्हारै सू भूडो कोई नीं हुवैला।

धनजी ओ भेद भेद ई रैवणो चाईजै। अबै आपा नै पूरै गाव सू इण बात रै भेद नै कई दिना ताई छिपा र राखणै री घणी दरकार है। अर जे कोई हीराबाई रै बारै म पूछै तो ओ ईज पडूतर देवणो है कै आ लुगाई ठकराणी सा रै पी रै सू आयोडी है। ठाकर थोडी ताळ ठैर र बोल्यो अबै दो-चार दिन ठकराणी सा कनै हथाया करणनै आवणआळी लुगाया नै ओ कैय र मना कर देयी कै ठकराणी सा री आसग कोनी। बै अबार किण सू ई नीं मिलणो चावै है। पछै इण दो-चार दिना माय म्हैं कोई उपाय सोचू कै गाव-राव सामीं इण नै म्हारी बेटी कींकर बणाऊ ? पण तू थोडो सावचेत रैयी। ठाकर री बात मे जठै गभीरता ही बठै ई धनजी खातर अपणायत भी ही।

पण धनजी भी ठाकर रो वफादार माणस हो। बो आपरै हीयै तणो ठाकर रै सामीं हथेळी मे पाणी लेय र सकळप करयो कै म्हारा प्राण जाय सकै है पण ओ भेद म्हैं मरतै दम तायीं नीं खोलूला।

ठाकर उण नै प्यार री दीठ सू देख र बोल्यो 'स्याबास धनजी अबै तो म्हनै म्हारै मरणै रो भी कीं धोखो कोनी। ठाकर उण री पीठ थपथपाई। अर आगै बोल्यो धनजी अबै तू जाय र उण बच्ची अर उण दाई हीराबाई रै खातर बढिया कपडा रो सरजाम कर। पण हा मैली म्हारै खातर ताजा चिलमिया रो होको म्हनै देय र जाई।

धनजी हरख मे हरखायोडो खुसी री छौळा चढयोडो ठाकर खातर चाय अर ताजा चिलमिया रो होको पैला पुगावण री त्यारी मे लागग्यो। अर पछै बो उण दाई अर बच्ची रै गाभा रो सरजाम करणै री तेवडी। थोडी ताळ मे बो ठाकर कनै

चाय अर होको लेय र गयो तो बो देख्यो ठाकर किणी गैरी सोच मे डूब्याडो चुपचाप बैठ्यो हो। धनजी हाको अर चाय ठाकर कनै राख'र बेगो-बेगो रावळै माय आयग्यो।

धनजी रावळै मे बड्यो तो बो चितबगो-सो उभो रो उभो रैयग्यो। बो देख्या इतरी देर मे हमीदा सू हीराबाई घाघरै ओढणै कुडती काचळी माय चूड्या पैर्योडी टीका-टमका लगायोडी सुहागण-भागण-सी राजपूता रै घर री-सी अर ऊभलाक मे ओपती लुगाई-सी आगणै मे खडी ही। बा धीरै-सी मुळक र धनजी नै कैयो आओ बीरा सा।

धनजी मन मे सोच्यो इण रै बाप्पा घाल र जिण भात बैन-भाई मिलै उण भात गळै मिलू। उण नै लाग्यो कै आज जिन्दगी मे पैली बार उण नै कोई हीयैतणी बीरो सा कैयो है। पण बो आप माथै काबू राख र हीराबाई कानी हस दियो। अर बो बेगो-बेगो ठकराणी सा री साळ माय गयो।

ठकराणी सा री साळ रो रूप ई बदळग्यो हो। बो देख्यो बाई लाडकवर नूवै गाभा माय बढिया रलकियै माथै काजळ-टीकी कर्योडी ठकराणी सा रै कनै सूती ही। धनजी ठकराणी सा नै हरख सू बधाई दी।

ठकराणी सा आपरै लाम्बै केसा नै सुळझावती थकी धनजी सू बै ईज बाता कैयी जिकी ठाकर सा धनजी नै कैयी ही। धनजी भी आपरै उणी सक्ळप नै ठकराणी सा रै सामीं उथळ्यो। अर मन माय सोच्यो कै ठाकर अर ठकराणी रो मन एक है। इणा री बात एक है। इणा रो जोडो सिव-पारवती रो-सो है।

दस

ठाकर गैरै सोच मे डूब्योड़ो सोच रैयो हो कै आ बात गाव-राव सू कितरै क दिना ताईं छिप्योडी रैसी ? छेकड गाव नै तो येरो पडसी। पछै लोग मूढै माथै नीं तो परपूठ नितरा मूढा उतरी बाता करसी। अर धीरै-धीरै ऐडी बाता म्हारै मूढै सामीं आसी। पछै गाव मे इज्जत रा टक्का बटीजसी। अर जे म्हैं गाव रै भलै लागा रै काना म आ बात कैवूला तो लोग किसा बाता बणावणी छाड दवैला काईं ? पछै इण बच्ची रै सास-सम्बन्ध री टैम म्हनै की अवगाई नीं आवैला काईं ? हा म्हैं अर म्हारी ठकराणी दोनू इण नै म्हारी बेटी मानती। अर सागै ई इण दाई रै कैवणै सू बच्ची नै घर-घराणै री भी मानली। पण दूजा लोग इण बच्ची नै घर-घराणै री किया मान लैवेला ? लोग कैवेला ठाकर सुल्तानसिंह इण छोरी नै नीं जाणै किण लालच रै कारण बेटी बणाई है ?

ठाकर विचारा रै ऐडै उळझवाड मे उळझयोडो डाफाचूक होयोडो काईं करै काईं नीं करै री हालत मे। बो एक लाम्बो-सो सिसकारो न्हाख्यो। पछै सोच्यो जे छोरी नै अर इण लुगाई नै अठै सू काढ देवू, तो थाडी ताळ पैली रावळै म जिकी बात हुई ही उण रो मोल काईं रैसी ? ठकराणी सा अर उण लुगाई सामैं म्हारी जीभ म्हारी बात धूड हुय जासी।

इतरै मे धनजी आयो। बोल्यो 'ठाकर सा आप नै मा सा रावळै मे पधारण री अरज करी है।

ठाकर रावळै मे गयो। हमीदा हीराबाई रै रूप म ठाकर नै झुक र मुजरो करयो। ठाकर मुळक्यो।

ठाकर ठकराणी री साळ आगै जाय र ऊभग्यो। ठकराणी ठाकर नै मुजरो करयो। ठाकर बोल्यो 'फरमाओ सा।

ठकराणी बोली 'ठाकर सा इण बच्ची नै लारली रात जद म्हैं अगेजी ही

उणी वेळा सू म्हारै सामीं गाव-राव अर भाईपै री चिंता ही। अबै इण नै म्हैं म्हारो दूध देय दियो है। अर मन सू म्हारी बेटी मानली। अबै म्हैं किणी हालत मे इण बच्ची नै छोडूली नीं। पण जिको दुनिया सू नीं डरया बो भगवान सू भी नीं डरयो। अबै आपा इण नै दुनिया रै सामीं कींकर लेय र आवा ? म्हारा जीव कैव है कै आप भी इणी चिंता मे घुळ रैया हुवाला ।

ठाकर कैयो आप रो कैवणो साव साचो है ठकराणी सा। पण अबै इण उळझवाड सू निस्तारो पावण रा काई उपाय है?

ठकराणी आपरो सुझाव दियो 'ठाकर सा आप म्हनै अर हीराबाई नै म्हारै पीरै रै बहानै सू, चार-छव मईना खातर म्हारै भाई बनेसिंह कनै मुम्बई छाड आवा। पछै गाव-राव अर कुटम्ब-कबीलै नै आ कैय दवाला कै आ बच्ची म्हारै भाई री है। इण नै म्हैं गोद ली है। म्हनै बेटी री घणी चावना ही। गाव मे कोई बात फूटै, का चस-चस हुवै उण सू पैली आप म्हानै उठै पुगावण री त्यारी करदयो। लारै सू घर धनजी सभाळ लेसी। अर जे कोई पूछसी तो कैय दसी कै ठकराणी सा री रात नै हालत घणी खराब हुयगी ही। इण खातर उणा नै रातो-रात स्हैर री अस्पताळ मे ले जावणो पड्यो। इण रै बाद भी जे कोई बात बणसी तो म्हैं कोई अन्याय तो करया कोनी। म्हे तो एक मिनख रै अस नै पाळा हा। मिनख मिनख रै अस नै पाळै-पोखै ओ मिनख रो घणो मोटो धरम है।

ठाकर ठकराणी री बाता नै गभीर हुय र गौर सू सुण रैयो हो। अर उण रै घट माय ठकराणी रो सुझाव उतरग्यो। बो चुपचाप खड्यो हो।

ठकराणी आपरी बात माथै जोर देय र बोली आप आज रात रा ई म्हारी अठै सू जावणै री त्यारी करवादयो। आप म्हानै मुम्बई पुगा र छव-सात दिना माय पूठा गाव पधार जाईज्यो।

ठकराणी रै कैयै मुजब ठाकर सगळी त्यारी करावणै मे चुपचाप लागग्यो। ठाकर विचार करयो कै स्हैर सू दीपचदजी सेठ री दुकान सू बनेसिंह नै टेलीफून कर र मुम्बई पूगणै रो समचार कर देवाला। अर बै टेसण माथै म्हानै लेवणनै सामनै आय जावैला। गोपाळ सू भी मिळया नै घणा दिन हुयग्या। उण नै भी सभाळ लेस्यू अर बनजी रो कारोबार कींकर चालै है इण री जाणकारी भी हुय जावैली।

ठाकर धनजी नै बुलायो अर सगळी बात सावळ-सावळ समझायदी। धनजी रा उथळो हो कै आप किणी बात री चिंता नीं करया।

रात घडी चारैक पछै ठाकर ठकराणी हीराबाई अर उण बच्ची नै लेय र गाव सू बहीर हुयो।

गढ सू निकळता ई मालियो ढोली मिलग्यो। बो सुभराज करचो अर आपरै गेलै लाग्यो। ठाकर ठकराणी सू बोल्यो 'ठकराणी सा सुगन तो चोखा हुया है। मागळिक रो सामळो हुयो है।

पण गाव सू निकळता-निकळता नै रामूडो नाई मिलग्यो। रामूडो ठाकरसा सू रामा-सामा कऱ्या। बो मन मे सोच्यौ कै इतरी रात गया ठाकर ठकराणी अर स्यात एक लुगाई और है ऐ कठै जाय रैया है ? पण उण री पूछणै री हिम्मत नीं हुई।

ठाकर सा रो ऊठगाडो पावडा पन्दरै-बीसेक आगै गयो हुवैला कै रामूडो ठैर र देखणनै लाग्या। चाणचकी उण रै काना माय टाबर रै रोवणै री आवाज सुणाई पडी तो बो सोच्यो कै ठकराणी सा रै अबार टाबर हुयो हो स्यात उण नै लेय र स्हैर जाय रैया हुवैला। पछै उण नै चाणचकै चेतै आयौ कै ठाकर सा रै बायली हुई ही बा तो पूठी हुयगी ही नी ? फेर बो अपणैआप सू कैयो कै स्यात तनै टाबर रै रोवणै री आवाज रो बैम हुयग्यो हुवैला। अर बो आपरै घर कानी टुरग्यो। ठाकर रो गाडो बोहळी दूर जाय चुक्यो हो।

दिनूगै रावळै मे ढोल्या मेघवाळा नायका अर नाया रै घरा री लुगाया छाछ लैवण नै आई। उणा माय सू कीं ठकराणी रै बारै मे पूछै ही। उण नै धनजी रो एक ई उथळो हो कै ठकराणी सा री हालत घणी खराब हुयगी ही। इण खातर उणा नै स्हैर री अस्पताळ लेयग्या है।

गढ री आ बात डबडी जितरै क गाव मे हवा रै ल्हरकै दायीं फैलगी। गाव रै लोगा नै चिता हुई। कई जणा तो गढ मे धनजी नै पूछणनै भी आया। कई जणा कैयो ठाकर रो ऐडी अबखाई रै टैम गाव रै किणी मिनख नै बता र नीं जावणो माडी बात है। कई जणा कैयौ अबखाई बसी बधगी हुवैला इण खातर बेगा लेयग्या हुवैला। कई जणा बोल्या काले ताईं समचार आय जावैला। पण रामूडो नाई चुपचाप हो अर बात आई-गई हुयगी।

ठाकर मुम्बई पूग्यो। टेसण माथै बनेसिह अर ठाकर रो बेटो गोपाळसिह ऊभा हा। बै उणा नै लेय र आपरै बगलै पूग्या। ठकराणी मुम्बई पैली बार आई ही। हीराबाई तो चमगूगी चमकडफ्फू अर चितबगी-सी हुयोडी फाट्योडी आख्या सू मुम्बई नै देखै ही। पण उण री समझ मे कीं नीं आय रैयो हो।

बनजी रै दो-तीन नौकर-नौकराणी। बढिया बगलो। बगलै रै आगै पोर्च मे फियेट कार अर बढिया-सो बाग-बगीचो देख र ठाकर-ठकराणी घणा ई राजी हुया। ठकराणी अर हीराबाई नै चाय-पाणी अर सिरावण करावणै सू पैली बनजी

री नौकराणी उणा रै वास्तै सिनान-सपाडै रो मरजाम कर दियो।

इण बिचाळै ठाकर आपरै साळै बनेसिह नै उण रै ड्राईंग रूम मे अलघो लेय'र एकायन्त मे सगळी विगत अर हकीकत बतावता थका कैयो 'बनजी आप री बैन रो मन हो। मनस्या ही। इण सू म्हैं भी राजी हो। पण ओ सगळो काम ठकराणी सा री मरजी मुजब हुयो है। अबै आप इण नै आप री भाणजी मानोला। आप री बैन अर हीराबाई अबै आप रै अठै तीन-चार मईना रैवैला अर पछै आप इणा नै टाटिया री मडी ताईं पुगाय दिया। म्हैं इणा नै उठै सू गाव लेय जावूला। इण बिचाळै म्हैं गाव-राव री अर म्हारै कुटम्ब-कबीलै री हलगत री भी की जाण-चीण लेय लेवूला।

बनजी एकला ई मुम्बई मे शेयर रो धधो करै। अर बाकी उणा रा छव भाई आपरै गाव मे खेती-बाडी करै अर धन-धीणो राखै। ठकराणी इण सात भाया री एक सोनल बाई। इण माथै सगळै भाया रो मोकळो ई हेत अर बाई नै घणी चावै। बाई रै खातर आपरा प्राण दवण नै भी त्यार।

बनजी सगळी बाता सुण र बोल्यो 'जीजो सा आप भी भली भोळावण देवणनै लाग्या। म्हा सात भाया बिचाळै म्हारी एक सोनल बाई है। इण सारू म्हारा प्राण भी त्यार है। पछै आप दोनू तो इत्तरो बडो काम कर्‌यो है जिण री दुनिया म बाता चालसी। फेर आप नै ओ पूरो भरोसो भी है कै ओ राजपूत रो खून है। अर जे राजपूत रा खून नीं भी हुवै तो ओ मिनख रो तो खून है जिण नै आप अगेज्यो है।

अब तक तो ऐडी बाता नानी दादी कनै सू कहाण्या रै रूप मे सुणता आया हा। पण आज सैमुख म्हारै ई घर मे म्हानै देखणनै मिळी है।

'जे आ लडकी काल-कदास नै बडी हुयगी अर इण रै भाईता नै किणी भात ओ बेरो पडग्यो कै आ बा ई छोरी है तो उणा माथै अर उणा जैडै लोगा माथै एक सातरो धमड हुवैला जिका बेटी रै जलम माथै खोटो अकुस राखै। जिका बेटी नै कुवारी थका परायो धन समझ र अणकूत खोरसो करावै। अर परणीज्या पछै सासरला री गुलामी भोगणनै सूप देवै। इण भात रा लोग आपणै समाज आपणै गावा अर आपणै देस मे अजू ताईं घणा ई है। अठीनै महानगरा नै देखो जठै पढी लिखी लडक्या है। उणा नै हर तरा री छूट है। आजादी है।

इतरै मे ठाकर मुळक र बोल्यो 'बनजी ऐडी छूट अर ऐडी आजादी किण काम री जिण सू लुगाई जात री सील अर मरजादा लाज अर सरम इज्जत अर अबरू आधी उघाड़ी आधी ढक्योडी रैवै। रिस्ता-नाता अर ऊमर सगळा नै ताक

माथै राख र लुगाई नै कारी भोग री चीज मानणनै लाग जावै। कदैई उण री मजबूरी सू तो कदैई मरद आपरै जोर सू उण सू, चावे जिको काम लय लवै। अर मरद हाड्या माथै मास देख र रग्याडा गाभा देख र उण नै भूखै गडक दायीं चचेडणन लाग जावे। आपणे घरा माय ऐडी बाता नीं चालै सा ।

ए दानू साळो-बैनोई अठीनै ऐडी बाता म लाग्योडा हा तो उठीनै ठकराणी सू ठकराणी रो बटो गोपाळसिह बाता कर रैयो हो।

'मा सा म्हनै जद ओ समचार मिळ्यो कै म्हारै बन हुई है तो म्है घणो ई राजी हुयो। अर साच्या कै म्हैं भी म्हारी बैन नै अठै ई म्हारै सागै पढाऊला। क्यूकै जद म्है दूजै लडका रै सागै उणा री छोटी-छोटी बैना नै देखतो तो म्हारा जीव भी घणा ई चालतो कै म्हारै भी बैन हुवै तो किसो क आछो रैवै। पछै म्हनै ठा पड्यो कै म्हारी बैन मरगी। मा सा म्हैं दो-तीन दिना ताई रोटी नीं खाई अर म्हैं रोय-रोय र म्हारा बुरा हाल कर लिया। फेर मामो सा म्हनै बुरी तरिया सू धमकाया अर रोटी खवाई। इत्तो कैय र गोपाळ उण छोरी नै आपरै हाथा मे लेय र उण रा लाड करणनै लाग्यो।

गोपाळ री ऐडी बाता सुण र ठकराणी री आख्या पाणी सू भरीजगी। गोपाळ रो ठकराणी अणकूत लाड करता थका उण रै गाला माथै हाथ फेर र बोली 'हा बेटा बैन रै बारै मे ऐडी बाता सुण र जे तनै दुख नीं हुवतो तो किण नै हुवतो ? पण बेटा बात आ ही कै आपणी आ बाई इतरी बीमार हुयगी ही कै पूरै गाव मे बाई सा मरग्या बाईसा मरग्या री बात फैलगी ही। पछ हीराबाई जिका ऐ म्हारै सागै आया है ऐ कोई ऐडो झाडो-झपटो दियो के आपणा बाई सा पूठा आयग्या।

'तो मा सा झाडै-झपटै सू मर्‌योडो आदमी पूठो जी जावै है काई ? गोपाळ रो ऐडो भोळो सवाल ठकराणी नै ठेठ ताई झझोड्‌ग्यो।

ठकराणी मन म पछताई कै गोपाळ नै झाडे-झपट री बात कैय र माडो काम कर्‌यो है। अर वा आपरी बात नै फोरी नीं बेटा झाडा-झपटा सू मर्‌योडो आदमी नीं जीवै। अर नीं इण सू कीं हुवै। म्हारो मतलब ओ है कै आपाणी बाई मर्‌या कोनी हा। कीं ताळ खातर मूर्छित हुयग्या हा। पछै हीराबाई इण नै उथळ-पुथळ कर र इण माय प्राण पूठा बपराय दिया। ठकराणी री आ बात गोपाळ रै गळै उतरगी। पण ठकराणी रो जीव उथळ-पुथळ हुवणनै लाग्यो कै इण भोळै-भाळै टाबर नै जे सगळी बात साच बता देऊली तो नीं जाणै इण रै काचै हिवडै माथै काई बुरा असर पडैला ? अबै ठकराणी गोपाळ नै इण छोरी रै बारै मे कदैई कीं नीं बतावणै री मन माय पक्की धार ली।

गोपाळ बाई रा लाड करता-करतो पूछ्यो 'मा सा अबै तो आप इण नै म्हारै सागै ई पढावाला नी ?'

ठकराणी उथळो दियो 'हा बेटा बाई थोडी-सी बड़ी हुया पछै आप दोनू बैन-भाई अठै ईज पढोला।

इतरै मे हीराबाई न्हाय-धाय र ठकराणी अर गोपाळ कनै आई। ठकराणी गोपाळ नै बताया 'गोपाळ ऐ हीराबाई है। ए थारै नानरै री है। बडी स्याणी अर हिम्मतआळी लुगाई है। अब ऐ म्हारै सागै रैवला अर थारी बैन री सार-सभाळ करैला।

गोपाळ हीराबाई नै पावाधोक कैयो। हीराबाई गोपाळ रा लाड करयो अर आसीस दीवी। इण टैम ई ठाकर अर बनेसिह भी उठै ई आयग्या। बनेसिह आपरी भाणजी नै गोदया माय लेय र लाड करणनै लाग्यो। गोपाळ बिचाळै ई बाल्यो 'मामा सा ए हीराबाई ता आप रै गाव रा ई है।

बनेसिह हीराबाई नै की पूछणआळो ई हो। पण ठाकर बनेसिह कानी आँख मार दी। बनेसिह उणा रै इसारै नै समझग्यो।

नौकर आयो अर सगळा नै चाय-पाणी अर नास्तै रो कैयो 'साब नास्तो त्यार है। सगळा नास्तो-पाणी करयो। पछै जीम-जूठ र दुपारी मे सगळा नै बनजी आपरी कार मे घुमावणनै लेयग्यो। आवती वळा बनजी दो हजार-पन्दरैसौ रा रमतिया हींडो अर गाभा-लत्ता मोल लेय र आयो।

दो-तीन दिना ताई ठाकर मुम्बई मे रैया। पछै सगळा नै मुम्बई छाड र आप आपरै गाव कानी बहीर हुयग्यो। पण उण सू पैली जद ठाकर बनेसिह सू कारोबार री बात-चीत कर रैयो हो उण टैम बनेसिह ठाकर नै कैयो 'जीजो सा अबै ऊठगाडा रो टैम गया अबै आप खातर म्हैं एक-दो बरस मे एक बढिया-सी जीप भेजू हूँ। इण सू ठिकानै री स्यान बधसी अर आप रो लोगा म रुतबा रैसी।

ग्यारह

आठ दिना सू ठाकर आपरै गाव मे पूठो आयो। धनजी नै गाव-राव रा हालचाल पूछ्या। धनजी बतायो 'गाव मे किणी तरै री कीं बातचीत कोनी। हा गाव रै लोगा नै मा सा रै बारै मे घणी चिंता हुई ही। धनजी री बात सुण र ठाकर रो जीव जम्यो।

ठाकर नै गाव मे आयो सुण र लोग-बाग ठाकर नै समाचार पूछण खातर गढ मे आवणनै लाग्या। ठाकर लोगा नै उथळो देवतो कै 'ठकराणी सा री स्हैर रै अस्पताळ मे पार नीं पडी तो उठै रै डाक्टरा रै कैवणै सू, ठकराणी सा नै मुम्बई लेय र जावणो पड्यो। मुम्बई मे ठकराणी सा रा भाई बनेसिंह रैवै है। अर उठै ई आपणो गोपाळसिंह पढै है। सो ठकराणी सा नै ईलाज सारू चार-छव मईना लागसी। ईलाज सारू उठै ई छोड आयो। अबै चार-छव मईना री बात सुण र गाव रै लोगा मे चिंता हुई कै ठकराणी नै स्यात कीं घणी अबखाई है।

अबै ठाकर रो जीव बिलमावण खातर गाव रा दो-चार आदमी रोज गढ माय हथाया करणनै आवण लाग्या। गढ री मोटोडी तिबारी री चौकी माथै रोज ढोलिया ढाळीजै। तम्बाखू रो भरयोड़ो गट्टो राखीजै। चिलमा होका पीवीजै अर आपस म मोकळी गप-सप हुवै।

गाव रो सेठ दुलीचन्द गाव मे ई रैवै। उण रो बिणज-ब्योपार अठै रै स्हैरा माय अर कळकत्तै-असम कानी भी है। उण रा टाबर धन्धै नै सभाळै। सेठ दुलीचन्द दानी धीरै अर स्याणै मिनखा री गिणती माय गिणीजै। सेठ दुलीचन्द गाव रै गरीब-गुरबा नै निकमाळै री टैम सायरो देवै। खेती करावै। आपरै व्यवहार बातचीत अर लेण-देण सू गाव रै लोगा माय देवता दाईं पूजीजै।

गाव मे एक-दो बार जद काळ पड्यो तो सेठ दुलीचन्द गाया भैंस्या अर दूजै पसुधन खातर घास चारै पाणी रो सरजाम करयो हो। बो मीठै पाणी रो कूओ

भी खुदवा दियो। स्कूल खातर छोटो-सो भवन बणवाय दियो जठै पाचवीं ताई री पगई हुवै। इण बार सेठ स्कूल रो आठवीं ताई रो भवन बणावण री अर अबै गाव म एक छोटी-मोटी डिस्पेसरी रो भवन बणावण री मन माय तेवड राखी ही।

सेठ दुलीचन्द रा ऐडा दान-पुन रा काम लोगा रै मन माय ऐडी भावना नै बणाय राखी ही कै बाणियो लोगा रा खून चूसणआळो ई नीं हुवै है बा लोगा नै औडी रै बगत सायरो पूगावणआळो अर लोगा नै बणावणै म उण रो घणो लूठो हाथ हुवै है। गाव मे इण गुणा सू पूजीजता सेठ दुलीचन्द आपरै गाव रै ठाकर सुल्तानसिंह रा खास भगत अर ठाकर री इज्जत सगळा सू बेसी करै। ठाकर भी उण रो मान-सनमान आव-आदर इधको करै।

सेठ दुलीचन्द अर ठाकर रै एक हुवणै रै लारै घणो मोटो कारण ओ हो कै सेठ रै बाप नै ठाकर रो बाप इण गाव म ल्यायो हो अर उण री हरेक बात सू मदद करी ही। इण गाव मे आया पछै सेठ दुलीचन्द रै बाप रा दिन ऐडा फिरया कै सेठ रै घरै लिछमी औड दिया पूठी आवणनै लागी।

अबै इण अबखाई री बेळा माय सेठ ठाकर कनै बैठ्यो दिन-दिन भर गप-सप मारै।

ठाकर अर गाव रै लोगा बिचाळै हथाया तो पैली भी हुवती ही पण आजकाळै ठाकर आपरी बातचीत म बेटी रै घर माय हुवणै माथै कोई न कोई बात लोगा रै सामीं रोज करणनै लागग्यो।

एक दिन ठाकर अर सेठ दुलीचन्द अर गाव रा चार-पाच ठावा-चावा लोग गढ म बैठ्या हा। उणा रै बिचाळै बातचीत चाली कै घर माय बेटी हुवणी चाईजै। सेठ कैयो 'ठाकरा आपणै सास्त्रा माय अर दुनिया रै सगळै धरमा माय बेटी री महिमा बेटी रो मान अर बेटी री माया नै घणी मोटी मानी है। पण आजकाळै आपणै अठै बेटी रो हुवणो एक पाप हुवतो जाय रैयो है। क्यूकै दायजे री भोभर इण भात फैलगी है जिकी मे बेटी रै माईता रा पग किणी न किणी भात सू बळ्या ई सरै है। इण कारण तो आज बेटया कठैई जैर खाय र मरै है तो कठैई बै बळीतै रै भेळी बळै है।

सेठ आपरी बात नै आगै वधावता थका कैयो 'ठाकर सा पैली तो राजपूता माय टीको देत्रण री रीत हुया करती ही। जितरो बडो ठिकाणो हुवतो उतरो ई वडो टीको हुया करतो हो। उतरो ई उण रो मान-सनमान हुया करतो हो। अैडी रीत आप लोगा माय ई चाल्योडी ही। पण आजकाळै आ टीकै री रीत जात-जात मे चाल पडी। जिकै सू इण रीत रो ऐन्हे हाल हुयो है कै भलाई छोरो तीन कोडी रो भी

नीं हुवै पण उण रै माईता नै टीको भावै है। पछै बेटी रा बाप बापडो काई करै ? क्यूकै बटी नै बो ऊमर भर आपरै घरै तो राख कोनी सकै ? उण नै तो आपरा सौ मरणा मर र टीकै रो सरजाम करणो ई पडै। दूजी बात आ है कै आज रै छारा सू कमाई-कजाई तो हुवै कोनी पछै बे टींगर अर उणा रा माईत बीनणी रै पी रै सू धन चावै। जे बीनणी रै माईता कनै कीं नीं हुवै तो सासरला का तो उण नै बाळ र का उण नै मैणा सू अधमरी कर र आपरै काळजै री भाभर नै बुझावै।

ठाकर रै सेठ री बाता गळै उतर रैयी ही। बा मन माय सोच रैयो हो कै म्है तो कई पीढया सू ई इण रो सुवाद नीं चाख्यो है। पण अबकै उछाळभाठो सिर माथै लियो है। जिको देखा हा काई हुवै अर काई नीं हुवै ?

ठाकर बोल्यो 'सेठा आप रो कैवणो तो साव साचो है। पण अबै इण रो कोई सातरा उपाय कठै मिळै ?

रैवतो चौधरी बोल्यो 'ठाकरा आप नै इण रो उपाय ढूढणै री काई दरकार ? आप रो तो इण जैर सू पीढया ताई लारो छूटचोडो है। पण भला मिनख दूसरा री अबखाई नै आपरी अबखाई मान र ऐडी चिंता कर्‌या करै है।

इतरै मे रामूडो नाई उठै आयग्यो। रामा-सामा कर्‌या अर बैठग्यो।

ठाकर रैंवतै री बात रो उथळो देवतो बोल्यो 'चौधरीजी आपरै नाक री माखी तो सगळा ई उडावै है। पण आजकाळै दायजैआळी सरपणी तो ठौड-ठौड बटका बोढणनै लागगी। पछै म्हारी ठकराणी तो अबकै म्हारै साळै री बेटी नै बेटी दायीं बडी कर र ब्याहणै री धार-विचार राखी है। क्यूकै उण नै बेटी री चावना घणी है। हा कीं थोडी-घणी म्हारै मन माय भी बेटी री चावना बणी रैवै है।

रामूडो बैठ्यो बाता सुण रैयो हो। बो एक बार तो उचक्यो कै बो पूछै कै ठाकरा आप जिण दिन सेर जाय रैया हा उण दिन उण नै किणी छोटै टाबर रै कूकणै री आवाज सुणाई पडी ही वा टाबर री आवाज आप रै गाडै माय कींकर ही ? पण उण री हिम्मत नीं हुई अर बो चुपचाप ई बैठ्यो रैयो।

इण भात री बाता ठाकर रै गढ माय रोज हुवती। अर जोग-सजोग सू रामूडो नाई उठै उण दिन आय ज्यावतो जिण दिन ऐडी बाता हुवती ही। रामूडै रै बार-बार ठाकर नै गाडै माय रोवतै टाबर रै बारै में पूछण री मन मे आवती पण नीं जाणै उण सू क्यू नीं पूछीजतो हो ?

एडी बाता-चीता माय चार-छव मईना बीतग्या। पण ठाकर का धनजी रै

सभीं उण दइ रा बा उण छेरी रो नीं जिगर कदैई नीं अयो। अबै ठाकर नै पुरा भरोसा हेयग्या वै तरकीब पर पड़गी।

ठकराणी हीराबाई अर बाई लाडकवर छव मईना सू पूठा आपरे गाव म आया। गाव री लुगाया ठकराणी सू मिलणनै आई। ठकराणी री गोदया माय फूला रा सो भारा गुलाब री पत्ती रो-सो गोरो निखार रग अर चाद रै टुकडै दायीं रूप री निधान छव मईना री उण छोरी नै ठकराणी रो बाबो चूमता देख र लुगाया चितराया सी हुयाडी आपस म बाता-चीता करणनै लागी।

लुगाया म एडी बाता भी हुय रैयी ही कै ठकराणी तो खुद ई रग-रूप अर नाक-नक्श सू घणी पूठरी हुय र आई है। अर इण रै साँआळी लुगाई म्पात कोई बरै सू आयाडी लागै है। पण ठकराणी रै हाचळा सू लाग्योडी आ छोरी ठकराणी रै कनै किण री है ? ऐडी बाता जद ठकराणी रै कानां ताइ पूगी तो वा उणा नै बतायो कै 'हीराबाई म्हारै पी रै सू आयोड़ा है। अर म्हारी गोदया री छोरी म्हारै भाई री बेटी है जिण रै बेले री छोरचा हुई ही। उणा माय सू एक नै म्है पाळण अर म्हारी बेटी बणावण नै लेयली।

पण गाव-राव रै लोगा माय ठाकर री बेटी एक आडी (पहेली) बणगी। लोगा माय ऐडी गुण-तुण हुवती कै ठाकर री इण छोरी रै बारै मे तो दाळ मे कीं काळो है। अर टैम-बेटैम ऐडी बाता हुवती रैवती।

एक दिन हीराबाई अर धनजी किणी काम सू, सेठ दुलीचदजी री हवेली जाय रैया हा। उणा नै गले मे बो आदमी मिळग्यो जिको हमीदा नै ठाकर रो गढ बताया हो। उण री निजर जद चाणचकी हमीदा कानी गई तो उण नै लखायो कै बो इण लुगाई नै कठैई देखी है। पछै उण नै याद आइ कै आ लुगाई तो स्यात बा ईज है जिकी आज सू चार-छव मईना पैली ठाकर रो गढ पूछ्यो हो अर तू इण नै बतायो हो। पण उण लुगाई रै तो सूथण पैरयोडी ही। अर बा तो स्यात कोई मुसळमानणी सी लागै ही। उण रै कनै तो स्यात कोई टाबर भी हुवतो हा। पछै बो सोच्यो कै स्यात उण लुगाई सू इण रो नाक-नक्सो मिळतो हुवैला। फर बो साच्यो कै कदै ई धनजी नै इण बाबत पूछस्या।

ऐडी बाता माय दिन मईना अर बरस बीतणनै लाग्या। अठीनै लाडकवर दूज रै चाद दायीं दिन-दूणी रात चौगणी बधणनै लागी।

बारह

उठीनै होदा गाव मे बरस दो-चारैक तो गाव रै लोगा माय हमीदा दाई नै दूढ र ल्यावण री चर्चा चाली अर चेस्टा भी करीजी। पण धीरै-धीरै लाग-बाग इण बात नै भूलण नै लागग्या। पण आ बात छोगजी अर लालजी रै विचाळै काठी झालीज्योडी ही कै उणा नै हमीदा रो बेरो करणो है। बै इण बात नै आपरै मना माय ईज राखी।

होदा माय लारलै तीन-चार बरसा सू काळ पड रैयो हो। कदैई बायोडै खेता नै खेता री रेत बिना पाणी डकार जावती ही तो कदैई हरै-भरै खेता नै टीडी-फाको चाट ज्यावतो हो। ऐडै काळा सू मारयोडा गाव रा लोग गाव छोडण नै त्यार हुय जावता तो छोगजी अर लालजी उणा खातर राज सू, सेठ-साहूकारा सू मदद दिरावता थका उणा नै गाव मे ई रोकण री चेस्टा करता हा।

अबकै होदा री रोही मे राम रमणै लाग रैयो हो। लोग-बाग आपरै खेता नै देख र लारलै काळा नै भूलण री हालत म आयग्या हा। जीवणजी रो पोतो राजूसिह बारह-तेरह बरसा रो हुय रैयो हो। राखी रो तिवार हो। बैना आप-आपरै भाया रै राखी बाधी ही। अबै राजू की समझदार हुयग्यो हो। उण रै मन मे आई कै बा आपरै पडौस री छोरी केसर कनै सू राखी बधावै। अर बो राखी बधा र जिण वेळा आपरी कोटडी मे गयो तो जीवणजी री निजर उण रै हाथा माथै पडी। जीवणजी काठो रीस मे भरीजग्यो। अर बो आपरै पोतै नै लकडी जूता अर धापा-मुक्का सू कूट-कूटर उण रो मछी-मास कर दियो। राजू आपरै दादो सा री इण मार रो मतलब नीं समझ्यो। बस बो तो ठैर-ठैर र आ ईज सोच रैयो हो कै जिको दादा सा उण रै सास मायै आपरा प्राण देवै वो ईज दादो सा हया-दया विना उण नै इतरो जोर सू क्यू मारयो है ? राजू रै रोवणै म एक अणवैयो दरद लखावै हो। वो सुबक्या चढयोडो डुसक्या भरतो आपरी दादी पाना कनै गयो। दादी पाना

अपरै पतै री एडी दसा देख र उण नै पूछ्यो अरे राजू, कांई बात है ? बात ता बता ? तनै कुण मारयो बेटा ? पाना चिंता म भरीज्योडी राजू नै बार बार पूछ रैयी ही। पण राजू रा आलू थम नीं रैया हा। पछै पाना उण नै अपरी छाती सूं चिपा र बार-बार लाड करणनै लागी।

पण राजू री सिसक्या ता राजू री छाती म नावडै इ कोनी ही। पछै यो डुसक्या भरता-भरतो बोल्यो म्हनै जी सा मारयो कै तू आ राखी हाथ रै किण सूं बधाई अर क्यूं बधाई ? म्हारै हाथ सूं राखी नै तोड र जी सा आपरै पग सूं मसळ न्हाखी। अर जी सा कैयो जे भळै कदैई ऊमर म भी किणी सूं राखी बधवाई तो थारी ज्यान लेय लेवूंला। इत्तरो कैय र राजू पूठो ई डुसक्या भर-भर रोवणनै लाग्यो।

पाना उण रो अबकै बेसी लाड करयो अर उण नै पुचकारयो। पछै कैयो 'म्हारै राजकुमार रै म्हैं राखी बाधूली। पाना उण नै भुळावती थकी आगै कैयो 'म्हारै चाद रै टुकडै खातर म्हैं स्हैर सूं फूठरी-सी राखी मगा र राखी बाधूली।

राजू आपरी दादी पाना सूं सवाल करणनै लाग्यो 'मा सा केसर बाई सूं राखी बधवाय र म्हैं आछो काम नीं करयो काई ? जद म्हारै बैन नीं है तो म्है उण सूं राखी बधवायली इण म बुरी बात काई है ?

भाळै राजू रो ओ सवाल पाना नै ठेठ ताई झकझोरग्यो। पाना सोच्यो अबै राजू नै काई उथळो देवू ? पछै इण नै जे सगळी बात बताय देवूली तो नीं जाणै इण माथै काई असर हुवैला ? पाना बात नै गिटणै री चेस्टा करी। पण राजू रो हठ तो बालहठ हो। छेकड पाना नै राजू रै सामी झुकणो ईज पड्यो अर उण नै आपरै घराणै री रीतिनीति री विगत बतावणी पडी 'बेटा थारै सागै जलम्योडी थारी एक बैन ही जिकी नै हमीदा दाई थारै जी सा रै डर सूं लेय र अठै सूं कठैई निकळी ही। जिकी अजू ताई पूठी नीं बावडी है। स्यात बै दोनूं कठैई मर खपगी हुवैला । थारै दादै नै इण बात रो ठा नीं हैं। कै दाई हमीदा अठै सूं इण घराणै री छोरी नै जीवती लेय र न्हाठगी है। थारो दादो उण दाई नै घणी ई ढूढी। पण उण री पार नीं पडी। पाना आपबीती अर आपरै घराणै री विगत बताती-बताती गळगळी हुयगी अर आपरी गीली आख्या नै पूछणनै लागी।

भोळै-भाळै राजू नै आपरै घराणै री विगत अर रीति-नीति रो जद बेरो लाग्यो तो बो भाठै दाईं होयग्यो। बो सूनो हुयोडो आपरै जीवणै पग रै पजै माथै जलम सूं बण्याडै पान रै पत्तै जैडै लसणियै नै मसळतो-मसळतो कद सोयग्यौ उण नै की ठा नीं पडी। पाना आपरै काम मे लागगी।

राजू नै सूतै-सूतै नै सुपनो आयो कै उण जितरी उण जैडी सकल री एक

छारी उण र राखी बाधणा चाव है। पण बा दादे री मार र डर सू उण सू राखी नीं   उधजा रयो है। बा चमक अर चमकण सू उण री नींद टूट जावै।

पछै वो आपरी दादी न सुपना सुणावता थका पूछ्यो कै 'मा सा आ छोरी कठई म्हारी बेन तो नीं ह ? जिकी स्यात कठ ई जीवती हुवेला। अर उण रा मन म्हार राखी बाधणो चाव है ?

पाना उण रो सुपनो सुण र कैयो 'बटा ऐडै नींद रै जजाळा माथै भरोसो नीं करणो चईजै पछै वा दाई अर थारी बैन ज कठई जीवती हुवती ता उणा नै सगळो गाव तीन-चार बरसा ताईं घणो ई ढूढ्या अर बा कठैई नीं लाधी। छोगजी अर थारा दादोसा तो उणा नै ढूढण खातर रात-दिन एक कर दिया हा। नीं जाणै बा दाइ उण छोरी नै लय र किण बिल माय जाय'र बडगी ही कै उण रो कीं ठा ई नीं पड्यो। छकड सगळा आ साच र ठडा हुयग्या के बा कठैई मरगी हुवैला अर उण रा हाड-मास गिरझडा का गडकडा ख्यायग्या हुवैला।

पण राजू रा मन पाना री इण बात नै नीं मान रैयो हो। अबै बो रोज आपरी दादी पाना नै कैवै कै नीं दादी म्हारी बैन ता कठई जीवै है। अर म्हे उण रो बेरा करला ।

एक दिन जीवणजी इण दादी-पोतै री ऐडी बाता लुक र छानै सू सुणली। दादी-पोतै नै रोज आ ईज कैवती की नीं बेटा बै कठैई मर-खपगी। अर पोतो कैवतो नीं मा सा बै कठैई जीवै है ।

जीवणजी जद उण दोनू दादी-पोतै री ऐडी बाता सुणी तो उण नै लखायो जाणै उण री एडी सू चोटी ताईं कोई लापो लगा दियो है। अर बो धू-धू कर र जीवता ई बळ रैयो है।

एक दिन राजू खेत गयाडो हो। जीवणजी मौको देख र पाना कनै आयो अर पूछ्यो अरे खसमरोवणी राड तू म्हारो बडो जुलम कर र माखी दायीं मसळ र भाठै दायीं गिटगी । अरे राड आ तो पक्की बात है कै बै दोनू अबै ताईं कठैई मर-खपगी हुवैला। अर जे बै कठैई जीवती हुवती तो म्हैं उणा नै बिल माय सू काढ ल्यावता पण तू म्हनै क्यू नीं बताया ? धिरकार है थारै घराणै नै अर धूड है थारै माइता रै माजनै मे जिको तनै म्हारै लारै लगाई अर तू राड बुढापै म म्हारै घर री ऐन नै ताड दी। जे बा छारी कठैई जीवती हुवैला तो राड म्हारी तो सात पीढ्या इ डूब जावैली अर म्हैं ता जीवता ई मरग्यो । जीवणजी पछतावै म गैलै छपै दायीं धुसणनै लाग्या।

पाना जीवणजी नै कैयो 'जे आप नै आ पक्का भरोसा है कै बै कठैई मरगी

हुवैला ता अबै चुप कर र बठ्यै म इ सार है। अर जे अप राजू नै इण वार म तंग करया ता अ तूतडा भी हाथ सू निकळ जावला अर अपा इ नीं आ धरती रैवैली उण टैम ताईं अपण मसाण धुसैला।

पाना री इण धमकी सू जैजणजी डरग्या। क्यूंकै वा राजू री साम सास मथै अपण प्राण निछावर करता हा। उण नै राजू म आपरो वंस अर नावगो दीसे हो। अर वा राजू नै उण दिन पछै कीं नीं कैयो।

इण भात दिन महिना अर वरस बीतण्नै लग्या। पण राजू रै मन माय एक ई बात लगयोड़ी ही कै म्हारी वैन जीवै है उण नै ढूंढू तो कठै ढूंढू ?

तेरह

अडीनै नेणाऊ गाव म सावणियै री तीज रा तिवार हा। मखमल दायी कवळी हरी हरी घास खुली अर साली ठौड़ा माथै पसरयोडी ही। खेता मे हरियाळी ही। दो-दो ढाई-ढाई बिलात उग्योडो काचो-करस धान हो। गाव अर रोही रै रूखा माथै छायोडी हरियाळी लागा रै मना माय एक अणूतो हरख जगावै ही। अर उणा रै मन नै लुभा-लुभा र जावै ही।

गाव रै गोरवै जठै गोगोजी भैरूजी भोमियोजी रामदेवजी जैडै देवतावा रा येजड्या रै नीचै छोटै-छोटै कच्चै चबूतरा माथै कच्ची ईंटा रा छोटा-छोटा थान बण्योडा हा उणा मू की अळघा पण निरवाळी ठौड़ माथै नीम रै एक जूनै पेड रै डाळै सू, बाइ लाडकवर खातर ठाकर कानी सू हींडा लगायोडा हा।

उण दिन मनभीवणो समो हो। आभै मे सावण रै बादळा रा लोर आवै हा अर जावै हा। झीणै-झीणै बायरियै रै सागै ऐडा बादळ, आपरी फुवारा सू, हींडो हींडती छोरया सागै जाणै अचपळाया कर रैया हा।

सुरग सू उतरयोडी परी-सी रूप री निधान गुणा री कुज रग री राजा नाक नक्स री बणगत नै वेमाता जाणै बैठै बगत म बैठ र घडी हुवै अर गुलाब रै फूल दायी दीखण म कवळी बाई लाडकवर आपरो सोळवो सावण पूरो कर चुकी ही। बा आपरी महल्या रै सागै हींडो हींड रैयी ही। हींडो हींडती छोरया कदैई आपस मे खिल-खिल हसै ही तो कदैई बै एक-दूजी रै गिलगिल्या करै ही।

एडै मौके माथै पडौसी गाव रै ठाकर रो बेटो विजयसिंह छडछडीलै डील रो तीखै नाक-नक्स रो गोरै निछौर रग रो हळकी-हळकी मूछा रो कद रो पूरो चैरै सू हसमुख घोडै पर चढयोडो उणा रै सामीं इण भात आय र खडयो हुयग्यो जाणै बादळा री ओट सू चाद निकळग्यो हो।

लाडकवर अर विजयसिंह री एक-दूजै सू निजरा मिळी। पलक झपकतै ई

छिण माय एक-दूजै नै इण भात लखायो जाणै दोनू ई एक-दूजै रै हेत रा तिस्सा है। लाडकवर बोली आप कुण हो ? अर आप अठ किया आया ? आप नै इण बात रा ध्यान नीं है कै सावण रै महीनै मे जठ छोरया हींडो हींडै उठै किणी मरद नै नीं आवणा चाईजै ।'

विजयसिह चुपचाप खड्यो हो। बो लाडकवर रै रूप नै आपरी आस्या सू, आपरै काळजै माय उतार रैया हो।

इतरै म लाडो री एक सहेली बाली अरे आप गूगा हो का बाळा ? काई देखा हो फाड-फाड डोळा ? अबै अठै सू पधारो नीं तो मार-मार । दूजी सगळी सहेल्या खिल-खिल हसणनै लागी।

पण विजयसिह उणी मुद्रा माय चुपचाप खड्यो लाडो रै रूप नै निरख रैयो हो। उण नै लखायो जाणै उण माथै जादू हुयग्यो है।

लाडो खिल-खिल हसती छोरया नै चुप राखती थकी कैयो हेमली। इण भात कोई गेलै चालतो बटाऊ जे भूल र अठै आयग्यो है तो उण री हसी नीं उडावणी चाईजै। पछै लाडो उण रै घोडै री लगाम पकड र बोली 'इण भात लात मारणी चाईजै । अर लाडो विजयसिह रै घोडै रै ऐडी लात मारी जिण सू घाडो इतरै जोर सू भाग्यो कै विजयसिह घोडै सू हेठै पडतो-पडतो बच्यो। उण रो घोडो जार सू भागतो जाय रैयो हो अठीनै छोरया खिल-खिल हस रैयी ही। विजयसिह मुड-मुड छोरया कानी देख रैयो हो।

खेल-कूद र लाडो अर उण री सहेल्या आप-आपरै घरै आयगी। अबै लाडो रै ठैर-ठैर घुडसवार री सूरत मूढै सामीं आवणनै लागी। उण सू रात निकळणी ओखी हुयगी। उण नै लाग्यो बो घुडसवार उण रै काळजै अर हिवडै मे ई नीं समायो है बल्कि उण रै रू-रू मे समायग्यो है। बा आपरै बिछावणै मे पसवाडा माथै पसवाडा फोरण नै लागी। उण री हालत पाणी सू निकाळ्योडी मछली दायीं हुय रैयी ही। बा जठीनै देखै बठीनै ई उण नै बो घुडसवार मुळकतो दीखै। लाडो री ऐडी हालत देख र उण री मा पूछ्यो 'काई बात है बेटा आज थारो जीव-सौरो कोनी काई ? ठकराणी उण नै आपरै ढोलियै माथै सागै सुलावती छाती सू चिपावती बोली 'म्हारी लाडकवर नै किणी री निजर लागगी काई ? अबै म्हैं इण नै हींडो हीडणनै नीं जावण देऊली।

आपरी मा री ऐडी बात सुण र लाडो झिझक र बोली 'नीं मा सा म्हैं हींडो हीडण नै तो जाऊली। म्हनै ब्होत आछो लागै है। म्हनै नींद इण कारण सू ई नीं आय रैयी है कै कद दिन ऊगै अर कद म्हैं हींडो हींडणनै जाऊ ?

ठकराणी उण नै इण भात थपथपावणनै लागी जाणै छोटै टाबर नै थपथपाया करै है अर बोली अच्छा अच्छा अबै तू थोडी-सी नींद लेयलै।'

पण नींद किण नै आवै ही। बा आपरी मा ठकराणी रै सागै आख मीच्याडी सूती रयी अर उण घुडसवार रै सागै मन रे मनसूबा माय खेलती रैयी।

उठी नै घुडसवार विजयसिंह आखी रात आख्या माय सू जागतो काढ रैयो हो। बो सोच रैयो हो के कद तो दिन निकळै ? अर कद बो उण गाव री हींडो हींडती उण छोरी नै फेरू देखै ? जिकी उण रा काळजो काढ र लेयगी।

लाडो बाप री लाडेसर ही। बाप ठाकर सुल्तानसिंह लाडो नै घुडसवारी ऊठ सवारी अर बदूक चलावणी आछी तरया सू सिखायदी ही। घर मे बरस डढेक पैली साळै बनेसिंह री भेज्योडी जीप नै चलावणै जैडे करतबा नै भी बा इतरै सातरै ढग सू सीख लिया हा कै बा आछै-आछै जवाना रा छक्का छुडाय देवती ही। निसाणैबाजी मे तो लाडो रो निसाणो अचूक हो।

लाडो रा ऐडा करतब उण री अल्हड जवानी हाथ काळजै घालै जैडो रूप अर बैवती नदी रै चचळ जळ दायीं उण री चचळाटी माथै आपै गाव अर असवाडै-पसवाडै रै गावा माय रोज चरचा हुवती ही। लाडो री बाता नै सुण-सुण लाग आप-आपरै मूढा माय आगळी घाल लेवता हा।

विजयसिंह रा गाव लाडो रै गाव सू पाच-सातैक कोस दूर हो। इण दोनू गावा रै बिचाळै रेत रा धोरा पसरयोडा हा। अर कठैई-कठैई खेजड्या ही। विजयसिंह रै गाव म भी लाडो री घणी चरचा ही। पण विजयसिंह इण रै बाबत कीं नीं जाणता हो। क्यूकै बो स्हैर मे पढतो-पढतो फौज री नौकरी मे चल्यो गयो हा। उठै किणी बडै ओहदै माथै हो। अबकै कई बरसा पछै बो आपरै माईता सू मिलणनै छुट्टी आयोडो हो। चौमासै रो बगत हो अर उण री कीं भैंस्या-गाया लीलो चरती-चरती कठीनै ई निकळगी ही। उणा नै जोवता-जोवतो विजयसिंह उण दिन हींडो हींडती नैणाऊ गाव री उण छोरया रै बिचाळै चल्यो गयो हो जठै बो आपरो दिल लाडो नै देय बैठयो हो।

विजयसिंह आ भी नीं जाणतो हो कै ठाकर सुल्तानसिंह रो ठिकाणो अर घराणो विजयसिंह रै घराणै सू ऊचो है। लाडो नै भी घर-घराणै री ऐडी जाण-चीण नीं ही। उण दोनुवा म हेत-प्यार हुवणो हो जिको उणा री पैली मुलाकात माय ई हुग्यो हो।

अबै लाडो दूजै दिन हींडो हींडणनै आई अर उण भात ई विजयसिंह भी उठै आयग्यो। दोना नै एक दूसर रै बारै म जाणकारी हुई। अर उणा रो इण भात हींडै

र मिम रान मिलणा सरू हुयग्यो। पण हेत री सुगध तो फॅल्या बिना नीं रवै। धीरै धीरै आ बात सगळै गाव मे अर गढ ताई पूगगी। ठाकर सुल्तानसिह लाडो माथै गट सू बारै जाअणै री रोक लगाय दी।

चैत रा मदीनो अर गणगौर रो मेळो हा। सेठ दुलीच द कानी सू इण माथै सरजाम हुवता रैयो है। इण बार भी उण कानी सू सागीडो सरजाम हो। नैणाऊ गाव रै गणगौर मेळै माय असवाडै-पसवाडै रै गावा रा लोग आवै। अर उठै घुड दाड ऊठ-दौड कुस्त्या कवड्डी जॅडै खेला माय लोग आप आपरा करतब दिखावै। सेठ दुलीच द कानी सू जीतणआळै नै सातरा इनाम दिरीजै।

इण बार मेळो देखण सातर ठाकर रो बेटो गोपाळसिह भी मुम्बई सू आयाडो हो। इण मेळै माय विजयसिह भी आयो हो।

ठाकर लाडो नै मेळै मे जावण खातर मना करदी तो गोपाळ आपरै बाप नै कैयो 'जी सा म्है इतरै बरसा सू मेळो देखणनै अर म्हारी बैन री बहादुरी देखणनै आयो हूँ। इण खातर म्है उठै सू घुडसवारी ऊठसवारी अर निसाणैबाजी री बेळा पैरण रा खास कपडा लाडो खातर लेय र आयो हूँ। अर आप इण नै मेळै माय जावण खातर मना कर रैया हो ? नीं जी सा म्हैं म्हारी बैन नै मेळै माय सागै लेय र जावूला। उठै इण रा करतब देखूला। पछै इण री सोभा तो घणी-घणी दूर ताई हुय रैयी है। लोग आ सोचैला कै अबकै लाडकॅवर रो भाई मुम्बइ सू आयोडो है। बो आपरी बैन नै ई सागै नीं ल्यायो है। आप तो जाणो हो कै म्हे तो मुम्बई रा लोग हाँ। म्हारा तो लडक्या खातर खुला विचार है। बो लाड मे ईतरयोडै टावर दायीं आपरी बात कैयी।

गोपाळसिह नै ठाकर आप सू इतरी खुली बात करता देख र करडी निजरा सू कैयो 'कवर सा आप आपरै खुतै विचारा नै अर आपरी मुम्बई नै आप ताई राखो। म्हारै अठै आवा उण टैम इण विचारा नै आप भेळा कर र आपरी गोजी मे घाल लिया करो मयरदार है जे म्हारै घर-घराणै री आण बिचाळै भठै कदैई कीं कैयो तो म्हारै सू बुरो नीं हुवैला।' ठाकर रीस माय खासो लाल हुयग्यो हो।

गोपाळ भी तो टावर ई हो। बाप रै रुख नै समझ र आगै कीं नीं कैयो। पण बो आपरै मन माय आ पक्की धारली कै लाडो जावैली तो ई मेळो देखणनै जाऊला नीं तो नीं जाऊला।

अबै ठकराणी अर हीराबाइ दोनू इ ठाकर नै मनावणै मे लागयाडी ही पण ठाकर मान नी रैयो हो। इतरै मे सेठ दुलीच द गढ म आयो अर बोल्यो 'ठाकर सा मेळो देखणनै पधारो सा। अबकै आप अर आप रै रणवास खातर म्हैं खास सरजाम करयो है।

ठाकर सेठ दुलीचन्द नै मना नीं कर सक्यो। पण बो इतरो कैया 'सठा आप तो चाला हा पण ठकराणी सा अर लाडकवर चाल र काईं करसी ?

सेठ बोल्यो 'कवर गोपाळसिह आयोडा है उणा नै ता सागै लैवो।

ठाकर बोल्या 'उण नै आप केवो ता बो स्यात आपणै सागै चालै।

ठाकर घर रो बात नै सेठ सू छिपावण री चस्टा करी। पण सठ निण टैम गोपाळसिह कनै गयो तो बो गळगळा हुय र सेठ नै सगळी बात बतावता थका कैयो 'बाबोसा म्हैं तो म्हारी बन खातर ई मुम्बई सू आयो हूँ अर जी सा इण न मळै मे जावणे सू मना कर रैया है।

सठ थोडै कैयोडै म ई सगळी बात समझग्या अर सगळा नै ठडा-मीठा कर र आपरै सागै लेय र मेळे कानी बहीर हुयग्यो। सगळा ई ठाकर री जीप मे बैठग्या। टुरती बळा गोपाळ धनजी नै कैया धनजी आप आपणै गढ सू घोडै अर ऊठ नै ढग सू सजा र दौड री ठोड पूगाला सा।

लाडो रै नीली जीन री पैट ऊपर गैरै लाल रग रा कुडतो आख्या माथै काळो चस्मा अर खुला केस। ऐडा ई बढिया गाभा गोपाळसिह रै परणनै हा। इण दोनू बैन-भाया नै देखणनै सगळो मेळो उणा रै आसै-पासै भेळो हुयग्या। असवाडै-पसवाडै रे गावा सू आयोडा लोग सोच रैया हा कै ऐ स्यात बारै सू आयोडा लोग है।

ठकराणी अर हीराबाई रै बिचाळै लाडो बैठी ही। ठाकर अर सेठ बिचाळै गोपाळसिह बैठयो हो।

मेळै मे सागीडी भीड ही। लोग-बाग आप-आपरै ऊठा घोडा नै सजायोडा दौड खातर त्यार हा। दौड सरू हुवणै सू पैली लोगा नै एक जणो जार सू कैयो कै इण बार तीन-चार साला पछै गाव रै ठाकर सुल्तानसिह री बेटी लाडक्वर दौड रै मुकबला म भेळी हुवैली।

अबै विजयसिह रो हाल ऐडो हुय रेयो हो कै उण रो बखाण नीं कियो जा सकै। बो आपरै घोडै नै लियोडो उण घडी री उडीक मे हो जद बा आपरी लाडो नै आपरै घोडै माथै करतब दिखावै।

अठीनै जोग-सजोग सू आपरै दादै जीवणजी सू आलै-छानै राजूसिह उणी दिन नैणाऊ गाव मे आपरी बैन नै ढूढतो-ढूढतो पूग जावै है। उण नै आपरो घर छाड्या नैं ढाई मईना सू ऊपर हुयग्या हा। गाव रै भोळै-भाळै राजूसिह खातर ओ समझणो तो दूर रैया बा एडी कल्पना भी नीं कर सक हा कै उण री बैन इतरै बडै ठिकाणै म इण भात है। बो ता उण भीड म खड्यो हो जिकी ठाकर अर ठाकर रै परिवार नै देख रैयी ही।

थाडी ताळ म दौड सरू हुई। लोग-बाग ठाकर री बेटी रो मुकाबलो देखणनै घणाई उतावळा हुय रैया हा। अबै बा घडी भी आई। लाडो किणी ने ई जीतणै नीं देय रैयी ही। अर बा सगळै हारणआळै सवारा रै आपरै हाथा सू राखी बाध रैयी ही।

लाग-बाग लाडो री दौड करतब अर रूप-रग नै देख र अपणै आपनै भूल रैया हा। लाडो हर दौड मे जीत रैयी ही। अर हर दौड मे हारणैआळै रै राखी बाध रैयी ही।

राजूसिह रा मन हुयो कै म्है इण रै सागै दौड़ अर इण सू राखी बधाऊ। पण म्हारै कनै तो ऊठ ई कोनी। बो एक जणै रै सामीं हाथा-जोडी कर र ऊठ माग्यो अर उण री दौड मे सामल हुवणनै त्यार हुयो।

अठीनै गोपाळसिह मन माय आ सोच रैयो हो कै आज इण भरै मेळै माय जिको म्हारी बैन नै हरा देवैलो म्है उण रै सागै ई म्हारी बैन रो ब्याव करूला जचै बो किणी जात रो हुवै। जे म्हारो बाप इण बात नै नी मानसी तो ई म्हैं मरजाद अर सगळै बधना नै तोड र एक मिसाल कायम करूला कै आदमी री जात-पात क्यूँ नीं हुया करै है। उण रा गुण अर करतब ऊचा हुवणा चाइजै। गोपाळसिह इण विचारा माय डूब्योड़ो हो। अठीनै राजू अर लाडो बिचाळै ऊठ री दौड मे अबै ताई हुयोडी सगळी दौडा सू तकडी अर लूठी दौड हुय रैयी ही। लाडो राजू सू हारणआळी ही पण राजू नै ध्यान आयो कै उण नै इण सू राखी बधावणी है अर बो जाणबूझ र लाडो सू हारग्यो।

अबै लाडो उण रै राखी बाध रैयी ही तो उण रा हाथ धूज रैया हा अर राजू उण रै चैरै सामीं देख रैया हो। उण नै लखायो कै इण छोरी नै तो म्हैं सुपनै मे देखी ही। पण बो इण नै आपरा वैम समझ्यो अर बात आई-गई हुयगी।

अबै घुडदौड मे लाडो रो विजयसिह सू मुकाबलो हो। विजयसिह फौजी जवान हो। डील मे घणी फुरतीआळो हो। उछळ-कूद मे उण रा कोई मुकाबलो नीं हा। पण घुडदौड म लाडो उण सू कितरा ई गुणा तेज ही। लाडो रो घोडो हवा दाई वैय रैया हो। देखणिया लोग ताळ्या री गडगडाट सू लाडो रो हौसलो बधा रैया हा। पण लाडो जाण-बूझ र विजय सू हारगी।

विजय रै गाव रा लोग अर दूजै गावा रा लोग विजय नै काधा माथै उठा लिया अर उण री जय-जयकार करणनै लाग्या।

लाडो हँसतै-रमतै चैरै सू आपरै मा-बाप रै कनै गई। उण रा चरण छूया। वै लाडो नै असीस दी। उण रा लाड करया।

ठाकर सेठ दुलीचन्द न मना नीं कर सक्या। पण बो इतरा कैयो 'सेठा आपा तो चाला हा पण ठकराणी सा अर लाडकवर चाल र काई करसी ?

सेठ बोल्यो 'कवर गोपाळसिंह आयोड़ा है उणा नै ता सागै लैवो।

ठाकर बोल्या 'उण नै आप कैवो ता बो स्यात आपणै सागै चालै !

ठाकर घर री बात नै सेठ सू छिपावण री चेस्टा करी। पण सेठ जिण टैम गोपाळसिंह कनै गयो तो बो गळगळो हुय र सेठ नै सगळी बात बतावता थका कैया 'बाबोसा म्हे तो म्हारी बैन खातर इ मुम्बई सू आयो हूँ अर जी सा इण नै मेळै म जावणै सू मना कर रैया है।

सेठ थोड़ै कैयाडै म ई सगळी बात समझग्यो अर सगळा नै ठडा-मीठा कर र आपरै सागै लेय र मठै कानी बहीर हुयग्यो। सगळा ई ठाकर री जीप मे बैठग्या। दुरती बळा गोपाळ धनजी नै कयो धनजी आप आपणै गढ सू घोडै अर ऊठ नै ढग सू सजा र दौड री ठौड पूगोला सा।

लाडो रै नीली जीन री पैट ऊपर गैरै लाल रग रो कुड़तो आख्या माथै काळो चस्मो अर खुला केस। एड़ा ई बढिया गाभा गोपाळसिंह रै परणनै हा। इण दोनू बैन-भाया नै देखणनै सगळो मळो उणा रै आसे-पासै भेळो हुयग्या। असवाड-पसवाडै रै गावा सू आयाडा लोग सोच रैया हा कै ऐ स्यात बारै सू आयोडा लोग है।

ठकराणी अर हीराबाई रै बिचाळै लाडो बैठी ही। ठाकर अर सेठ बिचाळै गोपाळसिंह बैठ्या हो।

मेळै म सागीडी भीड ही। लोग-बाग आप-आपरै ऊठा घोड़ा नै सजायोडा दौड खातर त्यार हा। दौड सरू हुवणै सू पैली लोगा नै एक जणो जोर सू कैयो कै इण बार तीन-चार साला पछै गाव रै ठाकर सुल्तानसिंह री बेटी लाडकवर दौड रै मुकबला म भेळी हुवैली।

अबै विजयसिंह रो हाल ऐडो हुय रैयो हो कै उण रो बखाण नीं कियो जा सकै। बा आपरै घोडै नै लियोडो उण घडी री उडीक मे हा जद बो आपरी लाडो नै आपरै घोडै माथै करतब दिखावै।

अठीनै जोग-सजोग सू आपरै दादै जीवणजी सू ओलै-छानै राजूसिंह उणी दिन नैणाऊ गाव म आपरी बैन नै ढूढतो-ढूढता पूग जावै है। उण नै आपरो घर छोड्यै नै ढाई मईना सू ऊपर हुयग्या हा। गाव र भाळै-भाळै राजूसिंह खातर ओ समझणा ता दूर रैया बो एडी कल्पना भी नीं कर सकै हा कै उण री बैन इतरै बडै ठिकाणै म इण भात है। बा तो उण भीड म खड्यो हो जिकी ठाकर अर ठाकर रै परिवार नै देख रैयी ही।

धाड़ी ताळ में दौड़ सरु हुई। लोग-बाग ठाकर री बेटी रा मुकाबला देखणनै घणाई उतावळा हुय रैया हा। अबै बा घड़ी भी आई। लाडो किणी नै इ सैतो नीं दय रैयी ही। अर बा सगळे हारणआळै सवारा रै आपरै हाथा सू राखी बांध रैयी ही।

लाग-बाग लाडा री दौड बरतब अर रूप-रंग नै देख र अपणे आपनै भूल रैया हा। लाडो हर दौड मे जीत रैयी ही। अर हर दौड मे हारणैआळै रै राखी बांध रैयी ही।

राजूसिंह रो मन हुयो कै म्है इण रै सागै दौडू अर इण सू राखी बंधाऊ। पण म्हारै कनै ता ऊठ ई कोनी। वो एक जणै रै सामीं हाथा-जोडी कर र ऊठ मांगो अर उण री दौड मे सामल हुवणनै त्यार हुयो।

अठीनै गोपाळसिंह मन माय आ सोच रैयो हो कै आज इण भरै मेळै माय जिको म्हारी बैन नै हरा देवैलो म्हैं उण रै सागै ई म्हारी बैन रो ब्याव करूला चवै बो किणी जात रो हुवै। जे म्हारो बाप इण बात नै नीं मानसी तो ई म्हैं मरजाद अर सगळै बधना नै तोड र एक मिसाल कायम करूला कै आदमी री जात-पात कीं नीं हुया करै है। उण रा गुण अर करतब ऊंचा हुवणा चाईजै। गोपाळसिंह इण विचारा माय डूब्योडो हो। अठीनै राजू अर लाडा विचाळै ऊठ री दौड म अबै ताई हुयोडी सगळी दौडा सू तकडी अर लूठी दौड हुय रैयी ही। लाडो राजू सू हारणआळी ही पण राजू नै ध्यान आयो कै उण नै इण सू राखी बंधावणी है अर वो जाणबूझ र लाडो सू हारग्यो।

अबै लाडो उण रै राखी बांध रैयी ही तो उण रा हाथ धूज रैया हा अर राजू उण रै चैरै सामीं देख रैयो हो। उण नै लखायो कै इण छोरी नै तो म्हैं सुपनै म देखी ही। पण वो इण नै आपरो वैम समझ्यो अर बात आई-गई हुयगी।

अबै घुडदौड मे लाडो रो विजयसिंह सू मुकाबलो हो। विजयसिंह फौजी जवान हो। डील मे घणी फुरतीआळो हो। उछळ-कूद मे उण रो कोई मुकाबलो नीं हो। पण घुडदौड म लाडो उण सू कितरा ई गुणा तेज ही। लाडो रो घोडो हवा र्दै बैय रैया हा। देखणिया लोग ताळया री गडगडाट सू लाडा रो हौसलो बधा रैया हा। पण लाडो जाण-बूझ र विजय सू हारगी।

विजय रै गाव रा लोग अर दूजै गावा रा लोग विजय नै कांधा माथै उठा लियो अर उण री जय-जयकार करणनै लाग्या।

लाडो हँसतै खिलतै चैरै सू आपरै मन-बाग रै कनै गई। उण रा परण पूरा। वै लाडो नै असीस दी। उण रो लाड करयो।

ठाकर लाडो री हार रो कारण साफ ताडग्यो। बा जाण हो कै लाडो विजय सू जाण-बूझ र हारी है। पण इण कारण नै हीराबाई गोपाळसिंह अर ठकराणी नीं समझ सक्या।

सेठ दुलीचन्द जीत्योडै लाग़ा नै ठाकर रै हाथा सू इनाम दिरवा रयौ हो। उण टेम गोपाळसिंह विजयसिंह नै पूछ्यो आप कठै रा हो ? आप रा काई नाव है ?

विजयसिंह बतायो 'म्हें आप रै पडासी गाव रै ठाकर रो बेटा हूँ। फौज मे लफ्टीनैन्ट हू। इण दिना म्हैं छुट्टी आयाडो हूँ।

गोपाळसिंह मन म राजी हुयो कै अबै बो आपरै बाप नै बेधड़क हुय र कैय सकैलो कै बाई रो हाथ इण राजपूत फौजी जवान रै हाथा माय देयद्यो। जद गोपाळसिंह आपरै बाप नै इण बाबत कैयो तो ठाकर साव टक्को-सो उथळो देवता थका कैयो 'गोपाळसिंह तू टाबर है। तनै इण मामलै म कीं नीं बोलणो चाईजै।

बाप रो ऐडो उथळो सुण र गोपाळसिंह उतर्योडै मूढै सू आपरी मा अर हीराबाई कनै आय र बैठग्यो। ठकराणी जद उण नै उदासी रो कारण पूछ्यो तो गोपाळसिंह बतायो कै जी सा रो कैवणो है कै बे बाई लाडो रो हाथ उण फौजी राजपूत रै हाथा मे नीं देवैला जिको बाई सू इण दौड माय जीत्यो है। क्यूकै उण रो ठिकाणो अर घराणो आपणै सू नीचा है। लाडो भी उठै ई ग्वडी गोपाळसिंह री बाता सुण रैयी ही। ठकराणी अर हीराबाई रै कीं कैवणै सू पैली ई लाडो गोपाळसिंह नै धीरज सू समझावता थका कैयो भाई सा आप भी भली चिंता कर रैया हो ? जिका माईत बेटी री इच्छा माथै अकुस राखै जिका आपरी जाम्योडी बेटी नै एक जिनावर सू बेसी कीं नीं समझै उण नै आपरी मनस्या सू चावै जिकै खूटै सू बाध देवै जठै बा ऊमरभर का तो भूखी मरै का उण माथै लाठ्या टूटै पण उण माईता नै इण री कीं चिंता नीं हुवै क्यूकै उण माईता नै घर-घराणो देख र बेटी देवणी हुवै है बेटी री मनस्या अर उण रै भलै-बुरै री नीं सोचणियै माईता री बेटी आपरी जवानी नै माम दाग़ी गाळ देवै जद ताईं उण नै घर-घराणो नीं मिळै। म्हैं ई तो ठाकर सुल्तानसिंह रै घराणै रो खून हूँ। बै म्हनै जिण खूटै सू बाधैला म्हैं उणी खूटै सू बधूली म्है म्हारै जी सा री मरजी मुजब ई राजी हू। आप इण री कीं चिंता नीं करा।

ठाकर होको लियोडो रावळै रै बारै सड्यो लाडो रै मूढै सू ऐडी सगळी बाता चुपचाप सुण रैयो हो। इण बाता सू ठाकर रो मन पिघळग्यो।

ठाकर मन मे सोच्यो कै जिण अणजाण जिलफ नै तू मन माय पीडा झेल र

कटजै रै टुकडै दायीं पळी है। जिण नातर तू अणभारया दुस उठाया है ।
अज उण रा मन रासणा थारा धरम है। पछै इण रा कैवणो साव साचा है कै घर
मय जलमाडी बेटी जिनाउर दायीं नीं हुवै ह जिकी नै माईत चावै जिकै खूटै सू
बध देवै ।

ठाकर रै मन माय विचार आया क जिका माइत घर-घराणा अर ऊच-नीच
रा हाड-साप अर घराणै री आण-बाण नै लेय र बेटया रा साख-सबध टाबर रै
गुण औगुण नै देख्या बिना ई करै है उण रा नतीजा ऐडा हुया है कै कितरा ई
घराणा पणी रै रेळै वैयग्या है अर कितरा ई घराणा बरबाद हुयग्या है। अवै
वगत है घराणा री ऊच-नीच अर छोटै-वडै री धारणा नै मेटणै रो।

ठाकर एडै विचारा मे उळझ्योडो आपरी बैठक म आय र बैठग्यो। बो
रावळै मे नीं गयो अर आपरो होको हुडहुडावणनै लाग्यो। ठाकर मन-ई-मन
आपरो फैसलो बदळ लियो। पण या आपरै बदळयोडै फैसले नै किणी सू ई कैवणो
नीं चावै हो। बो अजू ई चावळ री कीणी नै पूरी सीज्योडी देखणी चावै हो।

ठाकर रै गाव मे लाडो नै लेय र बाता हुवणनै लागी कै आपणै गाव रै
ठाकर री बेटी एडी तगडी हुवैला कुण जाणतो हो ? पण उठै ई कई जणा कैय
रैया हा कै आ आपणै गाव रै ठाकर री बेटी नीं है। इण लागा रै बिचाळै रामूडो
नाई भी चुपचाप खडयो हो। अर जिका हमीदा नै पैलडै दिन ठाकर रो गह बतायो
हो उण रो नाव हरखियो हो बो भी उठै ई खडयो हो। हरखियो बोल्यो भाईडा
ठाकर री इण बेटी रै बारै म दाळ मे कीं काळो है। क्यूकै आज सू दस-पन्दरै
बरसा पैली म्हैं एक लुगाई नै देखी जिण रै सूथण पैरयोडी ही अर उण कनै गाभा
माय लपटयोड़ा एक टाबर भी हो। उण लुगाई नै म्हैं गढ रो गेलो बतायो हो। उण
नै म्हैं गढ म बडती भी देखी ही। पण गढ सू निकळती नै कोई नीं देखी।

एक जणो विचाळै ई बोल्यो 'हरखिया थारी तो वागजाळ अर अचपचोळी
बाता करतै-करतै री सगळी ऊमर बीतगी। अर अजू ई तू उणी ढग री बाता कर
रैयो है। वडती नै देखी अर निकळती नै नीं देखी अबै पदाईस बरसा पछै
ऐडी बाता रो काई मतलब है ?

उठै खड्या लोग हरखियै री खिल्ली उडावणनै लाग्या। इतरै मे सेठ
दुलीचन्द री हवली सू धनजी दरोगा आवतो दीस्यो। बै लोग बोल्या आज धनै नै
पकड र पूछो कै जिकी ठाकर रै घर मे बेटी है बा किण री है ? अर वै सगळा
मोथा मिल र धनजी नै रोड लियो।

धनजी ठाकर रै जोर माथै अकड र बोल्यो आप सगळा बोका हो का गैला

ठाकर लाडो री हार रो कारण साफ ताडग्यो। बा जाणै हा कै लाडा विनय सू जाण-बूझ र हारी है। पण इण कारण नै हीराबाई गोपाळसिह अर ठकराणी नीं समझ सक्या।

सेठ दुलीचन्द जीत्योडै लोगा नै ठाकर र हाथा सू इनाम दिरवा रैयो हो। उण टैम गोपाळसिह विजयसिह नै पूछ्यो आप कठै रा हो ? आप रा काई नाव है ?

विनयसिह बतायो 'म्हे आप रै पडासी गाव रै ठाकर रा बटो हूँ। फौज म लेफ्टीनैन्ट हू। इण दिना म्हैं छुट्टी आयोडा हूँ।

गोपाळसिह मन मे राजी हुयो कै अब बो आपरै बाप नै बेधडक हुय र कैय सकैला कै बाई रो हाथ इण राजपूत फौजी जवान रै हाथा माय देयद्यो। जद गोपाळसिह आपरै बाप नै इण बाबत कैयो तो ठाकर साव टक्को-सा उथळा दवता थका कैया 'गोपाळसिह तू टाबर है। तनै इण मामलै म कीं नीं बालणो चाईजै।

बाप रो एडो उथळो सुण र गोपाळसिह उतरयोडै मूढै सू आपरी मा अर हीराबाई कनै आय र बैठग्या। ठकराणी जद उण नै उदासी रो कारण पूछ्या तो गोपाळसिह बतायो कै जी सा रो कैवणो है कै बै बाई लाडो रो हाथ उण फौजी राजपूत रै हाथा म नीं देवैला जिको बाई सू इण दौड माय जीत्यो है। क्यूकै उण रो ठिकाणो अर घराणो आपणै सू नीचो है। लाडो भी उठै ई खडी गोपाळसिह री बाता सुण रैयी ही। ठकराणी अर हीराबाई रै कीं कैवणै सू पैली ई लाडो गोपाळसिह नै धीरज सू समझावता थका कैयो भाई सा आप भी भली चिता कर रैया हो ? जिका माईत बेटी री इच्छा माथै अकुस राखै जिका आपरी जाम्योडी बेटी नै एक जिनावर सू बेसी कीं नीं समझै उण नै आपरी मनस्या सू चावै जिकै खूटै सू बाध देवै जठै बा ऊमरभर का तो भूखी मरै वा उण माथै लाठ्या टूटै पण उण माईता नै इण री कीं चिता नीं हुवै क्यूकै उण माईता नै घर-घराणा देख र बेटी देवणी हुवै है बेटी री मनस्या अर उण रै भलै-बुरै री नीं सोचणियै माईता री बेटी आपरी जवानी नै मोम दायीं गाळ देवै जद ताईं उण नै घर-घराणो नीं मिळै। म्हे ई तो ठाकर सुल्तानसिह रै घराणै रो खून हूँ। बै म्हनै जिण खूटै सू बाधैला म्हैं उणी खूटै सू बधूली म्हैं म्हारै जी सा री मरजी मुजब ई राजी हू। आप इण री कीं चिता नीं करो।

ठाकर होको लियाडो रावळै रै बारै खड्यो लाडो रै मूढै सू ऐडी सगळी बाता चुपचाप सुण रैयो हो। इण बाता सू ठाकर रो मन पिघळग्यो।

ठाकर मन म सोच्यो कै जिण अणजाण जिलफ नै तू मन माय पीडा झेल र

काळनै रै टुकडै दायी पाळी ह। जिण खातर तू अणभाया दुख उठाया है ।
आज उण रा मन राखणा थारा धरम है। पछै इण रा कैवणो साव साचो है कै घर
मय जलम्याडी बेटी रिनावर दायी नीं हुव ह जिकी नै माईत चावै जिकै खूटै सू
बाध देवै ।

ठाकर रै मन माय विचार आया कै जिका माइत घर-घराणा अर ऊच-नीच
का हाड-खाप अर घराणै री आण-बाण नै लेय र बेटया रा सात्र-सबध टाजर रै
गुण-औगुण न देख्या विना ई करै है उण रा नतीजा ऐडा हुया है कै कितरा ई
घराणा पाणी रै रळै वैयग्या है अर कितरा ई घराणा बरबाद हुयग्या है। अबै
वगत है घराणा री ऊच-नीच अर छोटै-बडै री धारणा नै मटणै रो।

ठाकर ऐडै विचारा मे उळझ्योडो आपरी बैठक मे आय र बैठग्यो। बा
रावळै म नीं गयो अर आपरो होको हुडहुडावणनै लाग्यो। ठाकर मन-ई-मन
आपरा फैसलो बदळ लिया। पण वो आपरै बदळ्योडै फैसले नै किणी सू ई कैवणो
नीं चावै हा। बो अजू ई चावळ री कीणी नै पूरी सीज्योडी देखणी चावै हो।

ठाकर रै गाव मे लाडो नै लेय र बाता हुवणनै लागी कै आपणै गाव रै
ठाकर री बेटी ऐडी तगडी हुवेला कुण जाणतो हो ? पण उठै ई कई जणा कैय
रैया हा कै आ आपणै गाव रै ठाकर री बेटी नीं है। इण लोगा रै विचाळै रामूडा
नाई भी चुपचाप खडयो हो। अर जिको हमीदा नै पैलडै दिन ठाकर रो गढ बतायो
हो उण रा नाव हरखियो हो बो भी उठै ई खडयो हो। हरखियो बोल्या भाईडा
ठाकर री इण बटी रै बारै म दाळ म की काळो है। क्यूकै आज सू दस-पन्दरै
बरसा पैली म्है एक लुगाई नै देखी जिण रै सूथण पैर्योडी ही अर उण कनै गाभा
माय लपट्योडो एक टाबर भी हो। उण लुगाई नै म्है गढ रा गेलो बतायो हो। उण
नै म्है गढ मे बडती भी देखी ही। पण गढ सू निकळती नै कोई नीं देखी।

एक जणो विचाळै ई बोल्यो 'हरखिया थारी तो वागजाळ अर अचपचोळी
बाता करतै-करतै री सगळी ऊमर बीतगी। अर अजू इ तू उणी ढग री बाता कर
रैयो है। बडती नै देखी अर निकळती नै नीं देखी अबै पदाईस बरसा पछै
ऐडी बाता रा काई मतलब है ?

उठै खड्या लोग हरखियै री खिल्ली उडावणनै लाग्या। इतरै मे सठ
दुलीचन्द री हवेली सू धनजी दरोगो आवतो दीख्यो। वै लोग बोल्या आज धनै नै
पकड र पूछो कै जिकी ठाकर रै घर म बटी है वा किण री है ?' अर वै सगळा
माथा मिल र धनजी नै रोड लियो।

धनजी ठाकर रै जार माथै अक्ड र बाल्यो आप माळा बोक़ा हो का गैला

? जिका ऐडी फागडदी बाता करो हो। आप नै बेरो कोनी कै आ ठाकर री बेटी है ? धनजी पूठा उणा सामीं सवाल फेंक दियो।

एक जणो बोल्यो अरे ठाकर री बेटी तो हुवता ई मरगी ही नी ? पछे ठकराणी रै बेटी भळै कद हुई ही र घनिया ? क्यू मिजळी बाता करै ? साची-साची बता ।

अबै धनजी थूक गिटतो-गिटतो बोल्यो अरे भई ठकराणी आपरै भाई री बेटी नै खोळै ली ही। पछै बा आपरो दूध पा र उण नै पाळी-पोखी अबै बा ठाकर री बेटी हुई का नीं हुई ?

अबै कई जणा कैवणनै लाग्या 'अरे भई ठाकर री खोळायत बटी हुई। ठाकर री खुद री बेटी तो नीं हुई ?

धनजी उठै सू जिया-तिया आपरी ज्यान बचा र गढ माय आयग्यो। अठीनै रावळै मे ठाकर ठकराणी अर गोपाळसिंह रै बिचाळै लाडा अर विनय नै लेय'र बातचीत चाल रैयी ही। ठाकर बोल्यो विजय रै घराणै ठिकाणै अर जात नै लेय'र म्हारै अर इणा रै बिचाळै सात पीढ्या सू ई साख सम्बन्ध नीं हुयो है पछै म्है किया करू ?

ठकराणी बोली टाबर फूठरो है। फौज मे नौकर है। गोपाळसिंह रै जच्योडी है अर छोरी रो भी थोडो-घणो उठै ई मन है। अबै आप री हामळ री दरकार है। पण ठाकर कीं नीं बोल्यो। पूठो ई आपरी बैठक मे आयग्यो।

चवदै

अठीनै नैणाऊ रो मेळो खिड्या पछै राजूसिह जिको आपरी बैन नै ढूढतो-ढूढतो नैणाऊ पूग्यो हो बो उदास मन सू तीन महीना पछै आपरै गाव कानी जाय रैयो हो। उण नै आपरी बैन रो कीं बेरो नीं लाग्यो हो। इण खातर बो भौत उदास हो।

राजू रै गाव होदा म लालजी री दो बेट्या रा ब्याव हा। गावआळा ब्याव री त्यारया माय लाग्योडा हा। पण जीवणजी अर पाना री तो राजू रो बिना कैया घर सू निकळ जावणै सू अर तीन महीना ताई पूठा नीं आवणै रै कारण हालत ही खराब ही। पाना अर जीवणजी रै बिचाळै रोज क्ळै हुवती ही। उणा रो खावणा-पीवणो हराम हुय रैयो हो। थोडी-घणी राजू रै बारै मे गावआळा नै भी चिता ही। पण गावआळा नै जीवणजी सू कीं लणो-देणो कोनी हो।

छोगजी अर लालजी रा घर गाव माय धापतै-फाटतै घरा माय सू हा। पछै लालजी तो गाव रो बीहरो हो। लागा नै ब्याज माथै पइसा बौरतो हो। पण बो किण सू ई बेहक रा पइसा नीं लेवतो हो। उण री बटया रै ब्याव मे पूरो गाव काम-काज माथै लाग्योडो हो। ब्याव आडै अजू ई आठ-दस दिन बाकी हा।

राजू आपरै घरै पूग्यो। पाना घणी राजी हुई। जीवणजी राजू नै दख र राजी तो नीं हुयो पण उण री चिता मिटगी। राजू रै हाथ पर मेळै मे बधायोडी राखी अजू ई बाध्योडी ही। जिण नै जीवणजी देख तो ली पण राजू सू कीं नीं कैयो। जीवणजी राजू रो बो हाथ गडासै सू बाढण री ताक मे हो। जीवणजी सोच्यो कै ओ म्हारै मना करणै रै पछै ई राखी बधा र आयो है ? अबै म्है इण रो हाथ ई बाढ न्हाखूला।

राजू नै दादै री इण मनस्या रो बेरो पडग्यो। बो लालजी री कोटडी माय ब्याव रो काम करावणनै लागग्यो। पण जीवणजी जाण्या कै लालजी री छोरया रै

ब्याव पछै ता घरै आवलो। देखू, कितरा क दिन ओ आपरै हाथ नै बचाव है।

एक दिन गापाळ आपरै बाप न कैया 'जी सा अबै म्हैं थोडै दिना पछै मुम्बई जाऊला। जे आप रा हुकम हुवै ता म्ह अर लाडा एक दिन सिकार माथै जावा। उठै म्हैं बाई री निसाणैबाजी नै भी देखूला अर सिकार भी लेय आवाला। सुण्या हे कै बाई जिण भात ऊठदौड अर घुडदौड मे हुसियार है उणी भात निसाणैबाजी म भी तकडी है।

ठाकर रै जचगी अर उणा नै सिकार माथै जावण री इजाजत दे दी। दूज दिन दोनू बैन-भाई दो घोडा लिया अर आप आपरी बन्दूका ले र सिकार मारै निकळग्या।

जोग-सजोग सू उणा नै दो हिरण दीस्या। दानू बैन-भाई उणा रो लारा करता थका अळघी-अळघी दिसावा कानी फटग्या। फटया ता एडा फटया कै दोना नै इ एक-दूजै रो बेरो नीं लाग्यो। अर दोनुवा रै ई हिरणिया हाथ नीं आया। अर भूख्या-तिस्सा री हालत बिगडी जिकी फालती मे। छेकड गोपाळसिंह तो दो घडी रात गया पछै घरै पूगग्यो पण लाडो रो कीं अतो-पतो ई नीं लाग्यो।

अबै पूरो गढ चिता माय डूबग्यो। गढ मे उथळ-पुथळ हुवणनै लागी। ठकराणी अर हीराबाई री हालत तो देखणजोग ई नीं ही। पूरो गढ रातभर जाग रैया हो। लोग-बाग असवाडै-पसवाडै री रोही म दूढ रैया हा। पण लाडोबाई रो तो कीं बेरो ई नीं लाग रैयो हो।

ठाकर सोच्यो टाबरा नै घणी छूट दवणै सू कदैई-कदैई मा-बाप नै अणकैयी अणूती चिता अर झींझटा रो सामेळो करणो पडै पण काई करू म्हारो राम निकळग्यो हो जिको म्है इण दोनू बैन-भाया नै छूट दे दी ही। दिनूगै भाख फाटता ई सेठ दुलीचन्द आयग्यो। बो आपरै सागै एक पागी (खोजी) नै भी ल्यायो। ठाकर नै लाडकवर नै दूढण सारू उठै सू जीप लेय र टुरण री बात कैयी। जिण बेळा ठाकर दुलीचन्द बो पागी अर गोपाळसिंह जीप ले र जावणनै लाग्या तो ठकराणी अर हीराबाई भी जिद कर र उणा रै सागै जीप म बैठग्या।

ठाकर मन मे तेवडी कै सगळा सू पैली विजयसिंह रै गाव चाला स्यात लाडा उठीनै नीं चली गई हुवै। बै सगळा विजयसिंह रै गाव पूग्या। विजयसिंह आपरै घर माय हो। विजयसिंह उणा नै इण भात देख र हक्को-बक्को रैयग्यो। जद विजयसिंह नै विगत बताई तो विजयसिंह कयो 'लाडकवर अठै तो नीं आई। अर बो चिता जताता थको कैयो 'जे आप रो हुकम हुवै तो म्हैं आप रै सागै चालू अर आप री मदद करू। क्यूकै थाडो-घणो म्हैं भी पागी रो काम जाणू हू। स्यात म्हैं लाडो रै घोडै रै खोजा सू लाडो रो बेरो कर सकूला।

सेठ दुलीचन्द ठाकर नै कैया 'ठाकर सा पागी तो एक सू दा भला। इण सू आपा नै आपणै काम म साराई रैसी।

ठाकर हामळ भरती अर विजयसिंह उणा रै सागै हुयग्या। सेठ दुलीचन्द नै विजयसिंह सू उणी दिन सू लगाव हो जिण दिन वो लाडो सू घुडदौड मे जीत्यो हो।

अबै बै सगळा जीप म। जीप उजाडा में धोरा मे लाडा रै घाड रै खाजा-खाजा चाल रैयी ही। उणा सामीं एक खुलो अर सूना खाड हो जिण मे जीप नै कदैई गोपाळसिंह तो कदैई विजयसिंह चला रैया हा। पण लाडा रो अबै ताई कीं बेरो नीं लाग्यो।

लाडो रै घोडै रै खाजा माथै चालती-चालती जीप जद हादा गाव री काकड म बडी तो हीराबाई रा होस उडणनै लाग्या। हीराबाई ठकराणी नै जीप रुकवाणै खातर कैया। पण जीप आपरी गति माथै चालती रैयी। अबै हीराबाइ ठकराणी नै भळै कैयो 'मा सा अबै आपणी जीप उण गाव मे जाय रैयी है जठै लाडो जलमी ही। अर इण रा दादो-दादी इणी गाव मे है। अठै रा लोग म्हनै पिछाण लेवैला तो आपा सगळा सारू एक नूवो झींझट हुय जावैला।

हीराबाई री आ बात ठाकर रै काना माय पडी ता ठाकर विजयसिंह नै कैयो 'विजयसिंहजी जीप रोको। जीप रुकगी। ठाकर आगै कैया अरे भई ओ गलो बदळ सको हो काईं? विजयसिंह अर सागै आयोडो पागी बोल्यो 'ठाकर सा घोडै रा खोज ओ सामीं दीसै जिकै गाव म गयोडा-सा लागै है। अर लाडो स्यात इण गाव मे ईज हुवैला। पछै सिझ्या भी पड रैयी है। रातवासो आपा सगळा अठै ई लेवाला।

ठाकर हीराबाई री बात रो भेद किणी रै सामीं नीं खोल्या। मन म साच्यो मौका है हीराबाइ री झूठ-साच रो भी बेरो पड ज्यासी अर जे कीं सैंधी हुवैला तो बगत देख र बात नै र लेस्या।

सेठ बोल्यो 'ठाकरा अबै कोई दूजो उपाय नीं है। म्हारो जीव कैवै है कै लाडो आपा नै इण गाव मे मिल ज्यासी। पछै घोडै रा खाज भी तो इणी गाव मे बड रैया है। ठाकर उण री बात मानती अर जीप गाव कानी चाल पडी।

पन्दरै

गिम्या पड़गी ही। गाव रै घरा मे चूल्हा अर हारा सू उठतो घूवा अर गौधूळी गू गुदळायोड़ो सगळो गाव अधारै मे डूबतो जय रैया हो।

गाव मे जीप रै बड़णै सू पैली बन्दूक घालण री आवाज सुणीजी। जीप भठै रुकी। बदूका री गोळया री साय साय करती आवाजा घणी आवणनै लागी। गाव रै माय सू सुणीजतो करळाटा उणा रा कान खड़ा कर रैयो हो। उणा नै लाग्यो जाणै लोग आपरी ज्यान बचावण खातर अठीनै-उठीनै भाग रैया है।

इतरै म गाव माय सू भागतो एक आदमी उणा नै दीख्यो। बै उण नै पूछयो ता बो डरतो-डरतो बतायो कै गाव मे ठाकर लालजी री बेटया रो ब्याव है। पण भीरै डाकू गाव नै घेर राख्यो है। बै लूट-मार कर रैया है। गोपाळसिंह अर विजयसिंह आप-आपरी बन्दूका मे गोळया भरली अर गाव री मदद सारू त्यार हुयग्या। ठाकर भी उणा नै इजाजत देय दी।

सेठ सोच्यो जद मौत रै मूढै आय ई गया हा तो अबै गाव री मदद करणो मिनख रो धरम है। ठकराणी आपरी बेटी री चिंता कर रैयी ही। पण हीराबाई अबै गाव म बेगी बड़णै री उतावळ कर रैयी ही। हीराबाई गाव री एक-एक गळी जाणै ही। बा जीप नै सीधी ठाकर छोगजी री कोटडी आगै लेजाय र रुकवाई।

उठै उणा नै बतायो कै ठाकर छोगजी लालजी जीवणजी अर इणा रै घरा री लुगाया पताया नै अर गाव रै बीजै दीसतै लोगा नै डाकू रौंड राख्या है। अर उणा नै मार रैया है। पीट रैया है। एक छोरी मरदानै भेस म घोड़ै पर चढ्योडी एकली ई उण डाकुवा रा मुकाबला कर रैयी है।

बै देख रैया हा कै गाव मे भागमभाग बुरी तरिया सू मच्योडी है।

अबै गापाळ अर विजय रो खून उबळणनै लाग्यो। बै दानू बदूका लेय र उण ठौड कानी जोर-जार सू हेला मारता भाग रैया हा कै 'लाडो म्हे आयग्या हा

लाडो म्हे आयग्या हा तू हिम्मत मत हारी तू हिम्मत मत हारी । व दानू खाया-प्याथा भागता उण ठौड पूग्या जठ लाडा एकली डाकुवा सू लड रैयी ही।

जद उणा री जीप गाव म बडी ही तो गावआळा भी उणा री जीप नै डाकुवा री जीप समझी। अर वै डरग्या हा। पण उणा रै सागै चोखै गाभा माय लुगाया नै दखी। फर विजय अर गापाळ नै लाडा लाडो हेला मारता अर जठै मुठभेड हुय रैयी ही उठीनै भागता देख्या ता गाव रा घणकरा लाग उणा रै लारै डाकुवा कानी भागणनै लागग्या।

अनै लाडो री हिम्मत बधगी। पण निण बेठा डाकू, राजूसिह नै लाडो कानी भागता दख्यो। अर उण रै लारै जीवणजी नै भागता देख्यो तो डाकू आपरी गोळी राजूसिह पर दागी। इण वेळा राजूसिह नै बचावण खातर लाडो बीच मे आयी ता बा गोळी लाडो रै जीवणै पग री पींडळी मे आय र लागी। जीवणजी अर राजू तो दानू ई बचग्या। पण लाडो घायल हुय र पडगी।

अठीनै गापाळसिह अर विजयसिह डाकुवा रै सामीं मोरचा बाध लियो अर जम र गोळ्या चाळणनै लागी। डाकू घबरायग्या। कीं उणा माय सू घायल हुयग्या। कई जणा बचग्या। पछै डाकू उठै सू आपरी ज्यान बचा र रात रै अधेरै माय भाग छूट्या। पण गोपाळ अर विज्य अजू ई मोरचा सभाळ्योडा हा। गाव रा लोग जोर-जार सू हाको कर रैया हा 'मारो मारो डाकुवा नै मारो ।

उठीनै घायल हुयोडी लाडा नै जीवणजी आपरी छाती सू लगा-लगा र लाड करतो कैय रैयो हो कै बेटी तू बेटी नीं कोई देवी है। तू म्हारा अर म्हारै राजू रा प्राण बचा र म्हारै माथै जिको उपकार कर्‍यो है म्हैं उण रै बदळै तनै काईं देवू ? थारै मात-पिता नै धिन। धिन है बो घराणो जठै थारै जैडी बेटी जलम लियो। बेटी धिन है उण रात नै जिकी रात थारै जैडी सूरमा अर लूठै हासलै री बेटी नै जलम दियो अर धिन है उण मा नै जिकी तनै जलम दियो।

लाडो जीवणजी रै लाड अर बखाण री परवा कर्‍या बिना ई उण घायल अवस्था मे बा लालजी छोगजी अर बीजै लोगा नै डाकू बाध र छोडग्या हा उणा नै खोलण म लागगी। जीवणजी ऐडी सगळी बाता देख रैयो हो। बो आपरी लुगाई पारा नै जिकी बुरै हाल म उण रै सागै ई ही उण नै कैय रैयो हो देख देवै री मा देख बेटी हुवै तो ऐडी जिकी एकली पूरै गाव री ज्यान बचाली अर घायल हुयोडी सेरणी दायीं उण री रीस अजू ई उण रै डील माय नावड नीं रैयी है। देख आ किण फुरती सू सगळै लोगा नै बचावण खातर लाग रैयी है।

जीवणजी कैयो देवै री मा आज म्हैं अर तू ता मरता ई । पण जुलमी

डाकू आपण राजू न भी जीवता नीं छाडता पछै आपणो ता नावगा बस अर घराणा ई मिट ज्यावता। वाह रे भगवान वाह दुनिया म बटी भी अडी हुया कर है ! आ ता म्हन ठा ई कोनी हा।

गापाळ अर विजय लाडो अर उणा लागा कनै पूगग्या अर बै लाडो नैं घायल हुयोडी देखी ता उणा रा होस उडग्या।

विजय घायल हुयाडी लाडा नैं आपरै हाथा माय लियाडा उण रै साग गापाळ बन्दूका नै उठायाडा अर गाव र घणकर लागा माय छोगजी लालजी अर बीजा लोग लार-लारै चाल रेया हा। गलै म जीवणजी री कोटडी ई नैडे पडै ही। छागजी कैया "इण बाई नै जीवणजी री काटडी म बिठा र पैली पाटा-पाळी करदयो पछै म्हारी कोटडी चालस्या।

अबै जीवणजी अर पाना लागा नै कैवणनै लाग रैया हा 'धिन-घडी धिन-भाग म्हारा जिको एडी हीरै जडी बटी रा पग म्हारै घर माय होय रया है। अबै म्हे इण नै कठै क राखा ?

राजू चितवगा-सो लाडा गोपाळ अर विजय नै देख रैयो हो कै ऐ लोग हुवणा ता बै लाग ई चाईजै जिका नै नैणाऊ गाव मे म्है देख र आयो हो। पण आ जाण-चीण काढण री घडी नीं है। अब तो सगळा सू पैली इण बाई री ज्यान बचै एडो उपाय हुवै तो आछो है। पछै ऐ सगळी बाता पूछूलो।

उठीनै छोगजी री कोटडी म जद ठाकर-ठकराणी कनै लाडो रै गोळी लागणै अर घायल हुवणै री बात पूगी तो उणा री चिता रो पार नीं हो।

लाडा री पींडळी म बन्दूक री गोळी नीं ही। कोरो घाव हो। जिण माथै गाव रै हिसाब सू पाटा-पोळी हुय रैयी ही अर लाडो होस म आयगी ही। बा आपरी मा सा हीरा बाई जी सा अर काकोसा दुलीचन्दजी सू मिलण खातर उतावळी हुय रैई ही।

इण भात दिन ऊगग्यो। ठाकर ठकराणी हीराबाई सेठ दुलीचन्द सगळा लाडो कनै जीवणजी री कोटडी पूग्या। आगै आधै सू घणो गाव रातभर जागै हो। छागजी अर लालजी भी उठै ई हा।

अब हीराबाई सगळा सू पैली छागजी अर लालजी नै मुजरो करयो। पछै जीवणजी अर पाना नैं। ए सगळा लोग हीराबाइ रै भेस मे हमीदा नै झट पिछाणली। अर आ बात जद गाव म पूगी ता एक गाव रा दा गाव उठै भेळा हुयग्या। जीवणजी री कोटडी काठी भरीजगी।

हमीदा हीराबाई रै रूप मे समूच गाव र सामीं सीनो ताण्योडी सरणी दार्यी ऊभी ही। छोगजी अचरज सू पूछ्या 'हमीदा तू ?

'हा ! म्है हमीदा। आप री दादी हमीदा। आप रै गाव री दादी हमीदा ठाकर सा। हमीदा री आवाज मे अपणापण हो। सच्चाई ही। साफ-साफ जोम हो।

अबकै जीवणजी भी उणी ढग सू पूछ्यो 'तू हमीदा है ?' जीवणजी री फाटयोडी आख्या फाटयोडी रैयगी।

अबै हमीदा बोलणनै लागी 'हा जीवणजी बाबो सा म्हैं हमीदा हू। आ आप री पोती आप रै देवै अर पारा री बेटी।' लाडो कानी इसारो कर र कैयो। पछै बा बतावणनै लागी 'ऐ नैणाऊ ठिकाणे रा ठाकर सुल्तानसिंह। ऐ इणा रा ठाकरायत ठकराणी सा। ऐ लाग म्हनै सरण दी। इण नै आपरी बेटी बणा र पाळी-पोसी। पछै हमीदा बोली 'ऐ ठाकर सा रा बेटा गोपाळसिंह। इणा रै सागै इणा रै पडोसी गाव रै ठाकरा रा कवर विजयसिंह। अर ऐ नैणाऊ गाव रा सेठ दुलीचन्दजी।

सगळो गाव-राव हमीदा कानी अर लाडो कानी अचरज सू देख रैया हा। हमीदा री बाता सगळा चुपचाप गौर सू सुण रैया हा। नेजू भीड मे लडचा सोच रैया हो कै अबकै भाभी बाजी मारली।

हमीदा जीवणजी रै नैड़ै जाय र सगळै गाव नै सुणावती थकी कैयो 'जीवणजी बाबो सा आ बा ई बेटी है जिकी रै प्राणां रा आप प्यासा हा। आ बा ई बेटी है जिकी री बैना अर भुवावा नै आप आपरै घराणै री आण री बळी चढाई ही। आ बा ई बेटी है जिकी रा मा अर बाप आप रै घराणै री पापी रीत रै कारण आधी ऊमर म गया परा। आ मा करणी अर लक्ष्मी रै रूप मे बा ई बेटी है जिकी आज दुरगा काळी अर चण्डी रै रूप में डाकुवा माथै टूट पडी अर पूरै गाव री स्यान ई नीं ज्यान बचाइ है।

'जय-जयकार बोलो इणा ठाकर अर ठकराणी री जिका मिनख धरम नै पल्लै राख र एक अणजाण मिनख रै अस नै आपरी बेटी बणाई। उण नै पाळ-पोस र बडी करी। अर उण रा वितरा ई रूप सवारचा कैवता-कैवता हमीदा परसेवै सू बुरी तरिया भीजगी ही। उण रै डील माय एक धूजणी-सी हुय रैई ही। पछै बा पाना कानी मुडी अर धीरज अर प्यार सू कैयो 'मा सा जे इण रै सागै हुयोड़ो भाई जीवै है तो आप देखो कै उण रै जीवणै पग रै पजै माथै अर इण बाई रै जीवणै पग रै पजै माथै एक जैडो धोळै लसणियै रो दाग है।'

पछै बा सगळा कानी मुड र बोली 'म्है लाडो री मा सू वादो करयो जिण री लाज ऊपरलो राखी है। अबै म्हैं सुदा रै घरै लाडो री मा पारो नै म्हारो मूढो दिखावणजोग हूँ। अर उण नै उठै जाय र कैवूली कै थारी बेटी जीवै है थारी बेटी नै मालिक बचाली है । हमीदा बोलती-बोलती एकदम बद हुयगी। अर उण रो डील बरफ-सो ठडो हुयग्यो।

हमीदा री इण भात मौत न देख र लाग हक्का-बक्का रैयग्या। कइ जणा ता भाठै दर्यी हुयग्या अर कई जणा मे सुन बापरगी।

अठीनै लाडा रो इण भात मिलणो अर उठीनै हमीदा रो इण भात मरणा सगळै गाव नै लाग रैयो हा जाणै बादळा री घणघोर घटा रो मडाण हुया पण सूकी धरती तिस्सी री तिरसी रैयगी ।

लाडो ठाकर अर ठकराणी री छाती माय आपरो सिर देय र कूक रैयी ही अर यय रैयी ही- 'जी सा आ काईं हुय रैया है ? नीं जी सा नीं मा सा म्हैं थारी वटी हूँ। म्ह थारी वटी हूँ। हीराबाई जाता-जाता म्हारै साथै ओ काईं धाग्गा करग्या ?

ठाकर-ठकराणी लाडो नै पुचकार रैया हा अर कैय रैया हा नीं बेटा तू म्हारी बेटी है । जीवणजी अर पाना थारा दादो सा अर दादी सा है।

पण बा वैय रैयी ही नीं जी सा- नीं जी सा ।

राजूसिह बाल्या 'बाई सा बाई लाडकवर आप म्हारा वैन हो। आप म्हारै राखी बाधी ही नी। सुपनै म भी अर उण दिन ऊठा री दौड मे म्है आप सू राखी बधावण खातर जाण-बूझ र हारयो हो। पछै ओ देग्यो म्हारै जीवणै पग माथै अर आप रे जीवणै पग माथै एक-सो दाग है । सगळा लाग देख्यो बात बिलकुल साची है।

अठीनै गोपाळसिह सोच्यो एक दिन मुम्बई मे म्हनै मामोसा थोडो-सा बतायो तो हा पण म्हैं उणा री बात नै मसकरी समझ र कदैई म्हारी मा सा का जी सा नै नीं पूछयो।

सेठ दुलीचन्द सोच रैयो हो कै ठाकर-ठकराणी इतरा गैरा अर मानसैआळा मिनख है ओ म्हैं नीं जाणतो हा। बो ठाकर-ठकराणी नै मन ई मन निवण कर रैयो हो।

विजयसिह चुपचाप खड्या सगळी बाता देख रैयो हो अर सुण रैयो हो। उण रै मन माय हमीदा रै त्याग अर मिनख धरम री पाळणा करणै रै धीरज नै लेय र अथाग श्रद्धा ही।

छोगजी लालजी अर गाव रा लोग बात री सच्चाई नै ताडग्या। सगळा री आख्या माय हमीदा खातर आसू हा। छोगजी लोगा नै कैयो 'हमीदा लुगाई रै रूप मे एक देवी ही। उण रै त्याग अर सकळप री दुनिया माय चरचा चालसी अर अमर रैसी। अबै ऐडी त्याग री देवी री थिर जुगती करणो गाव रो धरम है। म्हारी ऐडी

राय है व इण री कबर पारो रै समसाण रै नेंडी बणाई जावै । सगळै लोगा रै छागजी री बात जचगी। हमीदा नै पारो रै नडै सदा खातर कबर मे सुवाणदी।

उण रै बाद ठाकरा री आपस मे बातचीत हुई। सगळी जाण-चीण मे होदा अर नैणाऊ रै ठिकाणा रो आपस म भाईपा हो अर एक ई गोत रा राजपूत हा। विजयसिह उण घराणै सू हा जठै जीवणजी री भूवा दादी दियोडी ही। जिण रै दुख रै कारण सू जीवणजी रै घराण म बेटघा नै हुवता ई मारण री रीत पडगी ही। पण अबै जमानो अर बगत बदळघोडो हो। गोपाळसिह अर राजूसिह बोल्या अबै पीढ्या री इण दुसमणी अर म्हारै घराणै री इण खाडीली रीत न म्हे म्हारी बाई लाडो नै विजयसिह नै देय र तोडाला। जीवणजी री कोटडी मे लाडो नै विजयसिह नै देवण री हामळ भरीजगी।

पण अजू ई एक फैसलो और बाकी हा कै नैणाऊ रै गढ अर होदा रै जीवणजी री कोटडी रा आगणा लारली चार-पाच पीढ्या सू कवारा है। अबै बाई लाडो री चवरी किण रै आगणै मडै ? सगळा बैठ र फैसलो कर्‌यो के बाई लाडो रो ब्याव तो ठाकर सुल्तानसिह रै आगणै हुवैला अर लालजी री दो बेटघा माय सू एक री चवरी ठाकर जीवणजी रै आगणै मडैला।

अबै ठाकर आपरै गाव नैणाऊ पूग्यो। लोग-बाग बाई लाडा नै लेय र आवणै री खुसी मे गढ माय भेळा हुवणनै लाग्या। सगळा नै बात रो बरो पड्यो। अबै हरसियो बोल्यो "रे म्हैं तो गाव नै कैयो तो म्हारी बात कोई नीं मानी। अर रामूडो नाई बोल्यो 'म्हारो तो पेट रो आफरो म्हारै माय रैयग्यो। धनजी हमीदा रो सुण र चतचूक होयग्यो। कई दिना ताई रोटी नीं खाई। लाडो रै ब्याव रो सुण र बनेसिह मुम्बई सू आयग्यो।

जद हमीदा रै त्याग अर पारो रै धीरज अर सबर री बाता असवाडै-पसवाडै रै गावा ताई पूगी तो लोग-बाग उठै थोडै दिना माय एकै कानी पारो रा मिदर अर एकै कानी हमीदा री कबर पक्की बणा र उणा री पूजा अर मानता करणनै लाग्या।

जीवणजी रोज उठै आवतो अर अरडावतो कै 'म्हैं पापी हूँ म्हैं हत्यारो हूँ म्हैं जुलमी हूँ म्हनै माफ करदै पारो म्हनै माफ कर दै हमीदा ।

वो पारा रै मिदर रै पगोथिया सू अर हमीदा री कबर सू रोज माथो फोडतो-फोडतो नीं जाणै कद इण ससार सू चल बस्यो ?

हमीदा री ण्ण भात मात नै देख र लोग हक्का-बक्का रयग्या। कई जणा तो भाठै दर्यी हुयग्या अर कई जणा म सु न बापरगी।

अठीनै लाडा रो इण भात मिलणो अर उठीनै हमीदा रो इण भात मरणो सगळै गाव नै लाग रैयो हो जाणै बादळा री घणघोर घटा रो मडाण हुयो पण सूकी धरती तिस्सी री तिस्सी रैयगी ।

लाडा ठाकर अर ठकराणी री छाती माय आपरा सिर देय र कूक रैयी ही अर कय रैयी ही- 'जी सा आ काई हुय रैया है ? नीं जी सा नीं मा सा म्हैं थारी बेटी हूँ। म्हैं थारी बेटी हूँ। हीराबाई जाता-जाता म्हारै सागै आ काई धाखा करग्या ?

ठाकर-ठकराणी लाडो नै पुचकार रैया हा अर कैय रैया हा 'नीं बेटा तू म्हारी बेटी है । जीवणजी अर पाना थारा दादो सा अर दादी सा है।

पण बा कैय रैयी ही नीं जी सा- नीं जी सा ।

रा ूसिह बोल्यो 'बाई सा बाई लाडक्वर आप म्हारा बैन हो। आप म्हारै राखी बाधी ही नीं। सुपनै मे भी अर उण दिन ऊठा री दौड़ मे म्हैं आप सू राखी बधावण खातर जाण-बूझ र हारयो हो। पछै ओ देखो म्हारै जीवणै पग माथै अर आप रै जीवणे पग माथै एक-सो दाग है ।' सगळा लोग देख्यो बात बिलकुल साची है।

अठीनै गोपाळसिह साच्यो एक दिन मुम्बई मे म्हनै मामोसा थोडो-सो बतायो तो हा पण म्हैं उणा री बात नै मसकरी समझ र कदैई म्हारी मा सा का जी सा नै नीं पूछ्यो।

सेठ दुलीचन्द सोच रैयो हो कै ठाकर-ठकराणी इतरा गैरा अर मानखैआळा मिनख है ओ म्हैं नीं जाणतो हो। बा ठाकर-ठकराणी नै मन ई मन निवण कर रैयो हो।

विजयसिह चुपचाप खड्यो सगळी बाता देख रैयो हो अर सुण रैयो हो। उण रै मन माय हमीदा रै त्याग अर मिनख धरम री पाळणा करणै रै धीरज नै लेय र अथाग श्रद्धा ही।

छोगजी लालजी अर गाव रा लोग बात री सच्चाई नै ताड़ग्या। सगळा री आख्या माय हमीदा खातर आसू हा। छोगजी लोगा नै कैयो 'हमीदा लुगाई रै रूप मे एक देवी ही। उण रै त्याग अर सकळप री दुनिया माय चरचा चालसी अर अमर रैसी। अबै ऐडी त्याग री देवी री थिर जुगती करणो गाव रो धरम है। म्हारी ऐडी

राय है कै इण री कबर पारा र समसाण रै नैडी बणाइ जावे । सगळै लोगा रै छागनी री बात जचगी। हमीदा नै पारो रै नडै सदा स्यातर कबर म सुवाणदी।

उण रै वाद ठाकरा री आपस मे बातचीत हुई। सगळी जाण-चीण म होदा अर नैणाऊ रै ठिकाणा रो आपस मे भाईपा हो अर एक ई गोत रा राजपूत हा। विजयसिह उण घराणै सू हा जठै जीवणजी री भूवा दादी दियोडी ही। जिण रै दुख रै कारण सू जीवणजी रै घराण मे बेट्या नै हुवता ई मारण री रीत पडगी ही। पण अवै जमाना अर वगत वदळग्याडो हो। गोपाळसिह अर राजूसिह तोल्या अवै पीत्या री इण दुसमणी अर म्हारै घराणै री इण खाडीली रीत न म्हे म्हारी बाई लाडो नै विजयसिह नै देय र ताडाला। जीवणजी री कोटडी म लाडो नै विजयसिह नै देवण री हामळ भरीजगी।

पण अजू ई एक फैसला और बाकी हा कै नैणाउ रै गढ अर होदा रै जीवणजी री कोटडी रा आगणा लारली चार-पाच पीढ्या सू क्वारा है। अवै बाई लाडा री चवरी किण रै आगणै मडै ? सगळा वैठ र फैसलो कस्यो कै बाई लाडो रो ब्याव ता ठाकर सुल्तानसिह रै आगणै हुवैला अर लालजी री दो बेट्या माय सू एक री चवरी ठाकर जीवणजी रै आगणै मडैला।

अवै ठाकर आपरै गाव नैणाऊ पूग्यो। लोग-बाग बाई लाडो नै लेय र आवणै री खुसी मे गढ माय भेळा हुवणनै लाग्या। सगळा नै बात रो बेरो पड्यो। अबै हरखियो बोल्यो रै म्हैं तो गाव नै कैयो तो म्हारी वात कोई नीं मानी। अर रामूडा नाई बोल्यो म्हारा तो पेट रो आफरो म्हारै माय रैयग्यो। धनजी हमीदा रा सुण र चेताचूक होयग्यो। कई दिना ताई रोटी नीं खाई। लाडो रै ब्याव रो सुण र बनेसिह मुम्बई सू आयग्यो।

जद हमीदा रै त्याग अर पारो रै धीरज अर सबर री बाता असवाडै-पसवाडै रै गवा ताई पूगी तो लोग-वाग उठै थोडै दिना माय एकै कानी पारा रो मिदर अर एकै कानी हमीदा री कबर पक्की बणा र उणा री पूजा अर मानता करणनै लाग्या।

जीवणजी रोज उठै आवतो अर अरडावतो कै म्हैं पापी हूँ म्हैं हत्यारा हूँ म्हैं जुलमी हूँ म्हनै माफ करदै पारो म्हनै माफ कर दै हमीदा ।

बो पारो रै मिदर रै पगोथिया सू अर हमीदा री कबर सू रात माथो पाडता-पोडतो नीं जाणै कद इण ससार सू चल बस्यो ?